



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



निर्झर



अंक-45

सितम्बर -2020

महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)
नई दिल्ली -110002.

निर्झर/सितम्बर 2020/1



श्री सुनील दाढे, महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास) द्वारा दीप प्रज्ज्वलन कर हिन्दी पखवाड़ा-2020 का शुभारंभ करते हुए।



श्री अतुल प्रकाश, निदेशक प्रशासन/राजभाषा द्वारा हिन्दी पखवाड़ा-2020 में दीप प्रज्ज्वलन करते हुए।

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)
की वार्षिक हिन्दी पत्रिका

अंक 45

सितम्बर/2020

संरक्षक

श्री सुनील दाढे
महानिदेशक

सलाहकार समिति

श्री अतुल प्रकाश
निदेशक (प्रशासन एवं राजभाषा)

श्री मुकेश कुमार यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

सुश्री पद्मा सुरेश
हिन्दी अधिकारी

सम्पादक

श्री मुकेश कुमार यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

निर्झर

वार्षिक

अंक-45 सितम्बर/2020

प्रकाशक	:	महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास), नई दिल्ली - 110 002
स्वत्वाधिकार	:	महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास), नई दिल्ली - 110 002
पाठ्यक्रम प्रारूपण	:	पद्मा सुरेश, हिन्दी अधिकारी
पाठ्यक्रम आवरण एवं सज्जा	:	हरिबंश लाल, व.ले.प.
पाठ्यक्रम टंकण	:	कामिनी सिंह, आ.प्र.प्र.

आवरण पृष्ठ के बारे में

नोहकलिकाइ जलप्रपात:-

नोहकलिकाइ पूर्वोत्तर भारत के मेघालय प्रदेश में पूर्वी खासी हिल्स में चेरापूँजी के समीप स्थित एक जलप्रपात है। इस जल प्रपात की ऊँचाई 1100 फुट है। यह प्रपात भारत के सबसे ऊँचे झरनों में से एक है। चेरापूँजी भारी वर्षा के लिये प्रसिद्ध रहा है, इस प्रपात के जल का स्रोत यही वर्षा है। सर्दी के मौसम में दिसम्बर से फरवरी के मध्य वर्षा नहीं के बराबर होने से सूखे समय में यह प्रपात लगभग सूख जाता है। इस झरने के ठीक नीचे नीले-हरे रंग के जल वाले तैरने के स्थान बन गये हैं।

नोट: इस गृह पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के हैं तथा कार्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	महानिदेशक का संदेश		7
2.	संपादक की ओर से		8
3.	जल ही जीवन है, जल से ही जीवन है	श्री अतुल प्रकाश	9
4.	दृढ़विश्वासी के लिए उम्र मात्र एक संख्या है	मा. हिमेश यादव	13
5.	सकारात्मक व्यक्तित्व	श्री गुरप्रीत सिंह	17
6.	हीथ लेजर	मा. हिमेश यादव	19
7.	दहेज -प्रथा या लालच	सुश्री कामिनी सिंह	21
8.	कोरोना	सुश्री कामिनी सिंह	23
9.	कोरोना का चिर निदान: योग-यज्ञ-ज्ञान	सुश्री कामिनी सिंह	25
10.	बदल गया चिराग	सुश्री सरिता	27
11.	गुस्सा कम करने के उपाय	श्री रामब्रेश यादव	31
12.	खर्चा कैसे कम करें?	श्री रामब्रेश यादव	34
13.	छतरी में छेद	श्री नितिन कुमार	36
14.	माँ होना क्या इतना आसान है?	सुश्री पूनम यादव	40
15.	मैं भी बदल गई..... माँ	सुश्री पूनम यादव	42
16.	श्री कृष्ण जन्म (वसुदेव-यमुना संवाद)	श्री अंकित कुमार	44
17.	अनुभव	मा. नमन अरोरा	46
18.	सलाम है तुम्हें मेरा	मा. प्रथम अरोरा	47
19.	वैश्विक महामारी कोविड-19 का मानव जीवन पर प्रभाव	सुश्री संजना सोनी	48
20.	मनुष्य जीवन में गुरु का महत्व	श्री संतोष कुमार साह	50

21.	कमाल के हैं जीजा जी	श्री नरेन्द्र सिंह चौहान	52
22.	जानी	श्री एन.के. शर्मा	59
23.	भावनाओं से जुड़ा है- स्वास्थ्य	सुश्री ज्योती माथुर	64
24.	निरख-परख	सुश्री कृष्णा सोनी	67
25.	मन: स्थिति-कोविड-19 के दौरान	सुश्री किरन मोंगा	69
26.	वर्तमान मन: स्थिति	सुश्री किरन मोंगा	71
27.	लेखापरीक्षा -सेवा अपनों की	श्री कुमार दत्त शर्मा	73
28.	हम आजाद क्यों हुए?	श्री हरेन्द्र कुमार	75
29.	गीतों का राजकुमार-शैलेन्द्र	सुश्री सुमन शर्मा	80
30.	जाओ तुम्हें माफ किया	श्री कुमार दत्त शर्मा	84
31.	कोरोना काल और इंसान की हस्ती	सुश्री रश्मि गुप्ता	88
32.	मेरे देश का चुनाव	सुश्री रश्मि गुप्ता	89
33.	देश बुलाता है	श्री राहुल	90
34.	भारतीय संस्कृति लुप्त होती जा रही है	मा. रोहित	92
35.	अनुशासन	सुश्री अनमोल मिश्रा	94
36.	इंटरनेट "श्राप" या "वरदान"	श्री रोहित कुमार	96
37.	पुलवामा	श्री अमित कुमार प्रसाद	107
38.	कोविड- आशा की ओर	श्री अमित कुमार प्रसाद	110
39.	अक्षय ऊर्जा : सम्भावनाएँ और नीतियाँ	श्री रविशंकर प्रभाकर	111
40.	सोन् की व्यथा	श्री लोकेश कुमार	115
41.	लेखक परिचय		117



संदेश

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास) नई दिल्ली की वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'निर्झर' के 45 वें अंक के प्रकाशन से मैं प्रसन्न हूँ। कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को रचनाकारों के रूप में हिन्दी भाषा में अपनी साहित्यिक एवं सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का मंच निर्झर पत्रिका देती है। इससे राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में भी बल मिलता है।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ। संपादक सदस्यों और रचनाकारों को उनके प्रशंसनीय योगदान के लिए बधाई देते हुए आशा करता हूँ कि भविष्य में 'निर्झर' के प्रकाशन में सभी अपना योगदान देते रहेंगे। उम्मीद है कि कोविड महामारी से प्रभावित कष्टप्रद समय में यह पत्रिका एवं इसका अंतरंग ऊर्जादायी हो। मैं पाठकों से भी अनुरोध करता हूँ कि वे अपने सुझाव हमें अवश्य दें ताकि इस पत्रिका को और भी आकर्षक, सूचनापरक और समृद्ध बनाया जा सके।

सुनील दाढे

महानिदेशक लेखापरीक्षा
(गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)

संपादक की ओर से



कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका निर्झर के इस 45वें अंक के माध्यम से कार्यालय की रचनाधर्मिता को निर्विवाद रूप से मंत्रमुग्ध कर देने वाली इस पत्रिका को एक बार पुनः नये रंग-रूप के साथ आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है।

निर्झर पत्रिका जहाँ कार्यालय में राजभाषा हिंदी के अनुकूल वातावरण का निर्माण करती है वहीं प्रत्येक व्यक्ति के भीतर छिपे रचनाकार को एक मंच भी प्रदान करती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए यह पत्रिका कृतसंकल्प है।

कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों एवं अधिकारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति निष्ठा एवं जागरूकता बढ़ाने में विभागीय पत्रिकाओं का महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। “निर्झर” पत्रिका इस दिशा में सहायक सिद्ध होगी। कार्यालय में हिन्दी प्रचार-प्रसार से संबंधित सभी क्षेत्रों में चहुमुखी प्रगति हुई है।

अंत में मैं पत्रिका के संरक्षक महानिदेशक महोदय एवं समस्त रचनाकारों का आभार प्रकट करता हूँ। पाठकों से इस आशा के साथ अनुरोध करता हूँ कि वे अपने विचारों से हमारा मार्गदर्शन करते रहें ताकि ये पत्रिका भविष्य में भी अपने पाठकों की कसौटी पर खरी उतर सके। अपने अमूल्य विचारों/टीका-टिप्पणियों से हमें अवश्य अवगत कराएं, जिससे पत्रिका को और समृद्ध बनाया जा सके।

मुकेश कुमार यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(राजभाषा)

जल ही जीवन है, जल से ही जीवन है



श्री अतुल प्रकाश

जल की जरूरत के बारे में सभी जानते हैं, पानी सभी जीव जंतुओं के जीवित रहने के लिए आवश्यक है, पानी के बिना इस पृथ्वी पर किसी भी प्राणी का जी पाना संभव नहीं है। वैसे कहें तो हमारी पृथ्वी का 70% भाग ही पानी है परंतु पीने लायक स्वच्छ पानी केवल 2% भाग में ही है। पीने का पानी हमें अलग-अलग जगहों से प्राप्त होता है, जैसे नदियां, तालाब, वर्षा का पानी, भूमिगत पानी परंतु इन सभी जल स्रोतों में दिन-ब-दिन कमी आती जा रही है जो कि अपने आप में चिंता की बात है। पानी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है ।

यहां तक कि मानव शरीर का 70% भाग भी जल से ही बना है अर्थात जल के बिना जीवन की कल्पना करना भी संभव नहीं है, क्योंकि मनुष्य भोजन के बिना तो काफी अवधि तक रह सकता है परंतु बिना पानी के मानव शरीर जीवित नहीं रह सकता है और अगर पूरा एक सप्ताह पानी ना मिले तो मृत्यु भी संभव है।

हम यह बात बहुत अच्छे से जानते हैं कि हमारी पृथ्वी पर जितने भी संसाधन हैं, वे सभी सीमित मात्रा में ही हैं तो इस बात से हमें यह समझना चाहिए कि हमें इन संसाधनों को बहुत ध्यानपूर्वक और कुशलता के साथ उपयोग करना है वरना इन संसाधनों की कमी के कारण हाहाकार मचने में देर नहीं लगेगी और खासतौर पर पानी को तो बहुत ध्यान से उपयोग करना चाहिए।

बिना पानी के तो हम अपना एकदिन भी नहीं गुजार सकते हैं। हमारे रोजमर्रा के अनेक काम में पानी इस्तेमाल होता है, जैसे - पीने के लिए, खाना बनाने के लिए, कपड़े धोने के लिए, खेतों की सिंचाई के लिए, नहाने के लिए आदि। पानी तो हमारे जीवन के लिए अत्यंत लाभकारी है, यह वह अमृत है जिसके बिना हम अपना जीवन नहीं काट सकते हैं परंतु हम इसका मूल्य समझते ही नहीं हैं और इसका दुरुपयोग करते हैं।

इसी प्रकार सब कुछ चलता रहा तो आगे आने वाले वर्षों में पानी की भारी समस्या खड़ी हो सकती है हमारी आगे की पीढ़ियों को जल नहीं मिलेगा और हम यह अंदाजा भी नहीं लगा सकते हैं कि परिस्थितियां कितनी खतरनाक हो सकती हैं।

मनुष्य के कर्मों द्वारा प्रदूषण पैदा होता है और उसी प्रदूषण द्वारा पानी के स्रोत भी प्रदूषित होते हैं, जितनी भी फैक्ट्रियां हैं, उन सब से निकला रसायन मिश्रित पानी, गाद एवं कचरा हमारी नदियों और तालाबों में बहा दिया जाता है जिसकी वजह से आज हमारे लगभग सभी जल के स्रोत मिलावटी हो चुके हैं और इसी कारण से बीमारियां भी फैलती हैं।

पानी मनुष्य के लिए तो अत्यंत महत्वपूर्ण है ही, साथ ही साथ हमारी पृथ्वी की सेहत के लिए भी बहुत जरूरी है। हमारी पृथ्वी को हरा-भरा और स्वस्थ रखना पानी की ही जिम्मेदारी है, सोचिए अगर पानी नहीं होगा तो पृथ्वी का विनाश होने में देर नहीं लगेगी और जीवन भी लुप्त हो जाएगा, खेत खलिहान सूख जाएंगे, जंगलों में जीवन खत्म हो जाएगा, बारिश होना बंद हो जाएगी और आगे तो आप कल्पना कर ही सकते हैं कि क्या होगा; अर्थात् हमें आज की परिस्थितियां देखकर सचेत हो जाना चाहिए।

यहां तक कहा जाता है कि तीसरा विश्वयुद्ध यदि होता है तो पानी की किल्लत भी एक मुख्य वजह बन सकती है। अब आप ही सोचिए कि पानी की कमी के कारण यह नौबत भी आ सकती है इसलिए हमें इस मूल्यवान संसाधन का ध्यान पूर्वक उपयोग करना चाहिए। हमें अनावश्यक रूप से जल का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। बारिश के पानी को संग्रहित करना होगा, जब भी जितनी भी मात्रा में बारिश हो उसका पानी इकट्ठा करने और फिर उसी पानी से अपने रोजमर्रा के काम करें। एक ही पानी को बार-बार अलग प्रकार से इस्तेमाल करने से भी मुश्किलें हल हो सकती हैं, जैसे जिस पानी से बर्तन धोए हैं वही पानी बाद में घर के बगीचे के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। भारत में जमीनी स्तर पर विभिन्न तरीके अपना कर, पूरे भारत में प्रचलन में लाना होगा, इससे काफी मुश्किलें हल हो सकती हैं।

हमें अपनी अनावश्यक आदतों को सीमित करना होगा जिसमें हम पानी की बर्बादी करते हैं। ज्यादा से ज्यादा पेड़ पौधे लगाने होंगे क्योंकि जितनी ज्यादा हरियाली पृथ्वी पर रहेगी उतनी ही बारिश होगी तथा भूमिगत जल का भंडारण कभी कम नहीं होगा।

गौर करें कि कुछ समय के लिये सम्पूर्ण भारत में कोरोना के कारण बंदी, पर्यावरण के लिये अति सुखदायक रही। नदियाँ इत्यादि के जल निर्मल हो गये।

यही सब कुछ विशेष बिंदु है जिनका हमें पालन करना होगा और इन्हें अपने जीवन में अपनाना होगा वरना बहुत परेशानियां खड़ी हो सकती हैं। ऐसा ना हो कि आगे चलकर भविष्य में हमें पानी भी बहुमूल्य भाव में खरीदना पड़े और हम पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस जाएं।

ऐसी त्रासदी मचने में देर नहीं लगेगी, अगर हम अब भी नहीं जागे अर्थात सभी को मिलकर एक साथ कदम उठाने होंगे ताकि इस मूल्यवान संसाधन एवं

जीवन देने वाले अमृत को हम संग्रहित कर पाएं, और इसका ठीक प्रकार से उपयोग कर पाएं। इस प्रकार हम और हमारे साथ-साथ पृथ्वी के सभी जीव जंतु भी जीवित एवं स्वस्थ रह पाएंगे। मैंने किसी से सुना कि हमारे बुजुर्गों ने नदियाँ, पोखर, ताल-तलैया देखे, बाप-दादाओं ने कुएं और तालाब देखे, हमने नल एवं बोतल बंद पानी देखा, आने वाली पीढ़ियां क्या यह सब देख पाएंगी, हम इंसानों के कृत्यों और प्रकृति के भरोसे हैं।

अतः जल ही जीवन है, जल से ही जीवन है, का संकल्प प्रत्येक निवासी को लेना होगा।



हिन्दी एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

मदन मोहन मालवीय

दृढ़विश्वासी के लिए उम्र मात्र एक संख्या है



मा. हिमेश यादव

“मुश्किलों से भाग जाना आसान होता है। हर पहलू जिन्दगी का इम्तहान होता है। डरने वालों को कुछ नहीं मिलता जिन्दगी में लड़ने वालों के कदमों में सारा जहान होता है”

आज मैं जिसकी बात करने जा रहा हूँ उन्होंने इतनी मेहनत की है कि आप भी हैरान हो जाएंगे। हॉ दोस्तों आज हम बात करेंगे कर्नल हरलैंड की, जो के.एफ.सी. (कैंटकी फ्राईड चिकन) के संस्थापक थे।

इन्होंने पाँच साल की उम्र में अपने पिता को खो दिया और घर में ऐसी गरीबी आयी कि सिर्फ 7 साल की उम्र में घर की जिम्मेदारियाँ आ गयीं एवं नौकरी की तलाश में गए तो भी असफलता मिली। शादी के बाद उनकी पत्नी छोड़ कर चली गई। कारोबार भी शुरू किया वो भी बंद हो गया 65 वर्ष की आयु तक खुद का पेट पालने से ज्यादा कुछ नहीं कमाया पर इनका हौसला फिर भी नहीं टूटा था और फिर 65 वर्ष की आयु के बाद अपनी सभी गलतियों से सीख लेकर ऐसी कम्पनी बना डाली कि उस कम्पनी की ब्रांच 100 से भी ज्यादा देशों में हैं और यह कम्पनी करोड़ों में कमाती है और उस कम्पनी का नाम के.एफ.सी. है। अगर अपनी असफलता से परेशान हैं तो ये कहानी पूरी पढ़ना, तो अब हम जानते हैं कर्नल हरलैंड के संघर्ष से सफलता का सफर।

कर्नल हरलैंड का जन्म इण्डियाना (अमेरिका) के हेनरी विले में 9 सितम्बर 1890 को हुआ था और इनकी एक छोटी बहन और छोटा भाई भी थे । इनके परिवार में सब अच्छा चल रहा था लेकिन फिर भी 1895 के गर्मियों के दिनों में इनके पिता की मृत्यु हो गई। उस समय हरलैंड सिर्फ 5 साल का था पिता के

गुजरने के बाद घर गरीबी में डूबता जा रहा था जिसकी वजह से हरलैंड की माँ को फैक्ट्री में काम करना पड़ा और हरलैंड को इतनी छोटी सी उम्र में अपने छोटे भाई-बहन की जिम्मेदारी आ गई और उन दिनों में हरलैंड की माँ ने हरलैंड को खाना बनाना भी सीखा दिया और सिर्फ 7 साल की उम्र में वो खाना बनाने में माहिर हो गया और उन्हें सबसे ज्यादा चिकन बनाना पसन्द था। 1902 में हरलैंड की माँ ने दूसरी शादी कर ली फिर हरलैंड का पूरा परिवार इण्डियाना के ग्रीनवुड में रहने आ गये और हरलैंड के नये पिता हरलैंड से बहुत नफरत करते थे जिसकी वजह से हरलैंड और उसके नये पिता के अच्छे सम्बन्ध नहीं थे। इन्ही कारणों की वजह से 1903 में हरलैंड को अपना घर छोड़ना पड़ा और फिर खेत में आकर रहने लगे साथ ही साथ वो वहीं पर काम भी करते थे। घर छोड़ने की वजह से उनकी 7^{वीं} कक्षा में ही पढ़ाई छूट गई 13 साल की उम्र में वहीं इण्डियाना के पोलिस शहर में आ गये जहाँ पर घोड़ों की गाड़ियों पर रंगाई-पुताई करनी शुरू कर दी कुछ दिनों बाद उन्होंने ये भी काम छोड़ दिया और फिर 1906 में न्यू अलबनी इण्डियाना के एक शहर में अपने अंकल के साथ रहने लगे। उनके अंकल एक स्ट्रीट कार कम्पनी के लिए काम करते थे और उन्हीं की मदद से हरलैंड को कंडक्टर की नौकरी मिल गई।

इसी बीच रेलवे में फायरमैन की नौकरी भी की। फायरमैन की नौकरी करते समय ही उनकी मुलाकात एक लड़की से हुई जिससे उन्होंने 1909 में करीब 19 साल की उम्र में ही शादी कर ली। उसके बाद उनके 3 बच्चे हुए अब ऐसा लग रहा था जैसे हरलैंड की जिन्दगी में दोबारा खुशियां आना शुरू हो गई थीं वरना उनका हर मोड़ पर दिल टूटा है। उसी समय एक कर्मचारी के साथ झगड़ा होने के कारण फायरमैन की नौकरी से निकाल दिया गया और उसके बाद उनकी पत्नी भी अपने बच्चों के साथ उन्हें छोड़ कर चली गई। वो कहते हैं ना दोस्तों की क्यूं सोचते हो जिन्दगी में कुछ भी आसान नहीं होता सच तो ये है कि जैसा चाहो वैसा नहीं होता कोई आपका साथ दे या न दे खुद से बड़ा दुनिया में कोई हमसफर नहीं होता और

फिर हरलैंड की जिन्दगी बेकार हो रही थी वे डिप्रेशन में थे। लेकिन फिर उन्होंने अपने आप को संभाला और नौकरी की तलाश शुरू की उन्होंने अलग-अलग काम करके अपना पेट पालना शुरू कर दिया उन्होंने इंशोरेंस, क्रेडिट कार्ड तथा टायर का बिजनेस किया और इसी तरह के छोटे-छोटे बहुत काम किये लेकिन हर बार असफल होते रहे। 1929 में कैंटकी राज्य के छोटे से शहर कोरबिन में चले गये और अमेरिका के रूट 25 पर एक गैस स्टेशन खोला और यात्रियों के कहने पर गैस स्टेशन के बगल में ही एक छोटा सा रेस्टोरेंट खोल लिया। जहाँ पर वो अपने तरीके से चिकन बनाने लगे, जिसे लोगो नें बहुत पसन्द किया। लोगो द्वारा पसन्द आने की वजह से इस बिजनेस को और बड़ा करने का सोचा, और फिर कोरनेल विश्वविद्यालय से उन्होंने आठ सप्ताह का होटल मैनेजमेंट का कोर्स किया।

हरलैंड के द्वारा बनाया चिकन कैंटकी के गवर्नर को इतना पसन्द आ गया की हरलैंड को कर्नल की उपाधि दे डाली और तभी से हरलैंड के नाम के आगे कर्नल जुड़ गया। 1937 में हरलैंड ने कैंटकी में ही और ब्रान्च खोलने की कोशिश की और यह प्रयास भी असफल रहा और अगले कुछ ही सालों में हाइवे बनने के कारण उनका अच्छा खासा रेस्टोरेंट भी बंद हो गया और कुछ ही दिनों में पैसे भी खत्म हो गये और उनकी उम्र भी 62 साल की हो गयी थी और उन्होंने पूरा जीवन अपना पेट पालने के अलावा कुछ भी नहीं किया था। लेकिन उन्हें अपनी चिकन की रेसीपी पर पूरा भरोसा था वो मसाले और प्रेसर कुकर लेकर अपनी चिकन रेसीपी की मार्केटिंग करने निकल पड़े, उसके बाद उन्होंने अलग-अलग रेस्टोरेंट मालिकों से मिलना शुरू किया लेकिन समय ने फिर भी उनका साथ नहीं दिया और एक-एक कर के सभी रेस्टोरेंट ने रिजेक्ट कर दिया।

उन्होंने करीब 1000 रेस्टोरेंट की ठोकरें खाई और फिर उसके बाद उन्हें अपना पहला कस्टमर मिला, लेकिन उसके बाद से कर्नल हरलैंड ने फिर कभी भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा और देखते ही देखते पूरी दुनिया में अपनी एक अनोखी

चिकन रेसीपी की छाप छोड़ दी और फिर कर्नल हरलैंड के रेस्टोरेंट का नाम के.एफ.सी. रखा गया और आज देखा जाए तो केएफसी की ब्रांच 100 से भी ज्यादा देशों में है पूरी दुनिया में 18,875 से भी ज्यादा के.एफ.सी. के रेस्टोरेंट हैं पहला के.एफ.सी. यूएसए में 1952 में खोला गया। आखिरी बार ऐसी सफलताओं व असफलताओं का सामना करते हुए 16 दिसम्बर 1980 को 90 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हो गई। सोचो जरा जब लोग 60 साल की उम्र में रिटायर्ड हो जाते हैं आराम से जिन्दगी जीना चाहते हैं तब भी कर्नल हरलैंड ने हार नहीं मानी और संघर्ष किया और कहते हैं ना

“काम करो ऐसा की पहचान बन जाए, चलो ऐसे की निशान बन जाए, और जिन्दगी तो हर कोई जी लेता है, अगर दम है तो ऐसे जीओ की मिसाल बन जाए”

कर्नल हरलैंड ने जिन्दगी में कोई भी मौका नहीं छोड़ा और कभी हार नहीं मानी।

कर्नल हरलैंड के हौसले हर वक्त बुलन्द थे और हर वक्त उन्होंने अपने सपने के लिए संघर्ष किया है।

“मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपने में जान होती है, पंख से कुछ नहीं होता मेरे दोस्त हौसलों से उड़ान होती है”

और एक आखरी बात बस....

“कामयाबी के हर शिखर पर तुम्हारा नाम होगा, तुम्हारे हर कदम पर दुनिया का सलाम होगा, हिम्मत से मुश्किलों का सामना करना दोस्त एक दिन वक्त भी तुम्हारा गुलाम होगा”

ॐॐॐॐॐॐॐॐ

सकारात्मक व्यक्तित्व



श्री गुरप्रीत सिंह

बहरा होना भी अच्छा ही है, यदि बहरा नकारात्मक बातों के प्रति हुआ जाए। नकारात्मकता किसी संक्रामक रोग की तरह होती है, जो बड़ी तेजी से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में प्रवेश कर जाती है। कुछ लोग अपने चाहने वालों की इच्छाओं व सपनों को पूरा करने में जी-तोड़ की कोशिश करते हैं किन्तु सपने जब दूसरों के हो तो तुरंत बिना संकोच के हँसते हैं, उन्हें कमजोर करने का प्रयास करते हैं। ये लोग दूसरों को मशवरा देते हैं कि तुमसे ना हो पाएगा, कुछ और कर लो। ऐसे नकारात्मक लोगों के लिए अपने सपनों का त्याग करने से बेहतर होगा, कि ऐसे लोगों का ही त्याग कर दिया जाए।

किन्तु तब क्या करें जब ऐसे लोगों को छोड़ पाना आपके लिए असंभव हो। जैसे कई बार घर का ही कोई सदस्य नकारात्मक सोच से परिपूर्ण होता है या फिर विद्यालय में शिक्षक ही आप पर भरोसा ना करें या कोई ऐसा करीबी जिसे आप नहीं छोड़ सकते। जब ये लोग बार-बार आपको रोकेँगे, नकारात्मक परामर्श देंगे, तब आपके लिए अपने सपनों को साकार करना अत्यंत कठिन हो जाएगा।

ऐसी स्थिति में सकारात्मकता ही आपका रक्षण कर पाएँगी। दिन भर में जितने भी लोग आपसे नकारात्मकता भरी बातें करते हैं उससे अधिक आपको, अपने-आप से सकारात्मक बातें करनी हैं। ऐसा करने से आपका खुद के प्रति विश्वास पैदा होगा और लोगों की बातों का असर नहीं होगा अथवा कम असर होगा। इस दुनिया में कोई हमारा हौसला बढ़ाए यह आवश्यक नहीं हैं, इसलिए स्वयं ही खुद का हौसला बढ़ाना होगा। जो अपने कदमों की काबिलियत पर भरोसा रखते हैं, वे अक्सर मंज़िल तक पहुँच ही जाते हैं।

लोग आपको आपकी कमियाँ गिनवाएंगे, किन्तु आपको खुद पर विश्वास रखना होगा। हमसे पहले भी कई लोग हैं, जिनमें बहुत कामियां थीं, फिर भी उन्होंने कीर्तिमान स्थापित किए। लोग तो बहुत कुछ कहते हैं। लोग तो यह भी कहते हैं कि छोटे कद का व्यक्ति तेज गेंदबाज नहीं बन सकता तो उनसे पूछो वेस्ट इंडिस के पूर्व खिलाड़ी जो केवल 5 फीट 5 इंच के थे, उन्होंने किस प्रकार 157 कि.मी./प्रति घंटे से गेंदबाजी की?

यदि लोग आपको आपकी बढ़ती उम्र की दुहाई दें, तो बता देना हंगरी देश के पूर्व शूटर केरोली टाक्क्स के बारे में, जिन्होंने 38 व 42 वर्ष की उम्र में दो बार ओलंपिक्स खेल में स्वर्ण पदक जीता, वो भी जब उनका दाहिना हाथ किसी दुर्घटना के कारण क्षतिग्रस्त हो गया था और तब उन्होंने अपने उल्टे हाथ से शूटिंग में स्वर्ण पदक जीता था।

यदि कोई कहे तुम गरीब हो इसलिए कभी कामयाब नहीं होंगे, तो उन्हें अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के बारे में ज्ञान दो।

दुनिया में हमारा हौसला बढ़ाने के लिए ऐसे कई उदाहरण हैं। कुछ भी हो ऐसे नकारात्मक लोगों को खुद पर हावी मत होने दो। एक सही काबिलियत रखने वाला व मेहनती व्यक्ति कभी दूसरों के सपनों पर नहीं हँसता और दूसरों के सपनों कि कद्र करता है। जिन लोगों को लगता है आप अपने सपनों को पूरा नहीं कर सकते, असल में उन लोगों ने अपने जीवन में कुछ बड़ा हासिल नहीं किया होगा, इसलिए उन्हें सब कुछ असंभव सा लगता है। या फिर आपको वो लोग रोकते हैं जिन्हें आपसे ईर्ष्या है, उन्हें मालूम है आप कुछ कर दिखाओगे। इसलिए जीवन में अगर अकेले रहना पड़े तो भी खुशी-खुशी रह लेना, किन्तु नकारात्मक लोगों से दूरी बनाए रखना। ऐसे लोगों को मित्र बनाने से अच्छा होगा अच्छी किताबों को मित्र बनाएँ।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि सकारात्मक रहिए व अपने आप पर पूरा विश्वास रखते हुये मेहनत कीजिए ताकि आप अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अच्छा उदाहरण बन सकें।



हीथ लेजर - एक परिचय



मा. हिमेश यादव

“लोग अपनी जिंदगी बनाते हैं, मैं खुद अपनी जन्मत बनाऊगाँ”

हीथ लेजर

लोगों को फिल्मों में हीरो हमेशा पसंद आते हैं लेकिन अगर लोगों को फिल्मों में विलेन पसन्द आये तो ये समझ लेना कि उस विलेन ने शानदार एक्टिंग की है और आज मैं जिसके बारे में लिख रहा हूँ वो विलेन का किरदार निभा कर लोगों की नजरों में आये और कुछ वर्षों के करियर में जितना नाम कमाया उतना तो बहुत लोग जीवन भर काम करने के बाद भी नहीं कमा पाते। मैं हीथ लेजर की बात कर रहा हूँ वो प्रथम व्यक्ति थे जिन्हें विलेन के किरदार के लिए ऑस्कर पुरस्कार मिला। तो अब बात करते हैं उनके संघर्ष से सफलता के सफर की। इनका जन्म 4 अप्रैल 1979 को आस्ट्रेलिया में हुआ था। उन्हें 10 वर्ष की उम्र में ही स्कूल में एक रोल मिल गया था और इस तरह उनके अभिनय की शुरुआत हुई। वे एक बहुत अच्छे शतरंज खिलाड़ी भी थे। उन्होंने आस्ट्रेलियन जूनियर चैस प्रतियोगिता भी जीती थी। वे जब 11 वर्ष के थे तभी उनके माता-पिता का तलाक हो गया और इसके कारण वे तनाव में चले गए। परंतु वे किसी तरह इससे बाहर आए और उन्होंने 1992 से 1994 में टेलिविजन में छोटे-छोटे किरदार से अपने अभिनय की शुरुआत की और 17 वर्ष की उम्र में पूरे समय अभिनय के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ दी। अपनी अच्छी किस्मत के कारण उन्हें 1996 में वीट, टेलिविजन सीरिज में काम मिल गया। पर उन्हें असली पहचान 1997 की टेलिविजन सीरिज 'होम एंड अवे' से मिली जो कि उस समय के सर्वश्रेष्ठ शो में गिना जाता है। उन्होंने हॉलीवुड में जाने के लिए कई टेलिविजन शो को ठुकरा दिया और ऐसा भी समय आया कि उनके पास सिर्फ 150 डॉलर ही बचे थे लेकिन मेहनत रंग लाई और उन्हें “वन थिंग आई हेट एबाउट यू” फिल्म में काम मिल गया और आगे भी उन्हें बहुत सारी फिल्मों में काम मिला। पर उनकी आखरी फिल्म ने उन्हें

पूरी दुनिया में अलग पहचान दिलवायी और फिल्म इण्डस्ट्री में अपनी छाप छोड़ दी। इस फिल्म का नाम था “डार्क नाईट” इसमें उन्होंने एक जोकर की भूमिका निभाई, इसके लिए उन्होंने बहुत कड़ी मेहनत की थी। हीथ लेजर ने खुद ही अपना जोकर का मेकअप किया। इस किरदार को निभाने के लिए, इसे समझने के लिए उन्होंने अपने आप को एक कमरे में बहुत दिनों के लिए बंद कर लिया। एक सीन के लिए उन्होंने हीरो से कहा कि मुझे सच में थप्पड़ मारना ताकि सीन नकली ना लगे। फिर उनकी मेहनत रंग लाई और वो फिल्म लोगों को बहुत पसंद आयी। परंतु दुःख वाली बात ये है कि फिल्म की रीलीज के 6 महीने पहले ही 22 जनवरी 2008 को हीथ लेजर का ड्रग के ओवरडोज के कारण निधन हो गया। उन्हें गोल्डन ग्लोब अवार्ड से सम्मानित किया गया। परन्तु अफसोस की बात यह थी कि वो उस अवार्ड को लेने के लिए जिन्दा नहीं रहे। हीथ लेजर हमारे बीच नहीं रहे परन्तु जोकर के किरदार के रूप में उन्हें हमेशा के लिए अमर कर दिया। इनकी जिन्दगी में बहुत चीजें हुईं, संघर्ष हुआ ये पीछे नहीं हटे। अपने एक विलेन के रोल में पूरी दुनिया को हिला डाला, इन्होंने इस रोल के लिये इतनी मेहनत की थी जो आखिरकार सफल हुई। उनकी कई फिल्में असफल भी हुईं परंतु उन्होंने हार नहीं मानी। “कोशिश के बावजूद हो जाती है कभी हार, होकर निराश मत बैठना यार खड़े रहना जैसा भी हो मौसम, पा लेती है मंजिल छोटी सी चींटी भी गिरकर बार-बार” हीथ लेजर ने कभी भी एक्टिंग नहीं छोड़ी। उन्हें ना पैसा, ना शोहरत से प्यार था उन्हें सिर्फ अपने काम से प्यार था। उन्होंने दिल से और सच्ची मेहनत की। “जिंदगी में कभी भी अपनी उदासी से हार मत मान जाना यारों क्योंकि गिर कर उठने वाले को ही बाजीगर कहते हैं।” क्या पता उस एक मौके से पूरी दुनिया के लिए मिसाल बन जाओ, मुश्किलों से कभी मत भागना। अगर मुश्किल से भागे तो तुम सफलता से भी दूर हो जाओगे। वर्तमान में अच्छा करोगे तो आगे जाकर भविष्य अच्छा होगा। जैसा कि आपने पहले मेहनत नहीं की और आज आप ऐसी जिन्दगी जी रहे हो। वो आप जानते हो इसलिए कल को खूबसूरत बनाने के लिए आज मेहनत करनी पड़ती है।

दहेज-प्रथा या लालच



सुश्री कामिनी सिंह

आज बैठे-बैठे नेट पर दहेज का अर्थ ढूँढने का प्रयास किया। कई मतलब निकलकर आये जैसे कि विवाह के अवसर पर कन्या पक्ष द्वारा वर पक्ष को दिया जाने वाला धन, रुपया, दायजा, दाय आदि वाकई में दहेज के ही मतलब हो सकते हैं। बहुत कोशिश की ढूँढने की दहेज शब्द तब इन तीन अक्षरों का अर्थ मिले जैसे कि द-हे-ज, या दहे+ज लेकिन नहीं मिला। लेकिन जितनी बार भी ढूँढना चाहा हर बार दहेज के साथ कुप्रथा लिखा मिला। काफी पहले से यह प्रथा चली आ रही है और अब सबको पता है कि यह एक कुप्रथा है या गलत है तो इसे अभी तक पूर्ण रूप से बंद क्यों नहीं किया गया है। आज भी भारत में बहुत से परिवार ऐसे हैं जो अपने लड़के की शादी से 3-4 साल पहले घर का, सामान या फर्नीचर नहीं लेते क्योंकि उन्हें उम्मीद होती है कि यह सब सामान तो शादी में मिल ही जाएगा। एक बात समझ में नहीं आती कि जब एक आदमी को दहेज के ऊपर दो-चार शब्द बोलने के लिये कहा जाता है तो वह इसे एक कुप्रथा के रूप में बहुत अच्छे से नकारता है व इसे बन्द किया जाना चाहिए के नारे भी लगा लेता है लेकिन जब स्वयं उसके बेटे की शादी/विवाह का समय आता है तो इसके मन में दहेज की लिस्ट के लड्डू फूटने लगते हैं। अगर उस लिस्ट में से किसी एक चीज में भी कोई कमी रह जाए तो वह बहुत अकड़ दिखाता है व वधु के पिता को नीचा दिखाने का अवसर हाथ से नहीं जाने देता। वह ऐसे व्यवहार करता है जैसे कि उसने वधु के पिता पर एक बहुत बड़ा अहसान किया है। यदि दहेज प्रथा समाज से पूरी तरह खत्म हो जाये तो हमें “बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ” के नारे लगाने की जरूरत नहीं

पड़ेगी। दहेज प्रथा के कारण ही हर विवाह के योग्य लड़की के पिता को यह डर सताता है कि यदि उसने दहेज देने योग्य धन इकट्ठा नहीं किया तो उसकी बेटी के विवाह में परेशानियां तो आयेंगी ही साथ ही ससुराल में उसे आदर नहीं मिल पायेगा। जब तक दहेज प्रथा बंद नहीं होगी लड़कियों को समाज में सुरक्षित माहौल नहीं मिलेगा, तब तक किसी भी माता-पिता के लिए लड़की का पैदा होना चिंता का विषय ही बना रहेगा।



समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

कोरोना



सुश्री कामिनी सिंह

यह कैसा संकट आया है,
हर ओर अंधेरा छाया है।

हर रोज कमाने वालों के आगे,
रोजी रोटी का संकट मंडराया है।

विश्व में केवल भारत ऐसा,
जहां हर हाथ मदद को आया है।

जो निकले थे घर से अपनों से मिलने के लिए।

पैसा कमाने की लगी थी ऐसी होड़,
नहीं पता था, कुदरत भी लेगी ऐसा मोड़।
कोरोना तो केवल एक भ्रम है,

हम अज्ञानता के अंधेरे में कैद हैं।

इस बात का हमें गम है।

क्षत-विक्षत हो रहा विश्व,
खतरे में है मानव जीवन।

बचेगा वही जो करेगा,

लॉकडाउन का पालन।

कोरोना ने ले लिया है रूप विकराल

मास्क, दस्ताने, साबुन-पानी

और सामाजिक दूरी ही बनेंगे ढाल।

मजबूर और जरूरतमंदों की करो सहायता,

मिल बांट कर खाने से ही सही मायने में पेट भरता।
कोरोना और मनुष्य का युद्ध भले ही थोड़ा लंबा होगा,
गूंज उठेगी जीत की धुनें और हर घर में चिराग जलेगा।
घर की चार दीवारों में रहना होगा मुश्किल उनके लिये,
बाहरी लोक दिखावा ही है जीवन जिनके लिये।
धरा-जल-अगन-गगन,
रोटी कपड़ा और मकान।
ये हैं आवश्यक बाकी सब निराधर,
जो कहते थे हम हैं सबसे शक्तिशाली।
सबसे पहले घुटने टेक गये।
इस आधुनिक कोरोना के कुरुक्षेत्र में,
न जाने कितने मटिया मेट हुये।
रण कौशल ही, रण विजयी बनेंगे,
इस बात में कोई दोराय नहीं।
जो राम-नाम ना बोल सके,
वो जीत सकता कभी नहीं।
जो थे विरोधी भारत के,
हर हाथ में लिये हथियार खड़े थे।
कोरोना दे रहा संदेश उनको,
हो जाओ एक जुट।
दो परिभाषा विश्व एकता की,
साम-दाम, दंड-भेद लगा लें चाहे कितना भी शत्रु,
जीत होगी केवल मानवता की।



कोरोना का चिर निदान: योग-यज्ञ-ज्ञान



सुश्री कामिनी सिंह

कोरोना चीनी बीमारी है, यह जान लीजिए।

भारत जो सुझाए, उस पर ध्यान दीजिए।

नई ये बीमारी है, संसार के लिए।

ये आई है, भारी नर-संहार के लिए।

स्वास्थ्य सेवाओं में जो शीर्ष देश थे।

रोग या बीमारी जहाँ, नहीं शेष थे।

सबसे ज्यादा कहर इसका, वहीं मचा है।

कोरोना से कोई उनमें, नहीं बचा है।

अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, फ्रांस की पहचान कीजिए

भारत जो सुझाए, उस पर ध्यान दीजिए।

कोरोना से ग्रस्त, पूरा विश्व हो रहा।

कोरोना का अन्त नहीं कहीं हो रहा।

अकाल-युवा वृद्ध हैं चपेटे में सभी।

आई नहीं दुनिया ऐसे लपेटे में कभी।

महान धनवान, शक्तिमान, सभी रो रहे हैं।

कोरोना से भारी परेशान हो रहे हैं।

अब तो विधि के विधान का सम्मान कीजिये।

भारत जो सुझाए उस पर ध्यान दीजिए।

वंदना, प्रार्थना, उपासना करो।

यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र द्वारा साधना करो।

सबसे पहले अपना मनोबल बढाइए।

कोरोना के विरुद्ध बिगुल, बजाने के लिए।

आत्मबल बढाओ, भय भगाने के लिए।

अब योग, यज्ञ, ज्ञान का सहारा लीजिए।

भारत जो सुझाए उस पर ध्यान दीजिए।



वही भाषा जीवित और जागृत रह सकती है जो
जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके और
हिन्दी इसमें समर्थ है।

पीर मुहम्मद मूनिस

बदल गया चिराग



सुश्री सरिता

भीमपुर गाँव में एक धनी किसान रहता था। उसका नाम रहमत अली था। वह बड़ा ही रहमदिल इंसान था। उसने गाँव के बहुत से गरीब किसानों को अपनी जमीन खेती के लिए दी थी। ताकि फसल उगाकर वे अपना पेट भर सकें। उसका इकलौता बेटा चिराग बहुत शैतान था। स्कूल से रोजाना शिकायतें आती- “आज किसी के बैग से किताब निकाल ली, किसी की कापियाँ फाड़ दी। कल किसी से झगड़ा कर लिया। घर से स्कूल आते-आते पेड़ों पर पत्थर मारना, चिड़ियों पर गुलेल चलाना रोज का काम था। पढ़ाई में मन नहीं लगता था, रहमत अली परेशान रहते, बड़ा होकर क्या करेगा ? स्कूल में कोई उसका दोस्त नहीं बनता। उसकी क्लास में एक लड़का था जिसका नाम मुन्नु था। मुन्नु शांत, दयालु और पढ़ने में होशियार था। बहुत कम बोलता था। हमेशा दूसरों की मदद करने को तैयार रहता था। चिराग को वह अच्छा लगता था। वह चाहता था कि मुन्नु उसका दोस्त बने।

एक दिन चिराग ने मुन्नु से पूछा-“ मेरे साथ दोस्ती करोगे?” मुन्नु को मालूम था कि चिराग की शैतानियों के कारण कोई उसका दोस्त नहीं बनता। उसे चिराग पर दया आ गई। उसने उसकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ा दिया। अब दोनों स्कूल से घर और घर से स्कूल साथ-साथ आते-जाते क्योंकि, दोनों का घर भी आस-पास था। चिराग की समझ में एक बात नहीं आती थी कि रोज घर वापसी के समय, मुन्नु उससे अलग होकर चिल्ड्रेन्स पार्क वाले रास्ते पर क्यों और कहाँ जाता है और उसके पापा भी उसे नहीं डॉटते।

एक दिन उसने मुन्नू से पूछ ही लिया- “मुन्नू-, तुम स्कूल से लौटते समय मुझसे अलग होकर कहाँ चले जाते हो? तुम्हें मैं चिल्ड्रेन्स पार्क वाले रोड पर जाते देखता हूँ।”

मुन्नू बोला, “अपने दोस्त से मिलने जाता हूँ। तुम भी मिलोगे? चिरांग बोला, “क्यों नहीं? जरूर मिलूँगा।”

वे उसी दिन स्कूल से वापस होते समय चिल्ड्रेन्स पार्क वाले रोड पर चल पड़े। एक सुन्दर बगीचे में आकर मुन्नू एक नन्हे से पेड़ के पास आकर रुक गया। वह हरसिंगार का नन्हा पेड़ था। वही पास में हरसिंगार के दो बड़े पेड़ थे। आस-पास गुडहल, चम्पा, गुलाब, अशोक, कनेर के भी पेड़ थे।

मुन्नू ने उस नन्हे पौधे के पत्तों को प्यार से छुआ। पत्ते हिलाकर पौधे ने मुन्नू के गाल छुए। वह मुस्कराया। चिरांग ने स्कूल में मुन्नू के चेहरे पर ऐसी मुस्कान नहीं देखी थी। मुन्नू बोला- “चिरांग यही नन्हा हरसिंगार मेरा दोस्त है। यहीं इसके माता-पिता भी हैं। देखो, कितनी बड़ी कालोनी में रहता है मेरा दोस्त । हरे-भरे खुश-चमकते चेहरे, सूरज की रोशनी से नहाते धीरे-धीरे बहती हवाओं के साथ झूमते बतियाते हुए।”

चिरांग हैरान- भला ये नन्हें पेड़ दोस्त कैसे? न बोलना, न खाने-पीने का सामान शेयर करना। मुन्नू बोला - “ये, ही तो सच्चे दोस्त हैं। कभी किसी बात पर कुट्टी नहीं, हमेशा हंसते, खिलखिलाते, झूमते। इन्हे चिढाओ, लड़ो, मारो तब भी तुम्हारा नुकसान नहीं करेंगे। इनकी बोली समझने के लिए इनको प्यार करना होता है।”

तभी हरसिंगार के बड़े पेड़ पर एक तोता आकर बैठा। उसने कहा- “स्वागतम, चिरांग भाई।” चिरांग का आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यह तो आदमियों की भाषा बोलता है। तोते ने कहा- “इन पेड़ों को देखो। इन पर कितने ही पत्थर बरसते हैं। तुम्हारे जैसे बच्चे पत्थर मार-मार कर घायल कर देते हैं। फिर भी हमारे लिए ये पेड़ कितने बड़े सहारे हैं। कहीं से थके-हारे आओ, लंबी उड़ान के बाद

उतरो, इनकी डालियों पर, पत्तों की छाँव में कितना आराम मिलता है। इन्हीं के तनों की खोही में हम घर बनाते हैं।”

चिराग ने देखा- उन पेड़ों के तनों और डालियों से गाढ़ा पदार्थ निकल रहा था। ऐसा लग रहा था मानों रो रहे हो। जामुन की मोटी डाल पर एक जगह हरे-सफेद हो गई जगह से तरल पदार्थ निकल रहा था। गूलर के तने पर उल्टे-सीधे नाम चाकुओं से गुदे थे। मुन्नु बोला- देखो चिराग, कितना चोट खाते हैं ये पेड़। फिर भी हमें मीठे फल, ठंडी छाँव देते हैं, और एक हम है स्कूल और कॉलोनी के दोस्तों से लड़ते रहते हैं। उनका बुरा सोचते हैं। जामुन के पेड़ की छाया में बच्चे आराम कर रहे हैं। खूब खेल खेलकर थक गए हैं न। इन बच्चों में एक मधुप भी है। उसके पिता को डायबिटीज है। अपने पापा के लिए जामुन ले जाता है और जामुन को सबसे ज्यादातर पत्थर वही मारता है।

अब उसने अपने बैग में से पानी की बोतल निकाली। बोतल में मटमैला पानी था और उसमें काली मिट्टी और गोबर के टुकड़े तैर रहे थे। उसने बताया कि यही पानी उसके दोस्त का फेवरिट ड्रिंक है। इसे पीकर यह खुश हो जाता है- यह ड्रिंक मैं रोज लाता हूँ। यह रोज मेरा इंतजार करता रहता है।

चिराग के मन में उथल-पुथल मची थी। वह अपने आपको गुनाहगार समझ रहा था। उसे उस नन्हे हरसिंगार पर प्यार आ रहा था। उसने बड़ी ममता से उसके पत्तों और डालियों पर हाथ फेरा। उसके हाथ में जादू सा अनुभव हुआ। अब उसने इन पेड़-पौधों के बीच अपनी दुनिया बसाने का फैसला किया। अपनी विशाल कोठी के खाली बड़े हिस्सों में चंपा, गुड़हल के पेड़ लगाए। चंपा, गुड़हल ही क्यों, डहेलियो, क्रोटन, अशोक, नीम, जामुन के पौधे लगाए। चिराग की एक खूबी थी। वह जिस काम को करता था, बड़ी मेहनत और लगन से करता था। उसने पौधे लगाकर छोड़ नहीं दिया, पूरी सावधानी और तत्परता से उनकी देखभाल करता। उन्हें खाद-पानी देता, कीड़ों से बचाव के लिए दवा छिड़कता। उसने एक कुशल

गुस्सा कम करने का उपाय



श्री रामब्रेश यादव

अक्सर इन्सान को गुस्सा आता रहता है। मुझे भी आता है। उसके कई कारण हैं। आज का वातावरण कुछ ऐसा बनता जा रहा है। कि इन्सान उलझता जा रहा है। कई लोगों ने कुछ सुझाव दिए हैं। उनमें से कुछ नीचे लिख रहा हूँ।

1. जब कभी गुस्से का अंदेशा हो तो शरीर का तापमान कम करना जरूरी होता है। सादा पानी का सेवन करें।
2. मुँह हाथ अच्छी तरह पानी से धो लो जिससे आँखें लाल न हों। गुस्सा कम हो जाता है। आंखों पर पानी के छींटे मारें।
3. गुस्सा एक तरह का पागलपन का भाई ही होता है। कभी-कभी लोग नींद वगैरह की गोली भी लेते हैं ताकि सामने वाले की बात का असर कम हो।
4. श्री मुरारी बापू अक्सर अपनी कथा में कहते हैं, कि जब अमीर को गुस्सा आवे तो जो भी पास में नौकर हो उसे दान जरूर दो, जितनी बार गुस्सा आवे उतनी बार दान दो, गुस्सा नहीं आयेगा ले भाई सौ का नोट।
5. गरीब को गुस्सा आवे तो अन्दर जा कर अपने मुँह पर जोर से थप्पड़ मारे जिससे गलती महसूस हो यह भी बापू जी कहते हैं।
6. कुछ डॉक्टरों का मानना है, कि दांतों को थोड़ा खुला रखो। जब भी गुस्से वाली बात सुनो दांतों को खोल दो। मुँह बंद ही रखो उससे भी गुस्सा कम आता है।
7. गुस्से वाली बात को कल के लिए टाल दो शायद अपने आप हल निकल जाएगा। फ्रांस की कहावत है।
8. आज कोई गुस्से वाली बात होती है, तो उसका फैसला आज नहीं कल पर छोड़ दो मगर परसों नहीं करना जिससे झगड़ा बढ़ जाएगा। आज का

- फैसला आज ही करोगे तो गलत हो सकता है और लेट करोगे तो झंझट बढ़ सकता है।
9. हर गुस्से वाली बात में अपना दोष भी होता है। उसको जरूर पहचान लेना चाहिए उससे गुस्सा आधा रह जाता है।
 10. क्रोध झूठ से शुरू होता है, और पश्चाताप करने पर समाप्त होता है।
 11. संसार में जर-जोरु-जमीन के झगड़े हैं। पैसा, औरत, जायदाद का सब मसला है। इन तीनों से नीति पूर्वक व्यवहार करना चाहिए।
 12. हर गुस्से का अन्जाम बहुत भयानक होता है। कई घर तबाह कर दिए गुस्से ने। आप कचहरी जाकर देखो, जो कल अमीर थे आज शायद गरीब हो गए और गरीब से अमीर शायद ही कोई बना हो।
 13. कुदरत के साथ रिश्ता जोड़ने से भी गुस्सा कम आता है। आप खुली हवा में टहलने चले जाएं, कहीं सत्संग में चले जाएं, प्रभु की यही इच्छा है। ऐसा विचार भी सहायक है, गुस्सा कम हो जाएगा।
 14. गुस्सा कम करने के लिए अच्छे साहित्य का सहारा लेना चाहिए, शान्त व्यक्ति से सलाह लेनी चाहिए।
 15. जैसे-जैसे आप ऊपर की तरफ जाएंगे। देखेंगे पहाड़ों पर रहने वाले गुस्सा कम करते हैं, ऐसा देखा गया है। नीचे संसार दिखता है। ऊपर भगवान नजर आता है।
 16. ईश्वर-लीला को देखना चाहिए। जैसे ईश्वर ने इन्सान के लिए क्या-क्या बनाया है। समुद्र से जल उठाकर पहाड़ों पर ले जाना। फिर उसको बर्फ बनाना और फिर संसार को पानी देना कितनी मुफ्त में मेहनत करनी पडती है। सब काम बिना झंझट के ही चलता है। ईश्वर गुस्सा नहीं करता तो आप क्यों करें।

17. इस धरती को देखो जिस पर पांव रख कर चलते हैं। गंदगी करते हैं, सारा दिन थूकते हैं, वह धरती हमें अनेक तरह के फल देती है, और हमारा जीवन चलाती है। दुःख सहना धरती मां से सीखना चाहिए।
18. फल वाले वृक्ष को पत्थर मारते हैं। तो भी वो फल देता है। पत्थर गिरने से पहले वो फल गिरा देता है (वेद वाक्य)।
19. तीखा भोजन करना, बार-बार खाना, सेहत का ध्यान न रखना, कमजोर होना, यह सब गुस्से से ताल्लुक रखते हैं।
20. प्रभु का ध्यान करना, अपने किए गुनाह का पश्चाताप करना भी गुस्से में काफी सहायक रहता है।
21. जिसको गुस्सा आता है उससे दूर रहना भी गुणकारी है।
22. कुछ लोग जानबूझ कर गुस्सा दिला देते हैं। ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए उनसे दूर रहो इसी में भलाई है।
23. शराबी आदमी गुस्सा करता है। जो अपने को रौब वाला समझता है। मगर दुनिया जानती है। यह शराबी है।
24. जो लोग रात को देर तक जागते हैं। मांस मदिरा का सेवन करते हैं। वो भी चिड़चिड़े गुस्से वाले देखे जाते हैं। रात ईश्वर मिलन और आराम के लिए होती है।
25. संसार का चक्र क्या है? अगला जन्म कहाँ होगा? कैसा होगा? क्यों होगा? ये बातें भी गुस्सा कम करने में मदद करती हैं।
26. किसी को चुभनी बात कहना या उसकी आत्मा को ठेस पहुंचाना भी गुस्से का कारण बनता है। जैसे महाभारत।
27. जब इन्सान कुछ गलत करता है। उसे खुद पर भी गुस्सा आता है।
व्यसन करना, झूठ बोलना, अपनी तारीफ करना, दूसरों की निंदा करना, कमाई से ज्यादा खर्चा करना, पैसे के ही पीछे भागना, वगैरह सब गुस्से के साथी हैं।

खर्चा कैसे कम करें?



श्री रामब्रेश यादव

1. सही आमदनी को देखें, विचार करें।
2. रीस न करे, उसके पास क्या है, क्यों है, बिल्कुल विचार न करें।
3. खर्चा बढ़ाना आसान होता है घटाना मुश्किल होता है।
4. अच्छी चीजें ही खरीदें ताकि बार बार न लेनी पड़ें।
5. सामान रखने की जगह बनायें ताकि मिलने में आसानी हो दोबारा खरीद न करनी पड़े।
6. चिट्ठी पत्री का प्रयोग करें ताकि सामने वाले को सही संदेशा मिल जाए। फोन करने पर कभी मिलता भी नहीं, भूल भी जाता है।
7. ताजे मौसम के फल सब्जी खायें जो महंगे न हो।
8. बिजली का ज्यादा इस्तेमाल न करें।
9. पेट्रोलियम की चीजों से बचें।
10. वक्त पर रिटर्न, बिजली, टेलीफोन, पानी, फीस का भुगतान करें, ताकि सुविधाओं में बाधा न हो और जुर्माने का डर भी ना हो।
11. त्यौहारों को सादगी से मनायें। त्यौहारों को पैसे से मत जोड़ें यह हमारी संस्कृति है।

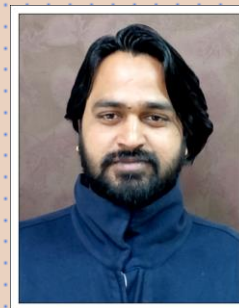
12. जल्दबाजी में रिश्ता न करें। पहले व्यवहार करें या जो करते हैं उससे तसल्ली करें। दहेज वाली जगह रिश्ता न करें।
13. सुबह की दुनिया बनायें, जो सस्ती कुदरती होती है। संसार के सभी प्राणी सुबह से रिश्ता रखते हैं।
14. व्यसनों से दूर रहें। व्यसनों में पैसा भी लगता है। बदनामी भी होती है।
15. मुकदमेबाजी में न फंसे।
16. आपसी बंटवारे में झगड़ा न करें, कम हो तो भी कोई बात नहीं। ईश्वर ने देने के कई रास्ते बनाये हैं। वकीलों के पास न जायें।
17. कम चीजों में गुजारा करना सीखें।
18. कंजूस भी न बनें।



आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

छतरी में छेद



श्री नितिन कुमार

टिंकू और मिंकू दो दोस्त थे। दोनों का घर एक गली में, स्कूल एक क्लास एक था। उनका स्कूल घर से डेढ़ किलोमीटर दूर था। दोनों स्कूल पैदल ही आते-जाते। गले में, कमर में हाथ डाले बोलते-बोलते, बोतल-डब्बों, कंकड़ों को ठोकर मारते-मारते रास्ता तय करते।

एक बार की बात है, मार्च का महीना था, दोनों बच्चे स्कूल जा रहे थे। सात बजे का समय था। धूप तेज थी। टिंकू ने मिंकू से कहा- यार मिंकू- इतनी तेज गर्मी स्कूल भी नहीं पहुँचे और पसीना-पसीना। मिंकू बोला- हाँ दोस्त, पूरे बरसात में सिर्फ दो बार जम कर बारिश हुई है।

टिंकू ने चिंता जताई- न जाने कुदरत को क्या हो जाता है। समय पर वर्षा नहीं, जाड़े में जाड़ा नहीं और गर्मी मत पूछ।

आसमान की ओर देखते हुए मिंकू बोला-काश, सूरज दादा मिलते तो उनसे पूछता-लाखों बरस से चमक रहे हो, तुम्हें सब पता होगा। क्या धरती हमेशा से ही इतनी तपती रही है?

टिंकू उदास हो बोला-हाँ दोस्त, बात तो सही करते हो। सूरज दादा मिलते तो पूछता तो, आप इतना गुस्सा नहीं करते थे। अब हरदम गुस्से में क्यों रह रहे हो?

मिंकू ने शक जाहिर किया- मित्र, अगर वे तुमसे बात करेंगे तो आसमान में कौन चमकेगा? इतनी दूर हैं तो इतने गर्म हैं जब पास आयेंगे तो हम तो पिघल जाएंगे।

वे बात करते जा रहे थे कि रास्ते में उनका दोस्त रम्बो मिला। वह कई दिनों से स्कूल नहीं आ रहा था। कारण पूछने पर उसने बताया कि वह अस्पताल गया था। उसके पूरे शरीर पर लाल-लाल चकते हो गए थे। डाक्टर ने सूरज की सीधी रोशनी से बचने के लिए कहा था। टिंकू-मिंकू ने उसके अच्छे होने की कामना की- रम्बो, तुम जल्द ठीक हो जाओगे।

अगले दिन की बात है। टिंकू-मिंकू स्कूल से वापस लौट रहे थे। मिंकू के हाथ में खुजली शुरू हुई मगर उसने ध्यान नहीं दिया। वे चलते रहे। जब वे पार्क के पास पहुँचे तो उन्हें पार्क के बाहर सड़क किनारे एक नौजवान खड़ा मिला, लक-दक सफेद कमीज-पैंट, मुस्काता चेहरा, काले घुंघराले बाल, नारंगी कैप, हाथ में पीपल की छोटी सी छड़ी, निगाह उस नौजवान पर पड़ी तो एक बारगी वे ठिकके मगर आगे बढ़ गए। तभी उन्हें पीछे से बड़ी मीठी-प्यारी सी आवाज सुनाई दी- 'सुनो, मुझसे बात नहीं करोगे? बच्चे पीछे पलटे और पूछा- "अंकल, आपने बुलाया"।

नौजवान बोला- 'वाह बच्चों, मुझसे मिलना भी चाहते हो और पहचानते भी नहीं। मैं तुम्हारा सूरज दादा?'

टिंकू-मिंकू की खुशी का ठिकाना न रहा। वे उससे लिपटने के लिए आगे बढ़े मगर इस डर से रुक गए कि कहीं पिघल न जाएं। सूरज दादा समझ गए। उन्होंने खुद आगे बढ़ कर दोनों को लिपटा लिया। ताज्जुब जरा भी गर्मी नहीं।

बच्चो ने पूछा- 'दादा, आप यहाँ हैं। ऊपर कौन चमक रहा है?'

सूरज दादा बोले, 'बच्चों, मैं तो ऊपर ही हूँ। कल तुम्हारी बातें सुनी तो तुमसे मिलने का मन कर आया। जादू से वेष बदल कर आ गया।'

मिंकू आश्चर्य से पलक झपकाने लगा- 'आप इतनी दूर हैं फिर हमारी बातें कैसे सुनी?'

सूरज दादा हँसे- 'पगले, मेरी किरणों से पृथ्वी का कोई कोना नहीं बच सकता। वे हर जगह पहुँच जाती हैं। धरती के एक-एक इंच की खबर मुझ तक

पहुँचती है वे मेरी जासूस हैं। तुम्हारी कल की बातचीत किरणों ने सुनी थीं। उनकी लीडर ट्विकल ने मुझे बताया कि तुम मुझसे मिलना चाहते हो।'

दोनों बच्चे बोले- 'हाँ, हाँ, हम आपके बारे में बात कर रहे थे।' सूरज दादा बोले- 'चलो, पार्क में बेंच पर बैठते हैं। वहीं ढेर सारी बातें करगें', और तीनों पार्क की एक बेंच पर बैठ गए, बीच में सूरज दादा और अगल-बगल टिंकू- मिंकू।

टिंकू ने शुरुआत की- 'आजकल आप बहुत जल्दी गुस्सा हो जाते हैं।' सूरज दादा बोले- 'बेटा, मुझे बहुत सारे काम करने होते हैं। पूरी धरती के प्राणियों के लिए भोजन, पानी की व्यवस्था, रोशनी का इंतजाम, मौसम कंट्रोल, हवा के तापक्रम पर कंट्रोल सब मेरे जिम्मे है। धरती को प्रकृति ने हवा, पानी, जंगल, पहाड़, नदियाँ, सागर जैसे उपहार दे रखा है। मैं भी तो प्रकृति का एक हिस्सा हूँ।'

मिंकू ने पूछा- 'सारी गर्मी धरती पर फेंकने का जिम्मा आपका ही है क्या?'

सूरज के जवाब देने से पहले टिंकू बोल पड़ा - 'हमारा दोस्त रम्बो आपकी किरणों के कारण ही बीमार पड़ा है। उसके पूरे शरीर पर लाल-लाल चकते हो गए हैं। डाक्टर ने उसे आपकी रोशनी से बचने को कहा है। अस्पताल के चक्कर काटने पड़ते हैं।'

सूरज दादा बोले- 'जानते हो। भगवान तुम्हारी धरती को बहुत चाहते हैं बात यह है कि मैं खुद जलती हुई गैस का गोला हूँ। मेरे जलते रहने से कई ऐसी किरणें निकलती हैं जो अगर सीधा पृथ्वी पर पहुँच जाँये तो भयानक बीमारियाँ प्राणी को जकड ले। इन्हीं किरणों और तेज गर्मी से रक्षा के लिए प्रकृति ने छतरी तान रखी है। इस गैस का नाम ओजोन है।

टिंकू बोला- 'छतरी ?'

सूरज दादा बोले- 'हाँ छतरी और उस छतरी में जगह-जगह छेद होने लगा है।'

मिंकू ने आश्चर्य से पूछा- 'छतरी में छेद?'

सूरज दादा बोले- 'हाँ छेद। धरती पर मनुष्य ने विकास और सुविधा के लिए कई तरह के कल कारखाने लगा रखे हैं। इन कारखानों से निकलने वाले कचरे जैसे कार्बन टेट्राक्लोराइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन, हेलोन आदि हवा में मिलते हैं। ये गैसों ओजोन से एक-एक आक्सीजन निकालकर क्लोरीन मोनोआक्साइड में बदलते रहते हैं। आक्सीजन निकलने से मेरी हानिकारक किरणों को धरती पर आने का रास्ता मिलता है। यही रास्ते छेद कहलाते हैं। धरती पर जितनी नुकसानदेह किरणें पहुँचनी चाहिए उससे 1.3 से 1.5 प्रतिशत किरणें ज्यादा पहुँचती हैं। नतीजा, भयंकर गर्मी, चमड़ी के रोग, कैंसर, मौसम चक्र में गड़बड़ी आदि।'

टिंकू ने पूछा- ' इस छेद को बंद करने का उपाय?'

सूरज दादा बोले- 'आसमान में कचरा छोड़ने का काम बंद कर दो। बंद नहीं तो कम कर दो।'

मिंकू ने टिंकू से कहा- 'पापा से बोल- 'एयरोसोल, गैस हवा में न फेंके। तुम्हारी 'डिओडॉरेंट की फैक्टरी है।'

टिंकू बोला- 'तुम्हारी भी तो टूथपेस्ट की फैक्टरी है। तुम भी पापा से बोलो- और कोई रास्ता निकालें। गैस-कचरा हवा में न फेंकें।'

इस बातचीत से दोनों बच्चे खुश थे। उन्होंने अपने बैग से चाकलेट निकालकर सूरज दादा को दिया। दादा ने कहा, 'नो, थैंक्स, गुड बाय।' और सब अपने-अपने रास्ते चल दिए।



माँ होना क्या इतना आसान है?



सुश्री पूनम यादव

कितना मुश्किल होता है एक माँ के लिए छोटे बच्चे को सोता हुआ छोड़कर घर से बाहर अपने जॉब पर जाना? इस तकलीफ को सिर्फ एक माँ ही समझ सकती है।

बच्चा उठेगा, मम्मा-मम्मा करके थोड़ी देर रोएगा, जब माँ नहीं दिखेगी तो चुपचाप चप्पल पहन कर अपनी दादी या घर के किसी बड़े सदस्य के पास चला जाएगा। समय से पहले ऐसे बच्चे बड़े व जिम्मेदार होते जाते हैं, लेकिन माँ अपने जिम्मेदार बच्चे को भरी आँखों से ही देखती है, कि भला अभी इसकी उम्र ही क्या है?

पता नहीं एक माँ में इतनी हिम्मत, इतनी ममता इतनी ताकत आती कहाँ से है? किसी से कुछ कहती भी नहीं, बस आँखें भरती हैं, डबडबा जाती हैं, फिर खुद को कंट्रोल करती हुई भरी आँखों को सुखा लेती है।

जॉब के साथ-साथ घर परिवार संभालना, बच्चों के टिफिन से लेकर हसबैंड के कपडों तक, ब्रेकफास्ट से लेकर रात के डिनर तक, कितना बेहतर मैनेज करती है फिर भी मन में लगा रहता है कि बच्चे को बादाम पीस कर नहीं दे पाई वो ज्यादा फायदा करता। कहीं न कहीं कुछ छूटा-छूटा सा लगा रहता है।

इतना काम अगर स्त्री अपने मायके में करे तो वहाँ उसको बहुत तारीफ और प्रोत्साहन मिले या कह लें कि वहाँ उसे कोई करने ही न दे, सब सहयोग करें।

बच्चे का नाश्ता खाना सब बना कर जाना, फिर बच्चे ने क्या खाया क्या नहीं? इसकी चिंता में लगे रहना।

सच में एक माँ घर से बाहर, बच्चे से दूर कभी रिलेक्स नहीं रह सकती। घर पहुंचो तो बच्चे के टेढ़े-मेढ़े बाल, गलत ढंग से बंद हुआ शर्ट का बटन देखकर एक साथ बेहद खुशी और पीड़ा दोनों होती है, मुंह फिर भी कुछ नहीं बोलता बस आँखों को रोकना मुश्किल हो जाता है। बच्चे के सामने सब कुछ जब्त करके प्यारी मुस्कान देना एक माँ के ही बस का काम है।

बाहर से जितनी मजबूत अंदर से उतनी ही कमजोर होती है माँ। सुबह से छूटा हुआ बच्चा जब दौड़कर गले लगता है तो मानो सारी कायनात की खुशियाँ मिल गयी, फिर शायद वैसी खुशी, पैसा, सुकून, स्वर्ग में भी नहीं मिले। सारे दिन की भाग-दौड़ भूलकर उस पल ऐसा लगता है कि जैसे इस सुकून के लिए सदियाँ गुजर गयी।

कभी-कभी सोचती हूँ कि जेंट्स लोग इतने रिलेक्सड क्यों रहते हैं, क्योंकि परिवार और बच्चों की देखभाल में बहुत बड़ा हाथ स्त्रियों का होता है।

एक पुरुष आफिस से लौटता है तो कहीं चौराहे पर चाय पीते हुए अपने दोस्तों के साथ गप्पे मारता है फिर रात तक घर आता है। उसी जगह एक स्त्री अपने काम को खत्म करने के बाद सिर्फ और सिर्फ अपने घर अपने बच्चे के पास पहुँचती है। जबकि अच्छा उसे भी लगता है बाहर अपनी फ्रेंड्स के साथ गप-शप करते हुए चाय की चुस्की लेना, पर अपने बच्चे तक पहुँचने की बेताबी सारी दुनिया की खुशियों को एक ओर कर देती है।

मानती हूँ महिलाओं, लड़कियों को जॉब करना चाहिए, इससे कांफिडेंस आता है, पर सच है कि बहुत कुछ हाथ से जाता भी है।



में भी बदल गई.....माँ



सुश्री पूनम यादव

तुम सी हो गई हूँ अब मैं भी.....
माँ तुम "सिल्क" साडी महँगी कह छोड़ती
महंगे कप मेहमानों की खातिर सहेजती
हम लतीफे बना-बना तुम्हारी मितव्ययता के तुमको ही हँसाते
त्यौहारों पर नहीं देख कभी
सबके साथ फुर्सत में खुशियाँ मनाते
हमेशा रही तुम मसरुफ रसोई में
जाने क्या-क्या बंदोबस्त करती
तब अक्सर सोचती थी मैं
तुम नहीं जानती हो जिंदगी का स्वाद लेना
लेकिन अब महसूस कर पाती हूँ
"जिम्मेदारियों" के सुराख से
चुप सरक जाती है तमाम मसखरी
कभी वक्त निकाल कर सँवरते नहीं देखा तुमको,
मैं झुंझलाती थी सौ दफा तुम्हारी
हड़बड़ी भरी गड़बड़ियों पर
कैसे गर्म कढ़ाही से चटका लेती है
बुरे लगते हैं ये जले निशान हाथ पर,
एडियाँ फट जाती हैं आपकी
कुछ ख्याल किया करो।
सब्जी 'चोपर बोर्ड' पर नहीं काटती

उँगलियों पर चाकू की ये निशानियाँ
अच्छी नहीं लगती
बैन्टेक्स मत पहना करो
शर्मिदा करती तुम्हें तमाम लापरवाहियों पर
लेकिन अब खुद धुरी के केन्द्र में खड़ी होने के बाद समझने लगी हूँ
औरत खो देती है सुध-बुध, रूप, श्रृंगार, शौक और उम्र
'परिवार को आत्मा में धारण करते-करते।'
अब मैं जब गीले बाल से
रसोई में घुसती हूँ
तुम सी ही लगने लगती हूँ मैं
भगवान को ताली बजा नींद से उठाती
तुम सी जागती हूँ।
सारे पर्व रीति रिवाजों के प्रबंध करते गुजर जाते
रसोई, छत, आँगन में किसी और
दिन ढले थक कर डूबी-डूबी तुम सी दिखती हूँ
आँखों से पानी आने तक हँसी नहीं मैं कब से ऐसा याद आए तो
तुम सी फीकी-फीकी लगने लगती हूँ मैं माँ
कोई सहेली भी स्नेहिलता से भिगो दें जब मन को
लम्हा भर उसके प्रेम में भी तुम झलकती हो माँ
दूर होकर भी माँ कभी खुद में तो
कभी आत्मीय रिश्तों में तुमको टटोल ही लेती हूँ
मेरी "माँ"...



श्री कृष्ण जन्म (वसुदेव-यमुना संवाद)



श्री अंकित कुमार

वसुदेव:

घट जाओ जरा यमुना मईया, उस पार हमें अब जाना है
लालन का पालन करने को, गोकुल में इन्हे पहुंचाना है
है रात अंधेरी बिकट बड़ी, जल बरसत है अपरंपारा
बादल गरजे बिजली चमके, अब कोई नहीं चला चारा
चाहे जितनी हो कठिनाई, हमको ये कर्तव्य निभाना है (घट जाओ.....)

यमुना:

सुन लो वसुदेव मेरी वाणी, नहीं तुमको अब घबराना है
सब पार लगाए त्रिपुरारी, जो दिल में तुमने ठाना है
घबराओ मत अपने दिल में, कुछ बाल न बांका होवेगा
गर करुणानिधि रक्षक तेरे, तो कुछ भी कष्ट न होवेगा
सब पूरा काम तेरा होगा, जो दिल में तेरे समाना है (घट जाओ.....)

वसुदेव:

हे यमुना तेरे सहारे हूँ, अब मुझको पार लगा दे तू
मेरे बंधन सब कट जाएँ, गर मुझे सहारा दे दे तू
बच्चे का जीवन रखने को,
तुझको उस पार लगाना है (घट जाओ.....)

यमुना:

इस बच्चे के मैं चरण गहूँ, तब तुझको पार लगा दूँगी
छू लेने दो यह चरण मुझे, मैं सारा कष्ट मिटा दूँगी
यह पार लगइया खुद ही हैं, क्या उनको पार लगाऊँगी
जब चरण को छू लूँ लाला के, तो फौरन मैं घट जाऊँगी
जो कुछ भी जुबां से कह डाला, मुझको वह वचन निभाना है
घट जाओ जरा यमुना मईया, उस पार हमें अब जाना है



देवनागरी ध्वनिशास्त्र की
दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक
लिपि है।

रविशंकर शुक्ल

“अनुभव”



मा. नमन अरोरा

किसी गाँव में एक किसान पति-पत्नी रहते थे वे बहुत गरीब थे परन्तु जीवन के प्रति बहुत सकारात्मक थे एवं हमेशा भगवान का सिमरन करते रहते थे। कुछ समय बाद उनके यहाँ एक पुत्र का जन्म हुआ लेकिन उनकी बदकिस्मती से उसका एक हाथ नहीं था। दोनों बहुत उदास हुए लेकिन औलाद कोई ऐसी चीज़ तो नहीं जिसे फेंक दिया जाये या किसी को दे दिया जाए उन्होंने उसे भगवान की मर्ज़ी समझ कर स्वीकार कर लिया।

धीरे-धीरे वो बड़ा होने लगा उसके भविष्य के बारे में सोच-सोच कर उसके माता-पिता परेशान होने लगे क्योंकि वो अपना काम करने में भी असमर्थ था। फिर उन्होंने उसे अच्छी शिक्षा हेतु स्कूल में भर्ती करा दिया परन्तु उनका पुत्र पढ़ाई में भी अच्छा नहीं था वो दोनों बहुत दुःखी रहते थे लेकिन कहते हैं ना कि

“जिंदगी में दो मित्र अवश्य होने चाहिए” “एक कृष्ण जो न लड़े, फिर भी जीत पक्की कर दे। “ और दूसरा कर्ण जो हार सामने हो, फिर भी साथ न छोड़े”

कोशिश आखिरी सांस तक करनी चाहिए या तो “लक्ष्य” हासिल होगा या “अनुभव” चीजें दोनों ही अच्छी हैं।

फिर अचानक ही उनकी जिंदगी में एक मोड़ आया बच्चे को स्कूल में एक ऐसा अध्यापक मिला जिसने बच्चे के जीवन के प्रति रुख ही बदल दिया। उसको ऐसा इंसान बनाया जिसने अपनी जिंदगी में खूब तरक्की की बुलंदियों को छुआ और अपने माता-पिता का सपना भी साकार किया। हमें अपने जीवन में सकारात्मक विचार रखना चाहिए।

सलाम है तुम्हें मेरा



मा. प्रथम अरोरा

जो फ़ौज में भर्ती हुए, सलाम है तुम्हें मेरा
जिस वजह से लहराता है भारत का ये, झण्डा मेरा।
तेरे ही बदौलत है जो सुख से जीवन जीता देश मेरा,
है शुक्रिया तुझे मेरा, सलाम है तुम्हें मेरा,
सलाम है तुम्हें मेरा।

रख जान हथेली पे, तू खड़ा देश के लिए
गर्व मुझे तुझपे पे है, न बहे अश्रु तेरा।
इरादे मजबूत है, हौसला भी बुलंद तेरा,
दहाड़ दुश्मनों की सुन, तू उनको है पछाड़ता
सलाम है तुम्हें मेरा, सलाम है तुम्हें मेरा।

है डॉक्टर को भी सलाम मेरा,
जो मुश्किलों में भी लड़ रहा, कर रहा है सामना
रख जान अपनी दांव पर, वो देश को बचा रहा
डर है खुद की जान का, वो फिर भी अस्पताल जा रहा,
सलाम है तुम्हें मेरा, सलाम है तुम्हें मेरा।

वो वैक्सीन है बना रहा,
स्वयं को जोखिम में ला रहा।
परिवार से कटके वो, देश को बचा रहा,
गर्व होता है मुझे अपने देश के डॉक्टर्स पर
सलाम है तुम्हें मेरा, सलाम है तुम्हें मेरा ।

□□□□□□□□

‘वैश्विक महामारी कोविड-19 का मानव जीवन पर प्रभाव’



सुश्री संजना सोनी

कोविड-19 एक प्रकार के वायरस से फैलने वाली बीमारी है जो मानव के श्वसन तंत्र को प्रभावित करता है। यह सामान्य सर्दी, जुकाम एवं खांसी की तरह के लक्षण वाला बीमारी है। यह बीमारी एक मनुष्य से दूसरे मनुष्यों में खाँसने अथवा छींकने से फैलता है। यह बीमारी विश्व के लगभग 100 देशों में करीब एक करोड़ से ज्यादा लोगों में फैल चुका है इसलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने वैश्विक महामारी घोषित किया है। यह बीमारी दिन प्रतिदिन फैलती जा रही है। इस बीमारी का कोई सटीक इलाज अथवा दवाई उपलब्ध नहीं होने के कारण कई रोगी की मृत्यु भी हो चुकी है।

इस बीमारी की तात्कालिक रोकथाम के लिए चिकित्सकों ने लोगों को मास्क पहनने, सामाजिक दूरी बनाए रखने तथा रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के घरेलू नुस्खे अपनाने की सलाह दी है। प्रशासन ने भी इसकी रोकथाम के लिए कई प्रयास किए हैं। जिसमें ‘लॉकडाउन’ एक प्रमुख सफल प्रयास है। इसके कारण इस बीमारी को रोकने में काफी सफलता मिली है।

जहाँ तक इस बीमारी के प्रभाव की बात है, इस बीमारी के कारण मानव जीवन पर काफी बड़ा प्रभाव पड़ा है। मानव के दैनिक कार्यकलाप, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक गतिविधियाँ आदि प्रभावित हुए हैं। इसके साथ ही प्रकृति में भी बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है।

इस महामारी के फैलने से पूर्व मनुष्य स्वच्छता से विमुख हो गया था परंतु अब मनुष्य स्वच्छता के प्रति जागरूक हुआ है। प्रतिदिन योगाभ्यास करना, अपने शरीर एवं परिवेश/वातावरण की सफाई करना, प्राकृतिक संसाधनों का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करना आरंभ किया है। सामाजिक

गतिविधियां जैसे शादी-विवाह अथवा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम कम आयोजित करना अथवा इन आयोजनों में कम लोगों का उपस्थित होना। धार्मिक संस्थान एवं शैक्षणिक संस्थान इत्यादि बंद है। कार्यालय तथा औद्योगिक संस्थान भी बंद है, जिसके कारण लोग घर से कार्य कर रहे हैं। शिक्षण कार्य एवं अन्य कार्य डिजिटल माध्यम से करने लगे हैं। सड़कों, बाजारों आदि जगहों पर भीड़-भाड़ कम देखने को मिलता है। उद्योग धंधे बंद हैं, लोग बेरोजगार हो गए हैं। मजदूर शहर छोड़कर ग्रामीण क्षेत्रों की ओर पलायन कर गया है। रोजगार नहीं मिलने के कारण भूखमरी, चोरी, अपहरण आदि की समस्या बढ़ गयी है। पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था दयनीय हो गयी है। इस प्रकार मानव जीवन में एक नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है।

वहीं दूसरी तरफ नदियों, तालाबों का जल स्वच्छ हो गया है। वायु प्रदूषण तथा ध्वनि प्रदूषण में कमी आई है। वैश्विक तापमान में गिरावट आयी है। जो अन्य प्राणियों के लिए लाभप्रद है। जो एक प्रकार का सकारात्मक प्रभाव है।



**हिन्दी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक
है।**

डॉ सम्पूर्णानन्द

मनुष्य जीवन में गुरु का महत्व



श्री संतोष कुमार साह

गुरु शब्द 'गु' और 'रू' से मिलकर बना है। 'गु' का अर्थ अंधकार या अज्ञान होता है और 'रू' का अर्थ प्रकाश या ज्ञान होता है, अर्थात् अंधकार से प्रकाश की ओर या अज्ञानता से ज्ञान की ओर ले जाने वाले को गुरु कहते हैं।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

अर्थात् गुरु ब्रह्मा है गुरु विष्णु है गुरु महेश तथा गुरु ही पारब्रह्म (आदिशक्ति) है। ऐसे गुरु को प्रणाम। गुरु की पूजा में सारे जगत के देवी देवताओं की पूजा सम्मिलित होती है। जिस प्रकार पेड़ के जड़ में जल डालने से पेड़ के सभी अंगों में जल पहुँच जाता है ठीक उसी प्रकार गुरु की पूजा से है। गुरु को भगवान से भी पहले महत्व दिया गया है। इसलिए कवि रसखान ने कहा है-

'गुरु गोविंद दोऊ खड़े काको लागूँ पाँव,

बलिहारी गुरु आपनों गोविंद दियो बताय।

संसार में गुरु दो तरह के हैं। एक भौतिक शिक्षा देने वाला और दूसरा आध्यात्मिक शिक्षा देने वाला। भौतिक शिक्षा में मनुष्य जीविकोपार्जन की कला अर्थात् सामाजिक एवं आर्थिक जीवन जीने की शिक्षा प्राप्त करते हैं जबकि आध्यात्मिक शिक्षा में मनुष्य अध्यात्म की शिक्षा प्राप्त करते हैं। उदाहरणस्वरूप गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, महर्षि वेद व्यास, गुरु द्रोणाचार्य आदि जैसे महान गुरु हुए। इन्हीं गुरु की शिक्षा से भगवान 'राम' मर्यादा 'पुरुषोत्तम' कहलाए और गुरु द्रोणाचार्य की शिक्षा के कारण पांडव पुत्र 'अर्जुन' महान धनुर्धर कहलाए।

हम सभी के जीवन में गुरु का बड़ा महत्व है। क्योंकि मनुष्य जन्म से लेकर वृद्ध होने तक किसी न किसी व्यक्ति से सीखता है। बचपन में माता-पिता अथवा परिवार से बोलना, चलना, खाना आदि सीखाता है। उस समय वे लोग ही उनके गुरु होते हैं। बड़े होने पर जब वह स्कूल या कॉलेज जाने लगता है और वहाँ जो सिखाने वाला है वे भी गुरु होते हैं। मनुष्य गुरु से सीखकर महान बनता है। इसलिए कहा गया है गुरु बिना ज्ञान नहीं होता।

मनुष्य के जीवन में गुरु का महत्व अपरंपार है। गुरु, कुम्हार की तरह होते हैं। जिस प्रकार कुम्हार मिट्टी को रौंद कर अवांछित पदार्थ को दूर करके उस मिट्टी से सुंदर बर्तन या प्रतिमा बनाता है। उसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्यों के अवगुण को शिक्षा के माध्यम से दूर करता है और उत्तम शिक्षा प्रदान कर महान बनाता है।

गुरु के महत्व के बारे में वर्णन करते हुए महान संत कबीर दास ने लिखा है-

'सब धरती कागज करू, लेखन सब वनराय।

सात समुद्र मसि करू, गुरु गुण लिखा ना जाय।।

अर्थात् पूरे धरातल को कागज बनाया जाय, सारे संसार के वनों को लेखनी (कलम) बनाया जाय, सातों महासागरों के जल से स्याही बनाकर गुरु की महिमा का वर्णन किया जाय तो भी वर्णन करना असंभव है।

मनुष्य के जीवन में यदि गुरु मिल जाये तो उसका जीवन महान हो जाता है। कुख्यात डाकू अंगुलीमाल, डाकू रत्नाकर और महामूर्ख कालिदास इसका उदाहरण हैं जो गुरु से ज्ञान पाकर महान बौद्ध भिक्षुक बने, रत्नाकर डाकू को आज महर्षि बाल्मीकी के रूप में महान ऋषि एवं रामायण के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हुए और महामूर्ख कालिदास संस्कृत के महान पंडित, लेखक एवं नाटककार के रूप में जाने जाते हैं।

अतः मनुष्य के जीवन में गुरु का बड़ा महत्व है।



कमाल के हैं जीजा जी



श्री नरेन्द्र सिंह चौहान

आम परिवारों में जीजा की एक अलग ही छवी रहती है। यहाँ फूफा भी उन्हीं का अवतार है उनकी खास छवि कई बर्षों-बरस पारस्परिक व्यवहार से बनी है। जैसे संसद में लोक सभा अध्यक्ष की। उनका राशि नाम जमाने भर में या कहिए पीठ-पीछे कितनी ही बेअदबी से लिया जा रहा हो, रिश्ते से पुकारा जाए तो माननीय जैसे जुमले का मोहताज न होगा।

जीजा के रूप में संबोधित होते ही उनका आत्मविश्वास टूटे हुए कांच के सामान जैसा जुड़ जाता है। लालटेन की चिमनी अचानक बिजली का बल्ब बन जाती है इस सम्मानजनक संबोधन के प्रभाव से उनका दबा-ढका प्रमाद छलांग लगाकर बाहर आ जाता है। वो पटवारी साले के लिए तहसीलदार, मास्टर के लिए प्रधानाचार्य, दुकानदार के लिए इंस्पेक्टर, विद्यार्थी के लिए गणितज्ञ या साले की क्लास में जब थे, तबके ब्रिलियंट बन जाते हैं।

हमने कभी कुंजी का सहारा नहीं लिया डीयर, जो मास्टर के मुख से निकला बुद्धी में टेप रिकार्ड हो गया और जस का तस परीक्षा में पेल दिया। अगर जीजा का साला बारम्बार फेल हो रहा हो या बेरोजगार की श्रेणी में पदार्पण कर चुका हो तो जीजा के हास परिहास में शोखी और संजीदगी का अनोखा मेल देखा जा सकता है। सांत्वना देना चाहे तो कह सकते हैं- कुंभ का मेला जो बारह बरस बाद आयेगा मेहनत करेगा तो अगले एक-दो साल में निकल जाएगा।

जो गम्भीर दिखना है चाहे तो कहेंगे- कि आजकल नौकरी कहाँ है जो मिल जाएगी। तू कुछ टेक्नीकल काम सीख ले तो कहीं फिट हो जाएगा। अपनी

काउंसेलिंग को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए वह ठंडी हो रही चाय को अपनी पत्नी से दुबारा गर्म करने के लिए कहते हैं। कप उठाकर जाती पत्नी की चाल में तेजी को भांपते हुए तुरूप का पता मारते हैं- तेरी दीदी के पास आकर परमानंद की औरत रोज पें-पें करती थी, उनसे कहके लड़के को कहीं लगवा दो। मैंने एक दिन ऐसे ही कह दिया, उसको कम्प्यूटर कोर्स क्यों नहीं करवा देते, आज वहीं झेंपू लड़का सोनी के इंस्टीट्यूट में टाइप सिखा रहा है और देखना वैकेंसी आते ही उत्तराखण्ड सचिवालय में लग जाएगा।

जीजा को अधिकतर वो बातें पता होती हैं जो शायद नीति आयोग को भी पता नहीं होती हो। उनकी उपजाऊ बुद्धि में कुछ ऐसे नुक्ते अटक कर रह जाते हैं जो कालांतर में विकसित हो, अकलटप्पू होने के बावजूद उनके श्री मुख से बड़े प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त होते हैं- देखते जाओ, यही पायलेट एक दिन कांग्रेस की गोद में बैठकर बीजेपी का जहाज़ उड़ा ले जाएगा।

साथ ही वह हस्तरेखा विज्ञान, ज्योतिष और न्यूमरोलॉजी में या इनमें से किसी एक में अच्छा दखल रखते हैं। परन्तु ससुराल में इन विधाओं का कोई विशेषज्ञ हो तो, वह गीता व्याख्यायित कर्म के सिद्धांत पर अटल विश्वास रखने वाले बन जाते हैं- भाग्य-साग्य कुछ नहीं होता, सब ठग विद्या है, लड़कियों का हाथ पकड़ने के बहाने हैं।

कभी-कभी तो बहुत ही भयंकर कम्युनिस्ट टाइप आदमी होने का ऐलान कर देते हैं- हमने मंदिर में शिवजी के नन्दी की पीठ पर बैठकर चारमीनार सिगरट पी है।

राजनीति में वह सोनिया के मायके, मोदी के ससुराल, योगी के मालकोट और केजरीवाल के अंदरखाने की ऐसी खबरे रखते हैं जो यदि रजत शर्मा के पास होती तो इंडिया टीवी पर 'आपकी अदालत' का हिस्सा बन जाती। जीजा इन खबरों को स्रोत कभी रिवील नहीं करते क्योंकि अपने मुखबिरो के प्रति वह बचनवद्ध हैं, वस्तुतः स्वयं के प्रति यह अलग बात है कि उनकी ज्यादातर बातों पर ससुराल

वाले विश्वास नहीं करते, हमदर्दी हासिल करने को जीजा जीवन के उस वाक्य को सुना सकते हैं जब उनका रक्तचाप दो सौ बटे डेढ़ सौ या बुखार 108 डिग्री हो गया था। ससुरालिये भी उनकी कहानियों पर यकीन करते दिखना चाहते हैं जिससे उनका ससुराल प्रवास दोनों पक्षों के लिए औसॉणमुक्त (सुखमय) बना रह सके।

लेकिन ऐसा सदा संभव नहीं होता। जीजा कभी-कभी बिना बात के गमगमे या मकमके (मुंह फुलाये) हो जाते हैं और शाम तक गमगमे बने रहते हैं। ससुरालिये कारण जानना चाहते हैं। वह अपनी लड़की से दरियाफ्त करते हैं- क्यों आज....?

वह बताती है- कुछ खास नहीं है इनका मूड किसी दिन ऐसा हो जाता है, रात ठीक हो जाएंगे। सालियां ठिठोली करती हैं- जीजा रात को चावल मत खाया करो मूख ओसा जाता है। पत्नी उलाहना देती है- (ऐसा मुंह बनाये हो मानो मधुमक्खी ने काट कर सुजा दिया हो।)

पर वह कोई जबाव नहीं देते। दरअसल रात को बोनी स्कॉट की चुस्की लगाकर जीजा बहक गये थे। ज्यादा बातोले मारने से उनकी कुछ पोल खुल गई। उन्होंने शेखी बघारते हुए कह दिया कि अपने बाँस को उन्होंने कस कर थप्पड़ मार दिया और बात बढ़ी तो बुरी तरह पीट दिया। बात इतनी थी कि साहब ने उनसे तू कह दिया था। पर श्रोताओं में से किसी ने पूछ लिया -साहब ने आपको नौकरी से सस्पेंड क्यों नहीं करा होगा? जीजा ने ऐसा करने की हिम्मत रखने वाले काल्पनिक साहब की मॉ-बहिन कर दी, शब्दावली से कुछ सालियों आदि सन्न रह गईं। एक तो उठ कर चली भी गई। बाद में आ भी गई।

जीजा चाहते थे कि उनकी मर्दानगी का लोहा मानते हुए ससुराल की मक्खी भी न भिनभिनाएं, अगर कोई प्रश्न हो भी तो प्रसून जोशी द्वारा मोदी जी से पूछे गए सवाल के जैसा हो- अस्पताल ले जाना पड़ा होगा उसे तो सर?

अपना ही पागलपन उन पर ऐसा असर छोड़ गया कि वह गमगमें हो गये। पश्चाताप हो रहा है। वह खुद से खफा हैं। चूंकि वह जीजा हैं, सयाने जैसे हैं रात

की लौंडियोली को गंभीरता की चादर से ढक देना चाहते हैं। इतना ही नहीं, वह जताना नहीं चाहते कि रात उनको चढ़ गई थी। वह कभी कह चुके थे कि उनको शराब से नशा नहीं होता। आज उन्हें लोग अपनी हुकम -अदूली करते लग रहे हैं। उन्हें कोई सयाने की तरह ट्रीट नहीं कर रहा। उनकी पत्नी भी थोड़ी लापरवाह दिख रही है।

अखबार को आए घंटा भर हो गया पर तीसरी चाय के साथ उनको डिलीवर नहीं हुआ। यह सब बातें स्वाभाविक है किन्तु जीजा को लग रहा है कि यह ससुराल में उनकी घटती इज्जत का परिणाम है। वह किसी भी कीमत पर अपना पुराना मुकाम हासिल करना चाहते हैं।

अखबार परोसती पत्नी को अखिकार उन्होंने गमगमे होने का मानो कारण बताते हुए कहा- गैस्ट्रीक जैसा हो रहा है, सौभाग्य से उसी समय उनकी पूं भी निकल गई। बगल वाले कमरे से खिल-खिलाहट की आवाज से माहौल हल्का हो गया और जीजा का मन और शायद पेट भी, पत्नी भी मुस्कराए बिना नहीं रह सकी, हालांकि वह बड़े-बड़े विस्फोटों की गवाह थी। फिर जीजा अजवाइन, हींग, काला नमक, गरम पानी से घुटक कर मुस्कुराने लगे। ऊंची आवाज में, सारी भद्रता को समेटते हुए जोक जैसा मारा- उस तरफ बड़े लड्डू फूट रहे हैं? जवाब मिला मिला उस तरफ बम छूट रहे हैं। ऐसे में जीजा अपने हंसोड़ होने के इम्प्रेशन को द्विगुणित करना नहीं भूलते और बात को खींचते चले जाते हैं।

जहाँ तक खिंचाई का प्रश्न है जीजा लोगों का तो वे कलेवर में परवान चढ़ाता है। वह खिंचाई या मजाक की आड़ में अपने रोमांटिक व्यक्तित्व का प्रदर्शन करते हैं। जिस प्रकार के प्राणी अजीब सी हरकतें कर मादाओं को रिझाने की कोशिश करते हैं वैसे ही जीजा अपनी सीमाओं में मर्यादाओं के फंदे में फंसे-फंसे, सालियों उनकी सहेलियों आदि पर खिंचाई नामक शास्त्र का प्रयोग करते हैं। इस शास्त्र की विशेषता यह है कि इसके असर से सब लोक वाकिफ है पत्नियां भी सालियां भी इसी मारक क्षमता का जीजा को भी आभास है। मध्यम तेज गति के

गेंदबाज की बाउंसर की तरह यह चौंकाने का माद्दा तो रखती है पर विकेट नहीं ले पाती है इसके कुछ नमूने देखें।

एक छरहरी साली को देखकर जीजा- ये आलुओं के खेत में भिण्डी कहां से आई?

जवाब- आप अपने गोबी के फूल का ध्यान धरें, ही-हीं।

जीजा- आप लोगों की दीदी हॉ कहे तो हम एक और ले जाएँ?

जवाब- आलू या भिण्डी?

जीजा - कोई भी चलेगी

कई जीजा वापस घर जाकर इस खिंचाई में नमक-मिर्च लगाकर अपने दोस्तों को बताते पाए गये हैं- क्या बताऊँ यार लौंडिया बड़ी तेज, मैंने कहा बेटा जवाब लग गया तो जिंदगी भर का हो जाएगा, अगल-बगल देखा और एक को आंख मार दी, मुँह से कुछ नहीं। वह उठकर चल दी, साथ में दूसरी छप्पन छुरी को भी ले गई।

श्रोता गर्दन हिलाते हैं, कोई ईष्या का भाव नहीं दिखता क्योंकि दोस्तों को भी पता है कि खिंचाई कितना निरीह हथियार है! वह खुद भी जीजा हैं या बनेंगे, इसलिए मुठ्ठी के बंद रहने में ही भलाई समझते हैं।

ऐसा नहीं कि जीजा की भूमिका सदा हल्की-फुल्की ही हो, ससुराल के कई महत्वपूर्ण मसलों पर उनकी राय ली जाती है। कई बार ये मामले इतने गंभीर होते हैं कि सम्मान बनाये रखने को ही उन्हें अपनी एफडी तुड़ानी पड़ती है। घर-वर के चयन में निर्णायक स्वीकारोक्ति या ना-नकुर सम्प्रेषित करनी पड़ती है। ऐसे कई अवसरों पर भूमिका निर्वाह के बाद जीजा तेज पत्नी की चाय या विल्स फिल्टर की सिगरेट पीना पसन्द करते हैं। इस समय उनके श्रीमुख की आभा कम वोल्टेज पर जल रहे सौ वाट के बल्ब जैसे होती है। परोपकार की संतुष्टि नाक की टुक्की से टपकने की उदयत देखी जा सकती है। उन्हें अन्दर से पता होता है कि उनकी भूमिका परम्परागत है किन्तु प्रकट में वह अपनी बुद्धिमता, अनुभव और चातुर्य

को इसके नम्बर दे रहे होते हैं। फलां की मंगनी के वक्त तीन साल पहले उन्होंने साफ-साफ कह दिया था कि लड़के में अवश्य कोई खोट है लड़का शराबी निकला। आटा चक्की लगाने के लिए उनके साढ़ू ने उनसे परामर्श किया था उन्होंने कहा लोहे का काम सबको नहीं फलता, फिर भी आप देख लें। आटा चक्की छः महीने में किराये पर उठानी पड़ी। यह दीगर की बात है कि साढ़ू का गल्ले का काम चमक गया। इस प्रकार की पेशेवर क्रियाओं में जीजा को औरतों का दखल बिलकुल पसंद नहीं होता। उनका मानना है कि स्त्रियां अपना व्यक्तिगत एंगिल घुसेड़कर भांडी सी मार देती हैं। उदाहरण के लिए एक साले का अच्छा रिश्ता बनते-बनते इसलिए रह गया कि उनकी पत्नी को उस परिवार के ओच्छयाट (दिखावे) की बू आ गई। यह बू उनके गहनों से आ रही थी।

बदलते समय की बलिहारी जीजा अब ब्रदर इन लॉ, बेटा आदि संबोधनों से नवाजे जा रहे हैं। इसके पीछे सालों की बरसों से दबी भावनाएं और ससुरों को अपनी लड़कियों को कान्वेंट शिक्षा दिलाकर की गई शादी का दर्प छुपा हुआ है। वह जीजा की छवि से घबराए हुए भी हैं, अंग्रेजी नाम देकर यह रिश्ता थोड़ा आधुनिक रूप धारण कर लेगा जिसके फलस्वरूप जवाईं अपने को बेटा समझ कर कुछ मुरव्वत का भाव दिखाएगा।

मैं अपने इस लेख द्वारा सारे जीजाओं को आगाह करना चाहता हूँ कि आपके खिलाफ साजिश चल रही है, जिसमें विदेशी शब्दों का सहारा लिया जा रहा है, पर आप याद करें आप में अड़ियल बने रहने की जन्मजात योग्यता है। आप हरगिज इस फंदे में न आएं यह कहना तो नहीं चाहिए पर आपको कसम पहले प्यार की, (हां वहीं मकर राशि वाली) अपने को जीजा या जवाईं यूं ही संबोधित करवाएं। आप कैसे भूल सकते हैं कि उनके घर की लड़की आपके घर में है।

यहाँ आपको एक अन्दर की बात भी बता दूँ, खुद उनके घरों में एक बटा चार सदस्य जीजा शब्द से और उस असली पारंपरिक छवि से कोई परहेज नहीं करते क्योंकि वह भी आपकी नाव में सवार हैं। अगर आपने स्टैण्ड ले लिया, दिल

पक्का कर लिया, बहकने से बच जाएंगे और जब तक संभव हो जीजा बने रहेंगे। दूसरी बात शादी के बाद आपने सर्वदा उनका मान रखा है, जब बस की रोड़ बंद थी तब भी तो आप पैदल गये है, आपका पेट खराब था तब भी आपने पूड़ियां खाई है। नामकरण से लेकर शादी का कोई फंक्शन आपने नहीं छोड़ा। खाली हाथ कभी गये नहीं। आपके लिए बर्फी के डिब्बों में आज भी, आपकी सास ने सुई-धागा, बटन, नाड़े इत्यादि सहेज कर रखे हैं। रात-अधरात आपने राय दी है, पत्नी के एसटीडी के बिल चुकाये है, और जेटू के लड़के का फार्म अंग्रेजी में भरवाया है।

यहाँ यह भी कह दूँ कि मुझे बहुत सी बातें पता नहीं होंगी लेकिन इतना निश्चित तौर पर जानता हूँ कि वो आपके अहसानों के बोझ से दबे हुए हैं। पूरी तरह नहीं तो एक बटा तीन अवश्य ही, और इतना कम नहीं होता। दूसरी ओर आप मांग क्या रहे हैं? आपने कभी कुछ मांगा जो आज मांगेंगे? आप केवल एक संबोधन को जिंदा रखने का प्रयास कर रहे हैं एक संबोधन जिससे हमारी संस्कृति की जड़ें जुड़ी हुई हैं। कल्पना करें कितना रसविहीन न्यू इंडिया होगा जिसमें रामराज्य विजन के अनुरूप तरक्की करता भारत होगा, ब्रदर-इन लॉ होंगे, सन-इन लॉ होंगे परन्तु जीजा नहीं होगा।

*** * * * ***

**राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में
लाना देश की एकता और उन्नति के
लिए आवश्यक है।**

महात्मा गांधी

ज्ञानी



श्री एन.के.शर्मा

वर्ष 1955 में दिल्ली के परिवार में इन महाशय का जन्म हुआ। माता-पिता ने बड़े प्यार से इनका नाम रखा- ज्ञान सिंह। जब ज्ञान सिंह धीरे-धीरे बड़े हुए तो पता चला कि ज्ञान तो इनसे कोसों दूर था। फिर भी प्यार से सभी इन्हें ज्ञानी बुलाते थे। कैसा विचित्र संयोग है अगर किसी बच्चे का नाम अमीर चन्द रखा जाए तो बड़ा होकर बच्चा महा दरिद्र बनता है। लेकिन बच्चे का नाम फकीर चन्द रखा जाए तो बच्चा बड़ा होकर धन्ना सेठ बन जाता है। हमारे ज्ञानी जी भी अपने नाम के विपरीत थे।

हर कक्षा में दो-दो साल फेल हो गये। चौथी कक्षा में फेल होने के बाद 1968 में ज्ञानी हमारी कक्षा में आ गये। चौदह बरस के लम्बे चौड़े ज्ञानी छोटे-छोटे मुर्गों में अलग से शत्रुमुर्ग की तरह नजर आता था। अब ज्ञानी ने ऐलान कर दिया कि चौथी कक्षा तो उनसे इस जन्म में पास न होगी। लिहाजा लाख समझाने, मिन्नतें करने और जोर जबरदस्ती करने के बावजूद ज्ञानी ने स्कूल से हमेशा के लिए मुँह मोड़ लिया।

स्कूल से मुह मोड़ने का परिणाम, आवारा लड़कों के साथ मटर गश्ती करना और जानवरों के साथ भी बिना वजह पंगें लेना उनकी दिनचर्या थी। धीरे-धीरे चार साल बीत गये जानवरों पर जुल्म करने का उनका शौक बरकरार था। जानवर भी जुल्म कब तक सहन करते। एक सीमा होती है। मोहल्ले के कुत्तों में से एक दुबला पतला कुत्ता, नाम कालू, उसने ज्ञानी से बदला लेने की ठान ली। इस बार जब ज्ञानी ने कालू से पंगा लिया तो कालू ने भी चुपचाप पीछे से आकर ज्ञानी के सीधे पैर में बुरी तरह से काट खाया। मरहम पट्टी के लिए सरकारी अस्पताल में

जाना पड़ा। कम्पाउंडर ने मरहम पट्टी करके बताया कि “चौदह इंजेक्शन लगेंगे। अभी स्टॉक में नहीं है। तीन दिन बाद आ जाना।”

चौदह इंजेक्शन की बात सुनकर ज्ञानी का खून खौला गया। एक ही इंजेक्शन से ज्ञानी का बुरा हाल हो जाता था। चौदह इंजेक्शन। ज्ञानी की डर के मारे रूह कॉप गई। बदला! उसी रात ज्ञानी ने कालू को यमलोक पहुंचा दिया। अगली सुबह ज्ञानी ने अपनी वीरगाथा हम सब साथियों को जोर-जोर से हंस कर सुनाई- “मैंने लाठी लेकर कालू का पीछा किया। कालू दाएं तो मैं दाएं कालू बायें तो मैं बायें। कालू तेजी से दौड़कर आगे तो मैं भी दौड़कर उससे भी आगे। बस एक जगह उसको घेर कर उसके सिर पर लाठी मारी। बस-कालू ढेर।”

अठारह बरस की उम्र में ही ज्ञानी के सिर के सारे बाल सफा चट हो गये थे। बस कानों और गर्दन के ऊपर के कुछ बाल छोड़कर। ऊपर और नीचे जबड़े के सामने के दांत कुछ ज्यादा ही लम्बे थे। उनका जोर-जोर से हंसकर अपनी वीरगाथा सुनाना हम सब को डर का अहसास करा रहा था।

तीसरे दिन सरकारी अस्पताल पहुँचे। सरकारी डाक्टर साहब ने एक इंजेक्शन लगा कर कहा “चौदह इंजेक्शन का कोर्स करना जरूरी है दस दिन कुत्ते को वाच कीजिए। अगर कुत्ता पागल है तो दस दिन के बीच मर जाएगा। फिर कुछ और इलाज चलेगा।” डाक्टर की बात सुनकर ज्ञानी पर तो कुछ असर नहीं हुआ। लेकिन उसके पिताजी सिर पकड़कर बैठ गये। “कुत्ते को कहाँ जाकर वाच करें यमलोक जाकर”?

सरकारी नक्शे के मुताबिक मोहल्ले के बीच में एक 500 वर्ग गज का पार्क था। एक गुण्डे मक्वाली ने इस पार्क पर कब्जा कर आधे पार्क में मकान बनाकर किराये पर चढ़ा दिया था। आधे पार्क में तीन फीट ऊँची गारा मिट्टी की चिनाई करके चार दीवारी बनवा दी थी। मोहल्ले के बच्चे खेलने के लिए कहाँ जाएं। बच्चों ने चार दीवारी की कुछ ईंटें निकालकर अन्दर जाने का रास्ता बना लिया था। अन्दर हरी-हरी घास, साफ सुधरी जगह थी खेलने के लिए। मोहल्ले की किसी

औरत ने इस पार्क में एक तीन लीटर की मिट्टी की हँडिया फेंक दी। हम दोस्तों के लिए तो यह अलादीन के चिराग के माफिक थी। मीटिंग हुई, मीटिंग में मुद्दा पास हुआ कि हँडिया में चाय बनाई जाएगी। लेकिन चाय बनेगी कैसे इसका हल निकाला गया। चार लड़के अपने-अपने घरों से चार-चार चम्मच चीनी पुडिया में लाएँगे। दो लड़के दो-दो चम्मच चाय पत्ती लाएँगे। लकड़ियां, उपले, कैरोसीन तेल और माचिस का इन्तजाम सब मिल-जुल कर करेंगे। दूध का इन्तजाम कोई नहीं करेगा अंग्रेजों की तरह सब ब्लैक टी पीएँगे।

तीन ईंटों का चूल्हा बनाया गया। आग जलाकर हँडिया को धोकर पानी भर कर चाय की पत्ती और चीनी डाल दी गई। हम सब बैठकर चाय बनने का इन्तजार कर रहे थे। आधे घण्टे बाद तो हँडिया गर्म हुई। सब उस औरत को कोस रहे थे- “कम्बख्त औरत, हँडिया फेंकी थी तो ढक्कन भी फेंक देती।” पौना घण्टा बाद चाय में कुछ बुलबुले नजर आने लगे। सबके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।

उसी समय पता नहीं कहाँ से ज्ञानी वहाँ प्रकट हो गये। पार्क की दीवार पर खड़े होकर उसने पूछा “अबे तुम सब क्या कर रहे हो”। हम सब ने एक आज में जवाब दिया- “ज्ञानी भईया हम सब चाय बना रहे हैं। पार्टी मना रहे हैं”, ज्ञानी ने चार दीवारी से एक ईंट आसानी से निकाल कर कहा- “तुम सब को मैं अभी चाय पिलाता हूँ।” यह कह कर ज्ञानी ने निशाना लगाकर हँडिया पर जोर से ईंट फेंक दी। ईश्वर की महिमा भी बड़ी अजीब है। पागलों या अपाहिजों को ईश्वर एक दिव्य और तेज शक्ति अवश्य देता है। देखने, सुनने, बोलने, भागने या सही निशाना लगाने की शक्ति। ईंट ठीक हँडिया पर लगी, हँडिया फूट गई। चाय जलती हुई लकड़ियों पर गिरी, आग बुझ गई। हम सब ज्ञानी को गन्दी-गन्दी गालियाँ बक रहे थे। ज्ञानी आधा पागल तो था ही अब पूरे पागल की तरह जोर-जोर से हँस रहा था।

6-7 साल बीत गये। ज़ानी के दो बड़े भाईयों ने सरकारी सेवा आरम्भ कर दी। ज़ानी की छोटी बहिन भी सरकारी स्कूल में अध्यापिका बन गई। इन सब की शादियाँ भी हो गई। रह गये ज़ानी और एक छोटा भाई। छोटे भाई ने भी बैंक में नौकरी कर ली।

ज़ानी की माँ ने ज़ानी की शादी की जिद ठान ली। माँ ने साफ कह दिया सबसे छोटे भाई की शादी ज़ानी के बाद होगी। लिहाजा ज़ानी की शादी के रिश्तों की तलाश शुरू हो गई। तीस से ज्यादा लड़की वालों ने ज़ानी का अनपढ़, बेरोजगार और उस पर आधा पागलपन की वजह से इनकार कर दिया। आखिरकार एक गरीब परिवार की लड़की से रिश्ता पक्का हुआ और शादी भी हो गई।

नई बहु रूपमति होने के साथ-साथ घर के कामों में भी बड़ी सुघड़ थी। शादी के छः महीने अच्छे गुजरे। फिर धीरे-धीरे सब कुछ डगमगाने लगा। नई बहु की सारी ईच्छायें अधूरी रहने लगी।

शादी को एक साल बीत चुका था। घर के सभी बेटे काम पर चले जाते थे। घर में रह जाती थी दो जेठानियाँ और सास। जून का महीना था, छोटी बहु सब काम निपटा कर सवेरे 10-11 बजे के बीच रसोई में जाकर अन्दर से कुण्डी लगा कर हमामदस्ते में कुछ कूटना शुरू कर देती थी। सबने यही सोचा कि छोटी बहु लाल मिर्च या गरम मसाला कूट रही होगी। लेकिन लगातार 6-7 दिन तक रसोई के अन्दर कुण्डी लगाना वो भी जून की तपती गर्मी में मिर्च-मसाला कूटना शक का कारण बना।

कुण्डी खुलवा कर जब सारा नजारा देखा तो सभी दंग रह गये। छोटी बहु इमामदस्ते में काँच कूट-कूट कर उससे छननी और दुपट्टे में छानकर महीन पाउडर बनाकर एक जार में इकट्ठा कर रही थी। सीधी तरह से तो छोटी बहु ने सच बताना नहीं था। उसकी जमकर पिटाई होने और पुलिस बुलाने की धमकी पर सच उगला। छोटी बहु ज़ानी के साथ खुश नहीं थी। पड़ोसी के मदनलाल से आंख मटक्का शुरू हो गया था। मदनलाल ने तरकीब सुझाई थी कि बारीक काँच पीसकर

छानकर आटे में गूंद कर किसी रात सबको खाना खिला दो। सभी परिवार के सदस्य रात को ही तड़पकर मर जाएंगे। फिर घर से सारे जेवर और रुपये लेकर दोनों किसी दूसरे शहर भाग जाएंगे।

सच्चाई का पता लगने पर मोहल्ले वालों ने मदनलाल की जमकर पिटाई की। मदनलाल अकेला ही किराये पर रहता था। पुलिस रिपोर्ट होने से पहले ही मौका पाकर भाग गया। छोटी बहु को हमेशा के लिए मायका भेज दिया गया।

शिक्षा:- एक हजार परिवारों में किसी एक परिवार में ज्ञानी जैसे सदस्य का जन्म ले लेना स्वाभाविक है।

सावधान: ऐसे व्यक्ति की शादी हरगिज न करें।

कारण:- (1) एक लड़की का जीवन बर्बाद हाने से बच जाएगा। (2) पूरे परिवार या किसी एक या दो सदस्यों की जान को होने वाला खतरा टल जाएगा।



{ भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिन्दी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।
अमित शाह (गृह मंत्री) }

भावनाओं से जुड़ा है- स्वास्थ्य



सुश्री ज्योती माथुर

आयुर्वेद का यह सिद्धान्त कि 'मन की विकृति से शरीर की विकृति होती है'। अर्वाचीन चिकित्साविज्ञान भी इन दिनों इसे मुक्त-कंठ से स्वीकार करने लगे हैं। उल्लेखनीय पहलू यह है कि मानसिक विकृति से हमारे शरीर की सन्तुलित अवस्था में होने वाली विविध क्रियाओं में विषमता आ जाती है तथा रोगों की उत्पत्ति करने वाले जीवाणुओं से प्रतिकारक की शक्ति भी न्यून हो जाती है। थाइरॉइड, पिट्यूटरी एवं एड्रीनल नामक अंतः स्रावी ग्रंथियों को बेहद हानि पहुंचती है। रोग प्रतिरोधक क्षमता में गिरावट आने से हृदय, मस्तिष्क इत्यादि मर्म-अवयवों के नैसर्गिक स्वरूप में भी परिवर्तन आने लगता है। उल्टी, अल्सर, पेट का कैंसर, अल्सरेटिव-कोलायटिस, म्यूकस कोलायटिस, दंत-क्षय, ट्यूबरकलोसिस, मधुमेह, आर्थराइटिस, हृदयाघात इत्यादि रोग हमारे मन की अतल-गहराईयों में दबी हुई चिंताओं के कारण होते हैं। रोचक बात यह है कि शारीरिक बीमारियों का उपचार दवाईयों से किया जा सकता है, किन्तु जिन बीमारियों की उत्पत्ति में मन की भूमिका होती है, उन पर दवाईयों का असर कम होता है।

आयुर्वेद कहता है कि आसक्ति के तीव्र वेग से हमारे शरीर में 'वायु' नामक दोष हो जाता है तथा मोह के तीव्र आवेग से पित्त-दोष दूषित हो जाता है। 'तम' के तीव्र संवेग से जड़ता पैदा हो जाती है और जब जड़ता पैदा हो जाती है तो मन में अशुद्धि आ जाती है। राग आदि से दूषित मन अनेकानेक रोगों का कारण बन जाता है। तन और मन एक ही ऊर्जा से संचालित होते हैं। चिंता, क्रोध इत्यादि मनोभावों से तन एवं मन की ऊर्जा का विनाश होता है। जब हम क्रोधित होते हैं

तो हमारे शरीर में पित्तदोष असंतुलित हो जाता है। यह असंतुलित पित्त अनेक रोगों का जनक है। अत्यधिक शोक (दुःख में निमग्न रहना) अतिसार (दस्त) रोग पैदा हो जाता है। अत्यधिक लालच (लोभ) की प्रवृत्ति से शरीर में 'कफ' नामक दोष असंतुलित होने लगाता है।

भावनाएं अनेक रोगों की जननी हैं। मैन्स प्रिम्पशेस ब्रेन नामक ग्रंथ के प्रणेता डॉक्टर, साइमन्स ने अपने सतत् अनुसंधानों के उपरांत निष्कर्ष निकाला है कि अनेकानेक रोगी मानसिक कारणों से रूग्ण होते हैं और उनकी चिकित्सा औषधियों या शल्य-क्रिया द्वारा संभव नहीं होती है उनका कष्ट-निवारण तभी संभव है, जब उनकी मानसिक व्यवस्थाओं और दुविधाओं का निराकरण हो सके। मस्तिष्क में आने वाली प्रत्येक भावना शरीर के जैव-रसायनों को अवश्य ही प्रभावित करती है। रोगों के भावनाओं से संबंध को इस प्रकार समझा जा सकता है:

- फेफड़ों के रोग- क्रोधी तथा चिडचिड़े स्वभाव वाले इनसे पीड़ित होते हैं।
- हृदय के रोग- स्वार्थी एवं दूसरों का बुरा सोचने की भावना से पैदा होते हैं।
- यकृत में शोथ (सूजन)- जिस व्यक्ति को तत्काल आवेश आ जाता है, उनमें यह विकार पैदा होता है।
- रक्त विकार- स्वभाव में कठोर एवं दूसरों पर अत्याचार करने की भावना से यह विकार पैदा होता है।
- अनिद्रा- अविश्वास (दूसरों पर कम भरोसा करना) की भावना पैदा होती है।
- पीठ दर्द- आर्थिक दशा खराब होने के डर की भावना से यह विकार पैदा होता है।
- कब्ज- अतीत की परेशानियां कब्ज पैदा करती हैं।
- एग्जिमा- क्रोध को अनवरत दबाते रहने से यह रोग पैदा होता है।
- माइग्रेन- यह विकार सृजनात्मकता को दबाने से होता है।
- शय्या मूत्र- भय की भावना के कारण बच्चे बिस्तर गीला करते हैं।

- बार-बार बीमार पड़ना- भय ही कारण है। इससे शरीर की रोगों से लड़ने की क्षमता में गिरावट आने लगती है।
- गुर्दे के रोग- जीभ के लालची लोगों को यह रोग होता है। सदमे से भी गुर्दे के रोग होते हैं।
- नजला जुकाम- दूसरों से नफरत करने की भावना से यह रोग पैदा होता है।
- दमा (अस्थमा)- भीतर ही भीतर घुटने वाले, अपनी मन की व्यथा किसी से न कह सकने वाले लोगों को बहुधा दमा (श्वास फूलना, फेफड़ों की जलन, प्लूरिसी इत्यादि विकार पैदा हो जाते हैं।
- गठिया:- दामपत्य-जीवन में कलह की भावना से यह रोग पैदा होता है।

उल्लेखनीय है कि उक्त रोगियों की मानसिक उलझनें जब तक हल नहीं होंगी तब तक उत्तम से उत्तम चिकित्सा भी व्यर्थ ही साबित होगी। बहुधा दवाएं बहुत सारे रोगों पर असफल हो जाती हैं जब मन विचलित होता है, तो शरीर अवश्य ही प्रभावित होता है और अवसर के अनुसार रोगोत्पत्ति हो जाती है। मनोभावों के बार-बार प्रस्तुत होने से अनेक प्रकार के मनोदैहिक (सायकोसोमेटिक) विकार पैदा होने लगते हैं। यहाँ पर कहा जाना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमारी कुछ भावनाएं हमारी आत्मा, मन एवं शरीर पर मंदविष (स्लो-पॉयजन जैसा की कार्य करती है और तन एवं मन को धीरे-धीरे खोखला बनाती है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि शरीर और मन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इन दोनों में चोली और दामन जैसा ही संबंध है। इसे इन शब्दों के माध्यम से और भी अधिक स्पष्ट रूप में समझा जा सकता है कि स्वास्थ्य शरीर में ही स्वस्थ-मन का निवास होता है। जिसका मन रोगी नहीं, विकारी नहीं, उसका तन कभी रोगी नहीं होता। अस्वस्थ तन में स्वस्थ मन तो रह सकता है, परन्तु अस्वस्थ मन, तन को भी स्वस्थ नहीं रहने देता।

निरख-परख



सुश्री कृष्णा सोनी

निरख-परख का अर्थ है निरीक्षण करना अपने गुण-दोषों को भली-भाँति जान लेना। यदि मनुष्य के मन में यह अभिलाषा है कि वह जीवन में सुख, आनन्द एवं शांति से रहे तो उसे यह अभिलाषा पूरी करने के लिए अपनी निरख-परख करनी पड़ेगी कि उसके अन्दर कौन सी बुराईयाँ एवं कमियाँ हैं फिर वह उसे पूरा करके अपना सुधार करें। ऐसा करके ही वह जीवन में नित्य सुख, आनन्द एवं शान्ति को उपलब्ध करके उन्नति कर सकता है।

सबसे पहले जिसकी निरख-परख करना जरूरी है वे हैं मन में उठने वाले विचार। विचार कोई साधारण चीज नहीं है और न ही उन्हें साधारण समझना चाहिए, क्योंकि विचार की आधारशिला पर ही जीवन की धार खड़ी होती है। विचार बीज के समान हैं। बीज देखने में बहुत छोटा होता है परन्तु उसके अन्दर वृक्ष मौजूद होता है। कीकर (बबूल) का उसी के अनुरूप वृक्ष होता है। बीज कीकर (बबूल) का हो तो उससे कीकर का वृक्ष ही उगेगा और कांटे ही लगेंगे परन्तु यदि बीज आम का हो तो फिर वृक्ष पर आम ही लगेंगे। यही दशा विचारों की है। जिस प्रकार के विचार मन में होंगे वैसा ही मनुष्य का जीवन बनेगा। अच्छे, सुन्दर एवं निर्मल विचारों से जीवन भी सुन्दर एवं निर्मल बनता है। बुरे एवं मलिन विचारों वालों का जीवन भी वैसा ही बनता है। मनुष्य को अपने मन के अन्दर अच्छे, सुन्दर एवं पवित्र विचारों को ही स्थान देना चाहिए यह काम तभी होगा जब वह अपनी निरख-परख स्वयं करता रहेगा।

जिहवा से निकले कठोर एवं अप्रिय वचन तीर से भी अधिक घातक होते हैं। तीर का घाव तो भर जाता है परन्तु, कटु वचनों का घाव कभी नहीं

भरता। जैसे कोयल और कौआ। कोयल की कुहु-कुहु की मधुर एवं सुरीली वाणी सबके दिलों को मोह लेती है इसलिए सबको प्रिय लगती है। इसके विपरीत कौए की बोली कर्कश होती है इसलिए वह किसी को प्रिय नहीं लगती। कटु, कठोर एवं अप्रिय वचन दुसरे के दिल में गहरा घाव करते हैं और उसे सर्वदा के लिए अपना विरोधी बना लेते हैं। उदाहरण के लिए जैसे महाभारत, महासमर के रूप में जो प्रलयकर विनाश हुआ था इस विनाशकारी महायुद्ध का मूल कारण द्रौपदी के कटु एवं अप्रिय वचन ही थे जो उसने दुर्योधन के प्रति कहे थे कि “अन्धे की सन्तान अन्धी ही हुआ करती है”। यदि द्रौपदी अपनी जिह्वा को उस समय वश में रखती और ऐसे कटु वचन न बोलती तो शायद भारत का इतिहास किसी अन्य रूप में ही लिखा जाता।

इसलिए मनुष्य को इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए कि उसके मुख से सदैव मधुर वचन ही निकले। मधुर एवं प्रिय वचन बोलने से मनुष्य स्वयं भी शान्त, शीतल सुखी एवं आनन्दित रहेगा तथा औरों को भी सुख प्रदान करेगा।



**भारतीय भाषाएँ नदियां हैं
और हिन्दी महानदी।**

रविन्द्रनाथ ठाकुर

मन: स्थिति-कोविड-19 के दौरान



सुश्री किरन मोंगा

जिन्दगी के दौड़ में भागे जा रहे थे हम,
कुदरत ने दिया हमें मौका थोड़ा थम जाने का।

अपनों से मिलने और मिलाने का और,
अपने ही घर में अपनी पहचान बनाने का।

जिन रिश्तों को निभा रहे थे हम उन्हें और मजबूत बनाने का,
और जिन्हें भूले जा रहे थे, उन्हें अपने दिल में फिर से बसाने का।

बहुत सी यादें है घर में जिन्हें जीते थे कभी हम,
उन्हीं को समेट कर फिर से अपना जीवन अर्थ पूर्ण बनाने का।

प्रकृति को निहारने का और उसकी रचनाओं को संवारने का,
कुदरत की जिन्ह कृतियों को अनदेखा किया,
उनके साथ जीवन के अमूल्य क्षण बिताने का।

महसूस कर रहे स्वयं को एक पिंजरे में बंद परिदे सा,
संयम रखे, विश्वास रखें, यही समय है
अपनी इंद्रियों पर विजय पाने का।

ईश्वर ने कुछ सोच कर ही रची ये सब माया है,
पूरे विश्व को एक जुट किया है और आग्रह किया है संभल जाने को।

मिल जुल कर रहना है प्रकृति से प्यार करना है

यही सब बतलाने का,

प्रभु ने भी संकेत दिया है आने वाली विपदा के टल जाने का।

कोई भी विपदा टिकती नहीं, यह त्रासदी भी चली जाएगी,

अपनी सकारात्मक सोच से, इंतजार करो इस विपत्ति के टल जाने का।

स्वस्थ रहो, घर में रहो, समय मिला है, अपनों के संग बिताने का,

संभल जाएंगे हम, तो जीत जाएंगे जंग,

बस संकल्प करो इस कोरोना को भगाने का।



**ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए, जहाँ न
आदर है, न जीविका, न मित्र, न परिवार
और न ही ज्ञान की आशा।**

विनोबा भावे

वर्तमान मन: स्थिति



सुश्री किरन मोंगा

चलो आज चर्चा करें बीते चन्द महीनों की,
जिसमें बदली सोच सभी की ओर शैली इस जीवन को जीने की।

थम गई थी सबकी जिन्दगी, ठहर गया था जैसे हर पल
चंचल सी हर गतिविधि पर, प्रकृति बोली, "जरा संभल"।

स्थिर हो गई थी सभी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियाँ
सभी को बस सता रही थी, चिंताजनक विषम परिस्थितियाँ।

लेकिन सराहनीय और प्रशंसनीय रहा हम सबका हर प्रयत्न,
डटे रहे महामारी के आगे, और सरल बनाया अपना जीवन

बहुतों ने बहुत कुछ खोया इसमें, जिसकी प्रतिपूर्ति सम्भव नहीं
फिर भी एक सबक सीखा हमने, कि, जिन्दगी से बढ़कर कुछ भी नहीं।

अब समय कुछ संभल गया, परिस्थितियाँ भी वश में हैं,
चलो इसे फिर से सुन्दर बनाएं, अब यही हमारा लक्ष्य है।

जो कुछ हमने सीखा है, उसे बनाए रखना है,
अपनों के साथ बिताएं अमूल्य क्षणों को बस यूँ ही संजोए रखना है।

प्रकृति का सम्मान करेंगे, यही हमारा उद्देश्य हो
धरा, जल और पवन की सुरक्षा ही हमारा परम ध्येय हो।

लेखापरीक्षा - सेवा अपनों की



श्री कुमार दत्त शर्मा

लेखापरीक्षा का लेखों से काम
हम देते हैं, दिल से ब-खूबी अंजाम
जो हित में है सबके, लोक हित का काम,
हम देते हैं, दिल से ब-खूबी का अंजाम
जनता का पैसा, पैसे का हिसाब,
लेखापरीक्षा देता जवाब।
कमियां दिखाना, है उसका काम।
हम देते हैं, दिल से बखूबी का अंजाम
क्या खर्चा किया, जहाँ करना था
समय में किया, जिसमें करना था।
क्या किफायत भी बरती, रखा हिसाब तमाम
हम देते हैं, दिल से ब-खूबी का अंजाम
लोक हित को नमन, सत्यनिष्ठा नमन
उस जज्बे को नमन, जो महकादे चमन।
ये सेवा अपनों की, सज्जदे का नाम,
हम देते हैं, दिल से बखूबी का अंजाम।
हिसाब में गलती, कभी नियत का डर,
पैसा भी लेता है, बुद्धि को हर।
अंकुश का रखा है, तभी प्रावधान,
हम देते हैं, दिल से बखूबी का अंजाम।

जांच को आंच न आए कभी,
हमसे भरोसा न जाए कभी।
तत्पर रहें हम, रहें सावधान,
हम देते हैं, दिल से बखूबी का अंजाम।



**वीरात्माएं सत्कार्य में विरोध की
परवाह नहीं करतीं और अंत में उस
पर विजय ही पाती हैं।**

प्रेमचन्द

हम आजाद क्यों हुए?



श्री हरेन्द्र कुमार

अंग्रेज भारत में 53596 किलोमीटर की रेलवे लाइन बिछाकर गए और हम पिछले 73 सालों में सिर्फ 14559 किलोमीटर ही जोड़ पाए हैं। रेलवे अंग्रेजों के द्वारा भारतीयों को दी गई बहुत बड़ी सौगात है। रेलवे के अलावा भी अंग्रेजों ने भारत में बड़े-बड़े पुल, बाँध, भवन बनवाए और कल-कारखानें लगवाईं।

अंग्रेजों ने भारत का आधुनिकीकरण किया। शिक्षा, स्वास्थ्य और न्याय की नवीन पद्धति विकसित की। भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा प्रदान की। भारत से अंग्रेजों ने सती-प्रथा, बाल-विवाह जैसी कुप्रथाओं को समाप्त कर महिलाओं को बराबरी का अधिकार अंग्रेजों ने ही दिया। भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था की शुरुआत अंग्रेजों ने ही की। टुकड़ों में बंटे भारत को एक देश के रूप में राष्ट्रीयता का पाठ अंग्रेजों ने ही पढ़ाया। अंग्रेजों के शासन काल में ज्ञान-विज्ञान अपनी तरक्की पर था, औद्योगिकी का तेजी से विकास हो रहा था, सामाजिक बुराईयों खत्म हो रही थीं, फिर क्या आवश्यकता थी आजाद होने की?

यहाँ तक कि नेहरू गांधी जैसे महापुरुषों ने भी डोमिनियन स्टेट की मांग की थी।

अंग्रेजों की चरण-वन्दना करने वाले इतिहासकार सामान्यतः इन्हीं तर्कों के माध्यम से भारत में अंग्रेजी शासन को सही ठहराते हैं।

अब देखिये कि सच्चाई क्या है:-

अंग्रेजों ने भारत में रेल तो चलाई लेकिन रेल में बैठने का पूरा अधिकार भारतीयों को नहीं दिया। अंग्रेज भारतीयों को निम्न स्तर की मानव जाति समझते

थे इसलिए भारतीयों को रेल में सबसे निम्न अर्थात् तृतीय श्रेणी में यात्रा करने का अधिकार दिया गया। अंग्रेजों ने भारत में रेलवे सिर्फ अपने व्यापारिक हितों को साधने के लिए चलाई थी न कि भारतीयों के लिए। अंग्रेजों ने अपनी फैक्ट्रियों का माल भारत में बेचने के लिए भारतीय उद्योग-धंधों को बंद करा दिया, कल-कारखानों में आग लगा दी गई और कारीगरों के हाथ काट दिए गए। यहाँ के लोग बेरोजगारी की चक्की में पिसते रहे और अंग्रेज अपनी फैक्ट्री का माल भारत में बेचकर मुनाफा कमाते रहे। ब्रिटिश काल में भारतीय अर्थव्यवस्था किस तरह बर्बाद हुई उसके लिए एक छोटा सा आंकड़ा देखिए:-

मौर्यकाल में विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान 40% था।

मुस्लिम आक्रमणों के कारण मुगल काल में यह घटकर 25% पर आ गई।

ब्रिटिश काल में वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत का योगदान सिर्फ 2% रह गया।

भारत की शिक्षा व्यवस्था में अंग्रेजों का क्या योगदान था इसे समझने के लिए मैकाले द्वारा ब्रिटिश संसद को लिखा गया पत्र देखिए:-

“मैंने भारत की चतुर्दिक यात्रा की और मुझे इस देश में सांस्कृतिक सम्पदा से युक्त उच्च नैतिक मूल्यों तथा असीम क्षमता वाले व्यक्तियों के दर्शन हुए। मेरी दृष्टि में आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत जो कि इस देश की रीढ़ है, उसको खण्डित किए बिना इस देश पर विजय प्राप्त नहीं किया जा सकता। मैं प्रस्ताव करता हूँ कि इस देश की प्राचीन शिक्षण पद्धति, उनकी संस्कृति को इस प्रकार परिवर्तित कर दें कि परिणामस्वरूप भारतीय यह सोचने लगें कि जो कुछ भी आंग्ल है वही श्रेष्ठ और महान है और इस तरह वे अपना आत्मसम्मान, गौरव और अपनी मूल संस्कृति को खो देंगे और वे वही बन जाएंगे जो हम चाहते हैं। हमारे कॉन्वेन्ट स्कूलों से ऐसे बच्चे निकलेंगे जो देखने में तो भारतीय होंगे लेकिन दिमाग से अंग्रेज होंगे। इन्हें अपने देश, अपनी संस्कृति और परम्पराओं के बारे में

कुछ पता नहीं होगा, इनको अपने मुहावरे तक मालूम नहीं होंगे। इस देश से अंग्रेज चले भी जाएंगे पर अंग्रेजियत नहीं जाएगी।”

मैकॉले ने ऐसा कर दिखाया। आज भारत की पीढ़ी विदेशी सभ्यता का अनुसरण कर गौरवान्वित महसूस करती है जबकि अपनी सभ्यता पर शर्मिन्दगी महसूस करती है।

जो लोग यह कहते हैं कि भारत में शिक्षा अंग्रेजों की देन है उन्हें पता होना चाहिए कि भारत में तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे महान विश्वविद्यालय मौजूद थे जहाँ पूरे विश्व भर से छात्र शिक्षा ग्रहण करने आते थे।

अंग्रेजों के भारत आने से पहले ही भारत में विशाल भवन बन चुके थे जिसकी तकनीक आज भी अभियन्ताओं के लिए अबूझ पहेली बनी हुई है।

अंग्रेजों के पांच पखारने वाले इतिहासकार यह भी कहते हैं कि अंग्रेजों ने टुकड़ों में बंटे भारत को एक राष्ट्र के रूप में बांध दिया जबकि सच्चाई यह है कि अंग्रेजों ने भारत और पाकिस्तान दो राष्ट्र में भारत को विभाजित कर दिया और इस विभाजन में 1.5 करोड़ लोग बेघर हुए थे और 20 लाख से ज्यादा लोग मारे गए थे। बाद में पाकिस्तान भी पाकिस्तान और बंगलादेश में बंट गया जिसमें 5 लाख लोग मारे गए।

लोकतंत्र में समानता होती है परंतु अंग्रेजों ने भारत में ऐसा लोकतंत्र स्थापित किया था जिसमें अंग्रेजों और भारतीयों में बहुत बड़ी असमानता थी। अंग्रेज भारतीयों को उच्च पदों के लायक नहीं समझते थे। कोई भारतीय जज किसी अंग्रेज अपराधी के केस की सुनवाई नहीं कर सकता था। अगर किसी अंग्रेज के हाथों भारतीयों की हत्या हो जाती थी तो इसके लिए उस अंग्रेज अपराधी को सिर्फ 6 वर्ष की जेल और 100 रुपए जुर्माना देना होता था। इसके विपरीत अगर किसी भारतीय द्वारा किसी अंग्रेज की हत्या हो जाती थी तो उस भारतीय को मृत्युदण्ड की सजा तय थी। जलियांवाला बाग में जनरल डायर ने निहत्थे भीड़ पर गोलियां चलवाकर जब हजारों लोगों को मार डाला था तो ब्रिटेन ने उसे नायक का

दर्जा दिया। ब्रिटेन के लोगों ने 25 लाख की रकम जमा कर उसे धन्यवाद दिया था।

अंग्रेज भारतीयों से किस हद तक घृणा करते थे इसका उदाहरण बंगाल का 1943 का अकाल है जिसमें 40-60 लाख लोगों की मृत्यु हो गई थी। यह अकाल कोई प्राकृतिक अकाल नहीं था। बंगाल से अनाज का निर्यात उस समय भी जारी रहा जब बंगाल की जनता भूख से तड़प-तड़प कर जान देती रही।

उस समय के ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल अपने सैनिकों के लिए अनाज इकट्ठा करता रहा जो कि गैर जरूरी था और भारतीयों को भूख से मरने के लिए छोड़ दिया। विंस्टन चर्चिल से जब बंगाल के लोगों के लिए अनाज की व्यवस्था करने को कहा गया तो विंस्टन चर्चिल ने कहा था कि भारतीय पैदा ही हुए हैं गोरों की गुलामी करने के लिए। ये जानवरों की तरह बच्चे पैदा करते हैं। इस अकाल के लिए बंगाल के लोग स्वयं ही उत्तरदायी हैं। उनकी नियति ही यही है। जरा सोचिए कि यह बातें विंस्टन चर्चिल ने उस समय कही जब भूख से तड़पते हुए लोग रेल के सामने आकर आत्महत्या कर रहे थे। भूख से बिलखते बच्चों को माएं अपनी नजरों के सामने मरता हुआ नहीं देख सकती थीं इसलिए बच्चों को उनकी माएं ही नदियों में फेंक देती थीं। लोग पत्ती और घास खाकर भूख मिटाने की कोशिश कर रहे थे। लोग इतने कमजोर हो गए थे कि वे भूख से मर चुके अपने परिजनों का दाह-संस्कार भी नहीं कर पा रहे थे।



भारत में यह पहला अकाल नहीं आया था जो कृत्रिम था। अकाल का ब्रिटिश शासन से पुराना नाता रहा है। जैसे-जैसे भारत में अंग्रेजों का प्रभाव बढ़ता गया वैसे-वैसे अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के कारण भारत में अकाल की घटनाएं भी बढ़ने लगीं। माइक डेविस ने अपनी किताब लेट विक्टोरियन होलोकॉस्ट्स में लिखा है कि भारत के 2000 साल में सिर्फ 17 अकाल पड़े थे जबकि ब्रिटेन के सिर्फ 120 साल के शासन काल में 31 बड़े अकाल पड़े। इसमें 2.90 करोड़ लोग मरे। यह था अंग्रेजों के द्वारा भारतीयों पर किए गए अत्याचार की लम्बी सूची का एक अत्यन्त छोटा सा टुकड़ा जिसके बावजूद दरबारी इतिहासकार अंग्रेजी शासन का महिमामंडन करते रहते हैं।



संपूर्ण विश्व का इतिहास उन व्यक्तियों के उदाहरणों से भरा पडा है जो अपने आत्म-विश्वास, साहस तथा दृढता की शक्ति से नेतृत्व के शिखर पर पहुंचे हैं।

महात्मा गांधी

गीतों का राजकुमार-शैलेन्द्र



सुश्री सुमन शर्मा

आपने मधुमती फिल्म का ये गाना तो सुना होगा

“सुहाना सफर और ये मौसम हसीन

हमें डर है कि हम खो न जाएं कहीं”

ऐसे ही गीतों को लिखने वाले गीतकार का नाम था “शैलेन्द्र” इनका पूरा नाम शंकरदास केसरीलाल शैलेन्द्र था, शैलेन्द्र का जन्म 30 अगस्त 1923 को रावलपिंडी में हुआ। इनके पिता सेना में कार्यरत थे। जो अखितयारपुर, बिहार के रहने वाले थे। बाद में शैलेन्द्र अपने रिश्तेदार के यहां मथुरा चले आए जो रेलवे में काम करते थे। वहां उन्होंने किशोरी रमन स्कूल में अक्वल अंकों से हायर सेकण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। मथुरा में ही उन्हें एक कवि दोस्त इन्द्र बहादुर खरे मिला जिसके साथ घंटों गीत बनाने का अभ्यास करते थे। लेकिन रोजगार उन्हें मुंबई खींच लाया। मुंबई के माटुंगा में रेलवे वर्कशॉप में उन्हें वैल्डर का काम मिल गया। लिखने की इनको लगन थी इसलिए वे आई.पी.टी.ए. (इंडियन पीपल्स थियेटर एसोसिएशन) के साथ जुड़ गए। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। एक कमरे के मकान में रहते थे। उसी में वह खाना भी बनाते थे। जब कोई उनसे मिलने आता तो वे रसोई का सामान पलंग के नीचे कर देते थे। आई.पी.टी.ए. के साथी बताते हैं कि जब वह एसोसिएशन में आते थे तो उनके कपड़ों में वैल्डिंग के छेद होते थे। इन्हीं दिनों उन्होंने एक कविता लिखी (जलता है पंजाब) जिसे एक कवि सम्मेलन में पढ़ा। राजकपूर इस कविता से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपने आफिस में मिलने को कहा। शैलेन्द्र जी उनके आफिस पहुँचे जहाँ राजकपूर ने उन्हें अपनी

फिल्म में गाना लिखने का आग्रह किया और साथ ही कहा कि 500 रु गाना लिखने का दूंगा। शैलेन्द्र जी ने कहा कि मैं नौकरी करता हूँ समय नहीं निकाल पाऊंगा। परंतु राजकपूर ने कहा कि मैं यह रुपये का लिफाफा मेज की दराज में रख देता हूँ जब मन करे तो चले आना। राजकपूर बहुत सुलझे हुए और दूरदर्शी फिल्म निर्माता थे। अकस्मात् शैलेन्द्र की पत्नी की तबीयत खराब होने के कारण पैसों की जरूरत पड़ी और वह राजकपूर के पास चले आए। राजकपूर ने आदर सहित लिफाफा दिया तो शैलेन्द्र ने कहा - परिस्थिति ठीक होने पर ये रुपये लौटा दूंगा। वह बाद में राजकपूर को आफिस में मिले तब राजकपूर ने कहा तुम मेरे लिए गाना लिख सकते हो, लिखकर तो देखो। राजकपूर ने उन्हें अपनी फिल्म आवारा के लेखक के.अब्बास से मिलवाया। जिन्होंने फिल्म की पूरी कहानी सुनाई फिर पूछा कुछ समझ में आया? शैलेन्द्र जी चुपचाप सोचते रहे के.अब्बास नाराज होकर राजकपूर से बोले मैं 2½ घंटे से कहानी सुना रहा हूँ ये तो चुपचाप बुत सा बैठा है। कहीं से पकड़ लाए? शैलेन्द्र जी नाराज हो गए और जाने लगे। राजकपूर ने शालीनता से पूछा - कुछ समझ में आया क्या? उन्होंने पलटकर कहा “या गर्दिश मैं हूँ आसमान का तारा हूँ, आवारा हूँ” और जाने लगे। लेखक के.अब्बास ये सुनते ही राजकपूर से झटपट बोले रोको इसे, और चेहरा खुशी के मारे खिल गया और इन्हें गीत लिखवाने के लिए चुन लिया। यह गाना राजकपूर की पहचान बन गया। इसके बाद शैलेन्द्र ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। राजकपूर के साथ इनकी जोड़ी ऐसी जर्मी कि राजकपूर ने इनको तनख्वाह पर रख लिया। राजकपूर शैलेन्द्र को कविराज कहकर बुलाते थे और आगे चलकर राजकपूर के चार स्तंभों (शंकर जयकिशन, शैलेन्द्र और हसरत जयपुरी) के रूप में चमके। इन्होंने कई फिल्मों के लिए गीत लिखे जैसे गमगीन:- (1) ए मेरे दिल कहीं और चल (2) याद न जाए बीते दिनों की (3) दोस्त, दोस्त ना रहा, प्यार-प्यार ना रहा। रोमांटिक गीत :- (1) मुझे कितना प्यार है तुमसे ये अपने ही दिल से पूछो तुम (2) ये रात भीगी-भीगी ये मस्त समा (3) प्यार हुआ इकरार हुआ प्यार से फिर क्यों डरता है दिल।

संजीदा गीत:- (1) किसी की मुस्कराहटों पे हो निसार (2) सजनवा बैरी हो गए हमार (3) मेरा जूता है जापानी (4) सुहाना सफर और ये मौसम हसीन (5) आज फिर जीने की तमन्ना है। भक्तिगीत:- (1) तू प्यार का सागर है तेरी एक बूंद के प्यासे हम। आई.पी.टी.ए. के लिए नारा दिया:- हर जोर जुल्म की टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है।

शैलेन्द्र जी अपने काम को लेकर बहुत समर्पित थे। शुरू में तो वह घर पर ही लिखते थे लेकिन बाद में गीत लिखने के लिए जूहू बीच और उसके आस-पास जाते थे। इनके गीतों की भाषा बहुत सरल थी। किसी बात को भारी भरकम शब्दों में कहना आसान होता है परन्तु उसी को सरल शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। शैलेन्द्र जी अपने समय के पसंदीदा और सबसे महंगे गीतकार थे।

1960 के दशक में उनके मन में विचार आया कि वे फिल्म बनाकर देखें। उन्होंने इस बारे में अपने दोस्त राजकपूर से बात की। राजकपूर ने उन्हें समझाया कि फिल्म बनाने में जोखिम और बहुत परेशानियां आती हैं। इसलिए इस बारे में न सोचें। परंतु शैलेन्द्र को कुछ हटकर नया करने का जुनून सवार था। उन दिनों फणीश्वर नाथ रेणु द्वारा लिखी किताब “मारे गए गुलफाम” लेखक से बात की। इन्होंने राजकपूर और वहीदा रहमान को मुख्य कलाकार के रूप में साइन किया। राजकपूर ने दोस्ती निभाते हुए सिर्फ 1 रुपया मेहनताना लेना स्वीकार किया। परंतु वहीदा रहमान उस समय की महंगी अभिनेत्री थीं। फिल्म का नाम रखा गया “तीसरी कसम” क्योंकि उन दिनों ब्लैक एंड व्हाइट फिल्में बनती थीं। गीतकार वह स्वयं थे। उत्साह के साथ उन्होंने काम पूरा किया। पर जैसा सोचा था राजकपूर जैसा दोस्त और जाने पहचाने कलाकार उनका समय पर फिल्म पूरी करने में सहयोग देंगे, ऐसा हो नहीं पाया। राजकपूर तारीख पे तारीख बढ़ाते गए, बाकी कलाकार भी समय टालते रहे। वहीदा रहमान समय पर पैसा मांगती रहीं। नतीजा यह हुआ कि फिल्म पूरी होने में 5-6 साल लग गए। रंगीन फिल्मों का दौर भी

चल पड़ा। जिन पर उनको पूरा भरोसा था, सभी ने उन्हें धोखा दे दिया। ये टूट चुके थे। कर्ज का बोझ पहाड़ सा था। जिसके चलते वे बीमार रहने लगे।

14 दिसम्बर 1966 को राजकपूर का जन्मदिन था। शैलेन्द्र बधाई देने के लिए राजकपूर के घर गए थे। राजकपूर उन दिनों "मेरा नाम जोकर" फिल्म बना रहे थे और उन्हें उम्मीद थी कि शैलेन्द्र हर बार की तरह उनकी फिल्म के लिए गीत लिखेंगे। बधाई देने के बाद उन्होंने राजकपूर को आश्वस्त किया कि जब मैं ठीक होकर आऊंगा तो सारे गीत लिखूंगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ और उसी दिन उनकी मृत्यु हो गई। वह अपनी फिल्म की प्रसिद्धि भी नहीं देख सके।

बहुत से गीतकारों ने माना कि सही मायने में वे गीतकार थे और ज्यादातर शायर थे। उन्हें फिल्म फेयर अवार्ड में सर्वश्रेष्ठ गीतकार के रूप में 3 बार सम्मानित किया गया। 1958 - ये मेरा दिवानापन है (यहूदी), 1959 - सब कुछ सीखा हमने न सीखी होशियारी (अनाड़ी), 1968 - मैं गाऊं तुम सो जाओ (ब्रह्मचारी)।



जाओ तुम्हें माफ किया



श्री कुमार दत्त शर्मा

मैं जिला पलवल, हरियाणा का रहने वाला हूँ। पलवल शहर की एक कालोनी में मेरा पैतृक मकान है। जब पिताजी ने इस मकान को बनवाया तो मकान बाहरी सड़क से 4 पायदान उँचा था, पर समय गुजरा और 20 साल बाद मकान बाहरी सड़क से 4 पायदान नीचा पड़ गया था। बरसात में बाहर गली का पानी मकान में न आ जाए इससे बचने का एक तरीका जो सब करते थे वो था गली का साथ वाला आंगन का हिस्सा उँचा कर लो, बेशक कमरा नीचा पड़ जाए। कम से कम गली में बरसात का पानी तो अंदर नहीं आएगा। कमरा बाहरी गली से नीचा होने के कारण बारहों मास सीलन से भरा रहता था जिससे उसमें कीड़े-मकोड़े पनप जाते थे। उनको कमरे में अन्य सामान के साथ छुपने में आसानी रहती थी। घर के आंगन में पीछे की तरफ कुछ गमले थे जो घर की दशा को कुछ हद तक सुधारने में काम आते थे।

एक दिन मैंने देखा कि क्रिस्मस के पौधे के गमले में एक मादा गिरगिट बैठी थी। मैंने बच्चों से कहा कि हमारे घर में एक नया मेहमान आया है। उसे परेशान मत करना। पत्नी और बच्चे आए और कहने लगे कि घर में तो कोई मेहमान नहीं है। फिर मैंने उस गमले की ओर इशारा करके बताया कि वो और कोई नहीं बल्कि मादा गिरगिट है। सभी ने उसे दूर से देखा अचम्भा करके बोले कि ये कैसा मेहमान है। मैंने कहा ऐसे जीव वहां आते हैं जहां उनको लगता है कि वो सुरक्षित रह सकते हैं। ये हमारे घर आई हैं इसलिए हमें इनकी सुरक्षा करनी चाहिए। मैंने उन्हें समझाया कि इसे भगाना मत और न ही बार-बार इसके पास आना। सब ने अनुशासन का पालन किया और उस नए मेहमान का आदर किया।

नतीजा ये हुआ कि मादा गिरगिट ने उस गमले को ही अपना आशियाना बना लिया। दिन में तो वो इधर-उधर कहीं चली जाती थी पर शाम होते ही उस क्रिस्मस के पौधे पर आकर, हाथ-पैर फैलाकर बारीक पत्तों की चौड़ी डाली पर सकून से लेट जाती थी। बच्चे उसे “छोटी” के नाम से पुकारने लगे थे। छोटी सब के मन को भा गई थी। रोज शाम होते ही हमको उसका इन्तजार रहता था। कमाल ये था कि छोटी को आते-जाते कभी किसी ने नहीं देखा था वो दिन में कहाँ जाती थी, क्या करती थी, एक पहेली थी। हम भी ये ध्यान रखते थे कि अगर हमें उस क्षेत्र से कोई सामान लेना या निकालना होता था तो ध्यान से देख लेते थे कि कहीं छोटी दब कर मर न जाए। उसे पानी की भी जरूरत पड़ सकती थी इसलिए बच्चे उस गमले में छोटी सी कटोरी में पानी रख देते थे। बच्चों को बताया था कि ये जीव खाने में कीट-पतंगा आदि खाते हैं। पर फिर भी बच्चे दिन में अपने मुताबिक कुछ खाने की चीजें रख देते थे। बच्चे छोटी से बहुत प्यार करने लगे थे। कुछ ही हफ्तों में छोटी को हम पर भरोसा हो गया था। हम उसे देखने उसके नजदीक भी चले जाते थे पर वो फिर भी बेफिक्र होकर आराम करती रहती थी। छोटी ने अपने बर्ताव से सबको मोह लिया था। वो न तो कुछ बोलती थी और न ही कोई करतब दिखाती थी। पर न जाने क्यों सबको अच्छी लगती थी। उसका उस पौधे की शाखा पर हाथ-पैर फैला कर लेटना और कभी-कभी अंगड़ाई सी लेना अच्छा लगता था और इन सबसे ज्यादा उसका हमारे ऊपर एक अटूट विश्वास कि हमारे साथ वह सुरक्षित है, अच्छा लगता था।

एक दिन पत्नी कमरे में झाड़ू लगा रही थी। वह एक दम चिल्लाई - जल्दी आओ, जल्दी आओ। मैं सबकुछ छोड़ कर उसकी मदद के लिए भागा। देखा वो घबराई हुई बेड से दूर खड़ी है। उसने इशारा करके बताया कि बेड के नीचे कोई बड़ा कीड़ा है। मैंने फिर पूछा सांप की तरह रेंगने वाला तो नहीं था। पत्नी बोली वो तो तेजी से भाग कर बेड के नीचे घुस गया है। मैं बोला चलो बच गए, सांप नहीं है। मैंने एक तरफ रखी डंडी उठाई और घर के अंदर की ओर हो गया। दरवाजे की

ओर जाने वाला रास्ता खुला छोड़ दिया जिससे उसे कमरे से दरवाजे के रास्ते भागने में आसानी हो। अगर वह कमरे के अंदर वापस चला जाता है तो कमरे में रखे अन्य सामान में खो जाएगा और उसे ढूँढना मुश्किल होगा। मैं डंडी पीट कर उसे दरवाजे के रास्ते बाहर भागने की कोशिश करने लगा। तरकीब काम कर गई। खाली रास्ता देखकर वह बेड के नीचे से निकलकर दरवाजे की ओर भागा। तभी हमने देखा कि वह करीब डेढ़ फीट लम्बा नर गिरगिट था। तना हुआ, जोशीला शरीर था उसका। हमें भी तसल्ली हो गई कि वह बाहर की ओर भाग रहा था। तभी पड़ौसी दरवाजे पर पहुँच गया और पूछने लगा कि क्या हुआ। वह बोला कि वह तो चीख सुन कर मदद के लिए भागा था। पड़ौसी को दरवाजे पर खड़ा देख वह नर गिरगिट वापस पीछे घर में छुपने के लिए भागा। मैंने डंडी फर्श पर पीट कर उसे रोकना चाहा। इसी बीच डंडी गलती से उसके सिर पर जा लगी। वह तड़पता हुआ वहीं ढेर हो गया। कुछ देर तो उसकी पूँछ हिलती रही और फिर शान्त हो गई। हम एक तरफ तो इसलिए खुश थे कि चलो बच गए। कहीं वह कमरे में वापस भागने में कामयाब हो जाता तो कमरे में पड़े अन्य सामान के अन्दर उसे ढूँढना मुश्किल हो जाता। पर दूसरी तरफ मन परेशान था क्योंकि अनजाने ही सही, पर पाप हुआ था। कुछ दिन पाप से भारी रहा। फिर गीता ग्रन्थ के श्लोक का ध्यान आया। उस श्लोक को पढ़ा, समझा तब जाकर पाप का भारीपन कम हुआ।

गीता ग्रन्थ का श्लोक निम्न प्रकार है।

ॐ अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृतमः।

सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि ॥

भावार्थ:-

यदि तू अन्य सब पापियों से भी अधिक पाप करने वाला है, तो भी तू ज्ञान रूप नौका द्वारा निःसंदेह सम्पूर्ण पाप-समुद्र से भली भांति तर जाएगा।।

परन्तु हमने यह महसूस किया कि उसी दिन से “छोटी” ने आना छोड़ दिया था। फिर हमने महसूस किया कि हो न हो, उस नर गिरगिट से छोटी का कोई

संबंध था जो पिछले दिनों हमें पता नहीं चला। उस दिन उस नर गिरगिट को देखा ही पहली बार था। दिन बीतते गए पर छोटी नहीं आई। शायद उसने हमारा नर गिरगिट के प्रति व्यवहार देख लिया था। हम रोज शाम पौधे की ओर देखते कि शायद छोटी आज आ गई होगी। परन्तु उसे न पा कर उदास हो जाते। हमने गीता ग्रन्थ के उस श्लोक से अपनी आत्मा को तो मना लिया था। परन्तु लगता था जैसे छोटी ने हमें माफ नहीं किया था। कई बार उसका मासूम चेहरा याद आता जैसे वह कह रही हो कि तुमने मेरा परिवार खत्म कर दिया है, मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूंगी। मैं कभी तुम्हारे गमले पर नहीं आऊंगी।

समय बीतता गया। करीब एक महीने के बाद मैं अपनी पत्नी सहित किसी काम से बाजार गया हुआ था। शाम हो रही थी तभी मोबाइल बजा। देखा कि घर से बच्चा बोल रहा था। मैंने पूछा - 'हां क्या बात है बेटा'। बच्चा उत्सुकता से बोला - 'पापा, छोटी आ गई'। दो छोटे-छोटे बच्चे भी हैं। मैंने खबर साथ खड़ी पत्नी को सुनाई। हम दोनों की खुशी का ठिकाना न रहा। हमने हाथ जोड़कर भगवान को धन्यवाद किया और तुरन्त घर की ओर चल दिये। हमने घर जा कर देखा कि छोटी उसी गमले के पौधे की उसी डाली पर उसी तरह हाथ-पैर फैला कर आराम कर रही थी जैसे वह पहले करती थी। उसके साथ उसके बच्चे लेटे हुए थे। मेरा मन प्रीत से गद-गद हो उठा। मैंने खुशी के मारे डबडबाती आंखों से छोटी की ओर देखा। उसने भी हल्का सा सिर उठा कर मेरी तरफ देखा। लगा जैसे कह रही थी - जाओ तुम्हें माफ किया।

* * * * *

कोरोना काल और इंसान की हस्ती



सुश्री रश्मि गुप्ता

नए साल के साथ ही, कोरोना का कहर दुनिया पर छाया।
प्रकृति की इस विनाश लीला ने, हम सबको ये सिखलाया।

कि कदम थमे हैं इंसान के, भगवान की कुदरत के नहीं।
मिट सकते हैं इंसान सभी, प्रकृति की कोई नेमत नहीं।

सूरज भी उगता है, चांद तारे भी खिलते हैं।
पीले पत्ते भी झड़ते हैं, नए कोंपल और फूल खिलते हैं।
जानवर बेखौफ घूमते हैं, पंछी उन्मुक्त चहकते हैं।

हवा भी मस्त चल रही, नदियाँ भी खुल कर बह रहीं।
मुक्त हैं हम इंसानी कचरे से, मानों ये इंसान से कह रहीं।

हर शै मानों कह रही है, इंसान तेरी क्या हस्ती है।
तेरी तो सांसे भी हमसे, तेरी जिंदगी आज मौत से सस्ती है।



“मेरे देश का चुनाव”



सुश्री रश्मि गुप्ता

मेरे देश का चुनाव सिर पर है, नई सत्ता चुनने की तैयारी है।

वोटर को लुभाना शुरू हो गया, चुनावी टिकट की बिक्री जारी है।

सत्ता की खातिर हो रहा है, दुश्मन से भी गठबंधन।

चुनावी उत्सव के शोर में, कौन सुने जनता का क्रंदन।

भीड़ जुटा कर होती रैली, भाषण देते धुआंधार।

फिर जनता के गले में डलते, लुभावने वादों के हार।

पाँच साल तक मुँह छुपाकर, फिर वोट मांगने आते हैं।

सत्ता की खातिर ये नेता, कितना नीचे गिर जाते हैं।

लेकिन कसूर हम सब का है, हम ही इन्हें जिताते हैं।

फिर चाहे कोई जीत कर जाए, हम सबसे धोखा खाते हैं।

लोकतंत्र की शक्ति भी, चुनाव में शर्म से गड़ती है।

क्योंकि आधी जनता घर बैठती, वोट भी आधी पड़ती है।

बुरा हाल है मेरे जनमत का, युवा शक्ति में बेरुखी है।

पर क्या कहूँ मैं साहेब, मेरी आधी जनता भूखी है।

देश के जनमत की भरपाई, ये आधी जनता कर जाती है।

भूखे पेटों को भी कभी, घी खिचड़ी मिल जाती है।

हाँ, हक नहीं किसी नेता का, किसी गरीब के वोटों पर।

पर रोटी के लिए कोई बिका, कोई बिकता नोटों पर।

यही सत्य है मेरे देश का, चुनाव का बिगुल बजाता है।

बिके नेताओं को सोंप के सत्ता, फिर गहरी नींद सो जाता है।



देश बुलाता है



श्री राहुल

गलियों कूचों में लोग कौन गिनता है,
साथ खड़े हो रहने वाले देश तभी बनता है।

बड़ी-बड़ी हम देश प्रेम की बात किए जाते हैं,
वक्त पड़े तो अपनों के भी काम नहीं आते हैं।

सरहद की रखवाली तो सेना अपनी करती है,
पर अंदर सड़कों पर लड़की चलने से डरती है।

युवा शक्ति का नारा सुनने में अक्सर आता है,
सही दिशा भी कोई युवा को नहीं दिखा पाता है।

जीत हमारी पूँजी है और फसल हमारे गहने,
क्यों किसान फिर कहीं लगे हैं जान स्वयं की लेने।

थाल सजा है कहीं परंतु भूख नहीं लगती है,
किसी की बेटा भूख के मारे रात-रात जगती है।

क्या 67 सालों में थे यह आजाद वतन अपना है,
क्या यही भगत सिंह और महात्मा गांधी का सपना है।

क्या इसलिए बिस्मिल ने फिर आऊंगा कह डाला था,
क्या उधम सिंह ने भी क्रोध को अपने इसलिए पाला था।

जिस आजादी के लिए लड़े उसकी इज्जत करने में,
जो फूल सूखकर बिखर गया तो वापिस नहीं मिलेगा।

पर अकलमंद को एक इशारा ही काफी होता है,
सुधार ही हर गलती के लिए असली माफी होता है।

देश-प्रेम और राष्ट्रवाद के गान नहीं गाओ तो,
अपने अंदर बसे भगत सिंह को जरा जगाओ तुम।

मंजिल दूर नहीं राही जब कर लें अटल इरादा,
अपना हाथ उठा कर खुद से आप करो ये वादा।

मेरे सामने कोई कभी भी भूख से नहीं मरेगा,
मेरे रहते अन्याय से कोई नहीं डरेगा।

हमें पहले उसकी तत्काल मदद करनी है,
अपने आगे हर पीड़ित की हर पीड़ा हरनी है।

शपथ ग्रहण कर आजादी का उत्सव आज मनाते हैं,
देश बुलाता है आओ कुछ काम इसके आते हैं।



अगर किसी देश को भ्रष्टाचार - मुक्त और
सुन्दर-मन वाले लोगों का देश बनाना है
तो, मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज
के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं:
पिता, माता और गुरु।

अब्दुल कलाम

भारतीय संस्कृति लुप्त होती जा रही है



मा. रोहित

नारी का सम्मान नहीं है, ना बड़ों का आदर,
माँ अब मम्मी बन गई, पिता बन गए फादर।

कभी नहीं देखी थी पहले यह आकृति शायद कहीं दब गयी है भारत की सभ्यता संस्कृति। जी हाँ, यह सत्य है कि विश्व में अपनी सभ्यता और प्राचीन संस्कृति के लिए पहचाना जाने वाला भारत आज अपनी दुर्दशा पर रो रहा है। दिन प्रतिदिन सांस्कृतिक मूल्य एवं आदर्श नष्ट होते जा रहे हैं। सांस्कृतिक स्तर पर हमारी स्थिति धोबी के कुत्ते से भिन्न नहीं है। न आधुनिकता पूरी तरह आई है और न पिछड़ापन गया है।

पश्चिमि सभ्यता के युवा पीढ़ी पर बढ़ते प्रभाव को देखते हुए वर्तमान में भारत अपनी पहचान खोता जा रहा है। प्राचीन भारत की संस्कृति जैसे- अतिथि देवो भव, बुजुर्गों का मान-सम्मान, नारी को देवी के तुल्य मानना, बच्चों को सहनशीलता का पाठ पढ़ाना आज सब लुप्त होते जा रहे हैं। नैतिकता की बातें विस्मृत हो चुकी हैं। वर्जनाएं रद्दी की टोकरी में फेंक दी गई है।

अश्लील क्या होता है? कुछ नहीं संस्कार की बातें दकियानूसी लगने लगी है। भारतीय संस्कृति का यह पतन तो तभी शुरू हो गया था, जब भारत आजाद हुआ। अंग्रेज अंग्रेजी भारत छोड़ कर गए पर, जाते-जाते अपनी पश्चिमी संस्कृति की कुछ विषैली जड़ें भी छोड़ गए। फूट डालो और शासन करो की नीति को भारतवासियों ने अपने ही घर में आजमा डाला और संयुक्त परिवारों के टुकड़े होने लगे। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव का असर नई पीढ़ी पर होने लगा। भारतीय राष्ट्रभाषा

हिन्दी को छोड़ कर अंग्रेजी की गोद में पलने बढ़ने लगे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि अपनी माँ ही पराई होने लगी। जीने का अपना निजी विचार अपना घेरा है, इसमें औरों का कोई स्थान नहीं है। संबंधों की एक गरिमा हुआ करती थी आज के संदर्भ में उसका कोई स्थान नहीं। शिष्टता, आदर-सम्मान, व्यवहार, बोली जो व्यक्ति की सुन्दरता मानी जाती थी उस पर आडम्बर का लेप लग गया है। लज्जा जो नारी का आभूषण था वो आज की जीवन शैली में कुछ इस तरह गुम हो गयी है कि भारत की असली पहचान उसकी संस्कृति कहीं लुप्त होती जा रही है। भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करने वाले उसके बदले हुए स्वरूप से चिंतित हैं। सभ्यता-संस्कृति की बातें शायद जल्द ही इतिहास हो जाएगी। विकास की दौड़ में दौड़ता हुआ भारत अपनी रूठी संस्कृति को शायद अब कभी न मना पाएगा।

एक घर में रहकर भी अब बात नहीं कर पाते हैं,
नए भारत की इस नए युग में देखो कैसे नाते हैं?
याद बन कर रह गई सारी पिछली बातें हैं,
बिन यादों के कटती नहीं आज भी लंबी राते हैं।

ॐॐॐॐॐॐॐॐ

“अनुशासन”



सुश्री अनमोल मिश्रा

महादजी शिंदे ग्वालियर के राजा थे। वे स्वाधीनता के पुजारी थे। कई बार अंग्रेजों से युद्ध करते समय उन्हें पराजय ही हाथ लगी। अर्थ, सम्पदा, सेना, अस्त्र, वीरत्व के रहते भी उन्हें पराजित होना पड़ा। हार का कोई कारण दिखाई नहीं पड़ रहा था। उनकी सेना में सेनापति वीर योद्धा थे, युद्ध कौशल था, अर्थ की भी कमी नहीं थी फिर भी अंग्रेजों से हार गए। वही अंग्रेजी सेना, फ्रांसीसी सेना से हार जाती थी, एक दिन महाराज सैन्यदल सहित फ्रांसीसी सेनापति से मिले और अंग्रेजों से पराजय का कारण पूछा।

सब कुछ सुनने के बाद सेनापति ने कहा- “आपकी सेना के पराजित होने का कारण आपको दिखा देंगे”। दूसरे दिन, सुबह दोनों दलों के सेनापति अपनी-अपनी सेना लेकर मद्रास के समुद्र तट पर इकट्ठे हुए। इसके बाद “फ्रांसीसी सेनापति ने शिंदे की सेना को प्रचल की आज्ञा देने को कहा। महाराज ने प्रचल की आज्ञा दी। महाराज के आज्ञानुसार सेना आगे बढ़ने लगी। किन्तु ज्यों ही पानी के समीप पहुंचे रुक गए। किसी ने अपना जूता उतारकर पैट मोड़ना शुरू किया, तो कोई रुकने का आदेश आएगा ऐसा सोचने लगा। कुछ ने सोचा सामने तो कोई शत्रु नहीं है क्या होगा कपड़े को पानी में भिगोकर। अतः वे पानी से ऊपर आ गए, महाराज हमसे मज़ाक कर रहे हैं, ऐसा सोचकर आपस में हंसी मज़ाक करने लगे।

इसके बाद फ्रांसीसी सेनापति ने अपनी सेना को प्रचल की आज्ञा दी, उनकी सेना आगे बढ़ने लगी किन्तु समीप पानी देखकर वे रुके नहीं। पानी का स्तर घुटने, कमर, गले तक आ गया फिर भी वे रुके नहीं, तैरकर पार करने लगे। जब

तक उन्हें वापस नहीं बुलाया गया वे आगे बढ़ते रहे। फ्रांसीसी सेनापति ने महाराज से कहा “अब तो आप समझ गए होंगे अपनी हार का रहस्य। आपकी सेना में सब कुछ होने के पश्चात भी, आपको पराजय का मुँह देखना पड़ा, केवल अनुशासन के अभाव में।

इसलिए, अनुशासित व्यक्ति, समाज, राष्ट्रजीवन के लिए मूल्यवान वस्तु है।



अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है,
लेकिन क्रोधाग्नि सारे कुटुंब को जला डालती है।

संत तिरुवल्लुवर

इंटरनेट “श्राप या वरदान”



श्री रोहित कुमार

इंटरनेट के बारे में मेरे द्वारा एकत्र की गई जानकारी इस लेख के माध्यम से मैं देने का प्रयास करूंगा। आज के आधुनिक युग में अधिकतर काम इंटरनेट के माध्यम से करना बहुत ही आसान व सुविधाजनक हो गया है। अतः इंटरनेट के बारे में सभी को सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। इंटरनेट की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए हमने इस बारे में अधिक से अधिक जानकारियों को जुटाने का प्रयास किया है। आशा करते हैं कि हमारे द्वारा दी गई जानकारी आपके लिए सहायक सिद्ध होगी।

‘इंटरनेट’ शब्द को आज सभी लोग जानते हैं। बच्चे हों या बड़े सभी लोग इसका प्रयोग करना अच्छी तरह से जानते हैं। अगर सही अर्थ में देखा जाए तो आज इंटरनेट हम सभी के लिए जीने की वजह बन चुका है। इंटरनेट ने आज हमारी बहुत सी मुश्किलों को आसान कर दिया है जिसकी वजह से हमें हर काम बहुत आसान लगता है। 100 साल पहले किसी ने भी यह नहीं सोचा होगा कि इंसान खुद ही किसी ऐसी चीज़ की रचना कर देगा, जिससे दुनिया की तमाम सारी जानकारी एक ही स्थान पर बहुत ही आसानी से मिल जाएगी और दुनिया के लगभग सभी देश आपस जुड़े होंगे।

इंटरनेट हमारे आज के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण हो गया है। आज के समय में इंटरनेट दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे लोकप्रिय नेटवर्क बन चुका है। इंटरनेट को आधुनिक और उच्च तकनीकी विज्ञान का आविष्कार भी माना जाता है। दुनिया भर के सभी नेटवर्क इंटरनेट से जुड़े हुए हैं इस तरह से हम इसे

नेटवर्कों का नेटवर्क भी कह सकते हैं। इंटरनेट सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांति लाने वाला विश्व का सबसे बलशाली और सबसे बड़ा नेटवर्क है। इसे संक्षिप्त में नेट भी कहा जाता है क्योंकि इंटरनेट एक दूसरे से जुड़े असंख्य कम्प्यूटरों का जाल है जो कि उपग्रहों, केबल तंतु प्रणालियों, लोकल एरिया नेटवर्क, और वाईड एरिया नेटवर्क प्रणालियों तथा टेलीफोनों के जरिए सम्पूर्ण विश्व के करोड़ों कम्प्यूटर्स एवं उपनेटवर्क्स को आपस में जोड़ता है।

दूसरे शब्दों में कहे तो संसाधनों से संबंधित जानकारी एवं सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए टी.सी.पी/आई.पी प्रोटोकॉल के द्वारा दो अथवा कई कम्प्यूटर्स को एक साथ जोड़कर अंतः सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया को इंटरनेट कहते हैं तथा इनके बीच की साझा करने की प्रक्रिया को कंप्यूटर नेटवर्क कहते हैं। कंप्यूटर नेटवर्क के अनेक रूप हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख है लोकल एरिया नेटवर्क, इंटरनेट एवं इंटरनेट।

इतिहास एवं आविष्कार

पहले के समय में जब लोगों के पास इंटरनेट की सुविधा नहीं थी, तो उन्हें कई प्रकार के सामान्य कार्य के लिये भी कई घंटों तक लाइनों में लगे रहना पड़ता था जैसे रेलवे का टिकट लेने, बिजली का बिल जमा करने तथा आवेदन पत्र जमा करने जैसे कार्य के लिए काफी दिककतों का सामना करना पड़ता था। लेकिन आधुनिक समय में लोग बस एक क्लिक से टिकट की बुकिंग कर सकते हैं, साथ ही एक सॉफ्ट कॉपी अपने मोबाईल फोन में भी रख सकते हैं। इंटरनेट अपने आप में कोई आविष्कार नहीं है। इंटरनेट टेलीफोन, कंप्यूटर व दूसरी तकनीक को इस्तेमाल करके बनाया गया एक ऐसा जाल है जिसमें सूचना व तकनीक को मिलाकर उपयोग किया गया है।

1969 में टिम बर्नर्स ली ने इंटरनेट का आविष्कार किया। इसे सबसे पहले सन् 1969 में अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग द्वारा एडवांस रिसर्च प्रोजेक्ट एजेंसी नेटवर्क के गुप्त आंकड़ों और सूचनाओं को दूर दराज़ के विभिन्न राज्यों तक भेजने

व प्राप्त करने में लाया गया था। हमारे भारत देश में इंटरनेट 1980 के दशक में आया था। इंटरनेट के सुगम इस्तेमाल को एप्पल नाम की कंपनी ने सन् 1984 में कंप्यूटर में फाइल, फोल्डर और ग्राफिक्स का इस्तेमाल किया, जिसके कारण आज इंटरनेट चलाना बहुत आसान है यदि एप्पल कंपनी नहीं होती तो आज भी हमें कोडिंग करके ही इंटरनेट का इस्तेमाल करना पड़ता।

कंप्यूटर का विकास होने के बाद उनमें जमा आंकड़ों और सूचनाओं के आदान-प्रदान की आवश्यकता अनुभव की गयी और इसी अनुभव ने विभिन्न विश्वविद्यालयों, सरकार द्वारा प्रायोजित कंप्यूटर नेटवर्क तथा शोध व शिक्षा के लिए इंटरनेट का विकास किया गया। धीरे-धीरे इंटरनेट के विकास के साथ इसके फायदे और महत्व हर क्षेत्र में दिखाई देने लगे और यह तकनीक पूरी दुनिया में इंटरनेट क्रांति के रूप में फैल गयी है। इंटरनेट की दुनिया में, यह कोई ज़रूरी नहीं है कि कोई व्यक्ति अपने व्यापारिक या निजी मुलाकात के लिए घंटों यात्रा करके किसी स्थान पर जाए। आज के समय में हम वीडियो कॉन्फ्रेंस, कॉलिंग, स्काईप या दूसरे तरीकों से अपनी जगह पर रह कर ही किसी भी व्यापारिक या निजी बैठक का हिस्सा बन सकते हैं जैसा कि वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान यह चलन में है। इंटरनेट के प्रारंभिक चरण में इसकी स्पीड के.बी.पी.एस. में होती थी, फिर धीरे-धीरे एम.बी.पी.एस. और अब जी.बी.पी.एस. में इसकी स्पीड होती है, जो की बहुत तेज़ी से सूचनाओं का आदान-प्रदान करने में काम करती है।

इंटरनेट से संबद्धता

इंटरनेट को देखने और उससे सूचना एकत्रित करने के कार्य को सर्फिंग (Surfing) कहते हैं। वैसे तो सर्फिंग करने का तरीका कठिन नहीं है परन्तु सूचनाएँ इंटरनेट पर प्रविष्ट करने के लिए सॉफ्टवेयर बनाने की आवश्यकता होती है, लेकिन सॉफ्टवेयर बनाना काफी कठिन कार्य है। इंटरनेट की अपनी एक दुनिया है और इस दुनिया से संबद्धता (Connectivity) करने के तीन स्तर होते हैं। प्रथम स्तर पर उपभोक्ता केवल इंटरनेट पर सूचनाएँ या जानकारी देख सकता है।

द्वितीय स्तर पर उपभोक्ता इंटरनेट का एक आंशिक भाग बन जाता है और सूचनायें एकत्रित करने के अलावा वह अपनी वेबसाइट भी बना सकता है। तृतीय स्तर पर उपभोक्ता स्वयं इंटरनेट प्रणाली का मुख्य हिस्सा बन जाता है।

महत्व

(i) मेट्रो, रेलवे, व्यापार, उद्योग, दुकान, स्कूल, कॉलेज, शिक्षण संस्थान, एनजीओ, विश्वविद्यालय, कार्यालय (सरकारी तथा गैर-सरकारी) में हर डाटा को कंप्यूटरीकृत करके बड़े स्तर पर कागज़ और कागज़ी कार्यों से बचा जा सकता है, ऐसा करने से कार्यों में पारदर्शिता भी बढ़ेगी।

(ii) इंटरनेट मनुष्य को विज्ञान द्वारा दिया गया एक सर्वश्रेष्ठ उपहार है। इंटरनेट अनंत संभावनाओं का साधन है। इंटरनेट के माध्यम से हम कोई भी सूचना, चित्र, वीडियो आदि दुनिया के किसी भी कोने से किसी भी कोने तक पल भर में भेज सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से हम ई-मेल भेज सकते हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं।

(iii) यह संदेश भेजने का और प्राप्त करने का सबसे सरल और सस्ता साधन है। इंटरनेट के माध्यम से हम दुनिया के किसी भी कोने में बैठे हुए अपने दोस्त अथवा संबंधियों से बात कर सकते हैं। इसे इंटरनेट चैटिंग कहते हैं जिसकी वजह से फेसबुक और वाट्सएप बहुत अधिक प्रसिद्ध हो रहे हैं।

(iv) इंटरनेट के माध्यम से हम अपने विचारों और वस्तुओं का पूरी दुनिया में प्रचार कर सकते हैं। यह विज्ञापन का सबसे सरल और प्रभावी माध्यम है।

(v) इंटरनेट के माध्यम से हम व्यापार भी कर सकते हैं और अपनी वस्तुओं और सेवाओं का क्रय-विक्रय भी कर सकते हैं। इसका सबसे बड़ा साधन वेबसाइट है।

(vi) इंटरनेट के माध्यम से हम नौकरी अथवा रोज़गार पाने के लिए अपना बायोडाटा भी इंटरनेट पर डाल सकते हैं।

(vii) वास्तव में इंटरनेट एक सार्वजनिक सुविधा है और कोई भी इसका उपयोग कर सकता है। आज मानव की सफलता के पीछे इंटरनेट का बहुत बड़ा योगदान है।

(viii) इसके माध्यम से एक जगह से पूरे विश्व के बारे में समय-समय पर सूचना को प्राप्त किया जा सकता है। ढेर सारी जानकारियों को जमा करने में ये बहुत दक्ष और प्रभावकारी है चाहे वो किसी भी विषय से संदर्भित हो चंद सेकेंड में ही उपलब्ध हो जाएगा।

(ix) यह शिक्षा, यात्रा, और व्यापार में बहुत उपयोगी है। इसके द्वारा ऑनलाइन पब्लिक लाइब्रेरी, टेक्स्टबुक, तथा संबद्ध विषयों तक पहुँचना आसान हुआ है।

उपयोग

(i) इंटरनेट की सफलता की वजह इसकी विशेषता और उपयोगिता है। इसकी सुगमता और उपयोगिता की वजह से, ये हर जगह इस्तेमाल होता है जैसे- कार्यस्थल, स्कूल, कॉलेज, बैंक, शिक्षण संस्थान, प्रशिक्षण केन्द्र, दुकान, रेलवे स्टेशन, एयरपोर्ट, रेस्टोरेंट, मॉल इत्यादि।

(ii) प्रत्येक घर पर हर एक सदस्यों द्वारा अलग-अलग उद्देश्यों के लिये। जैसे ही हम अपने इंटरनेट सेवा प्रदाता को इसके कनेक्शन के लिये पैसे देते हैं उसी समय से हम इसका प्रयोग दुनिया के किसी भी कोने से एक हफ्ते या उससे ज्यादा समय के लिए कर सकते हैं। ये हमारे इंटरनेट प्लान पर निर्भर करता है।

(iii) आज के अत्याधुनिक वैज्ञानिक युग में कंप्यूटर हमारे जीवन का मुख्य अंग बन गया है। इसके अभाव में आज हम अपने जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते। आज हम अपने घर या ऑफिस में बैठे-बैठे देश-विदेश जहाँ भी चाहें इंटरनेट द्वारा अपना संदेश भेज सकते हैं।

(iv) वर्तमान में दुनिया का ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं है जहाँ पर इंटरनेट का उपयोग नहीं किया जा रहा हो। इंटरनेट सूचनाओं का भंडार है, इसलिए यहाँ पर आपको हर प्रकार की सूचना जैसे - अंतरिक्ष, मौसम, तकनीक, दवाई, रोजगार, शिक्षा,

व्यवसाय, पत्रिका, अखबार, समाचार, साहित्य, खेल, तत्कालीन घटनाएँ, राजनीति उठा-पटक इत्यादि अनेक प्रकार के विषयों के बारे में जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

(v) इंटरनेट का उपयोग हम ई-मेल भेजने, वीडियो, चैटिंग, नेट सर्फिंग, बिल जमा करने, टिकट बुक करने, शॉपिंग करने, सूचनाएं भेजने और प्राप्त करने के लिए, नौकरी की तलाश और प्रदान करने के लिए, विज्ञापन करने के लिए, सीधे अपने ग्राहकों तक पहुंचने के लिए, मनोरंजन इत्यादि सभी कार्य करने के लिए करते हैं।

(vi) कोविड-19 के दौरान तो बच्चों की ऑनलाइन कक्षाएं भी चल रही हैं और उनके खेलने के लिए ऑनलाइन गेम्स भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं।

(vii) विज्ञान के क्षेत्र में भी इंटरनेट ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट की सहायता से वैज्ञानिक एक दूसरे से जुड़कर नए-नए आविष्कारों को अंजाम दे पाए हैं और अंतरिक्ष में घटने वाली घटनाओं की सूचना भी इंटरनेट के माध्यम से सभी को मिल जाती है।

(viii) इसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में तो बहुत अधिक बदलाव आया है क्योंकि पिछड़े हुए क्षेत्रों में इंटरनेट की उपलब्धता के कारण वहां के विद्यार्थियों को उत्तम शिक्षा मिल रही है, जिससे रोजगार में वृद्धि हो रही है और देश की तरक्की भी तेजी से हो रही है।

(ix) इसका अथाह ज्ञान, सूचना, जानकारी इसके संचालन के उपयोग को और अधिक बढ़ा देता है। इसकी इसी विशेषता के कारण इसके उपयोगकर्ताओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

इंटरनेट के लाभ

(i) इंटरनेट की सहायता से हम किसी भी प्रकार की जानकारी और किसी भी सवाल का हल कुछ ही पलों में प्राप्त कर सकते हैं।

(ii) इंटरनेट के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में बैठे किसी भी व्यक्ति से बिना शुल्क के घंटों तक बातें कर सकते हैं।

(iii) इंटरनेट एक वर्ल्ड वाइड वेब है, जिसकी सहायता से हम दुनिया के किसी भी कोने में अपनी मेल या जरूरी दस्तावेजों को पलक झपकते ही भेज सकते हैं और प्राप्त कर सकते हैं।

(iv) इंटरनेट मनोरंजन का एक बहुत अच्छा माध्यम है। इंटरनेट के माध्यम से संगीत, गेम्स, फिल्म आदि को बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के डाउनलोड कर सकते हैं और अपनी बोरियत को दूर कर सकते हैं।

(v) इंटरनेट की सहायता से बिजली, पानी और टेलीफोन के बिल का भुगतान घर पर बैठे बिना किसी परेशानी के और बिना लंबी लाईनों में खड़े हुए किया जा सकता है। इंटरनेट से हमें घर बैठे रेलवे टिकट बुकिंग, होटल रिजर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन पढाई, ऑनलाइन बैंकिंग, नौकरी, खोज आदि सुविधाएँ मिल जाती हैं।

(vi) इंटरनेट के माध्यम से होने वाले वित्तीय एवं वाणिज्यिक प्रयोगों ने बाजार की अभिधारणाओं को एक नई रूप रेखा प्रदान की है।

(vii) सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से हम नए-नए दोस्त बना सकते हैं जिससे हमें बहुत कुछ नया सीखने को मिलता है।

(viii) सोशल नेटवर्किंग साइट्स के माध्यम से हम किसी भी खबर को एक ही पल में एक ही शेरर से बहुत सारे लोगों तक पहुंचा सकते हैं।

(ix) जो लोग किसी समस्या की वजह से रेगुलर क्लास लगाकर नहीं पढ़ सकते उनके लिए इंटरनेट क्रांतिकारी बदलाव लाया है। आज के समय में ऑनलाइन क्लासेस के माध्यम से कोई भी व्यक्ति घर पर ही पढ़कर परीक्षा दे सकता है।

(x) सुयोग्य वर-वधु की तलाश को भी इंटरनेट ने आसान कर दिया है। इंटरनेट पर ऐसी बहुत सी मैट्रीमोनी साइट्स हैं जिन पर आप अपनी पसंद के जीवन-साथी की तलाश कर सकते हैं।

(xi) जो लोग पार्ट टाइम जॉब करके पैसा कमाना चाहते हैं उनके लिए भी इंटरनेट एक वरदान के समान है। आज के समय में बहुत सारी ऑनलाइन जॉब्स उपलब्ध हैं जिससे घर बैठे ही पैसा कमाया जा सकता है।

(xii) कुकिंग सीखने के लिए भी अब कोई कुकिंग क्लासेज में पैसा बर्बाद करने की जरूरत नहीं है। आपको जो भी सीखना हो वो आप यू-ट्यूब पर लाइव देखकर सीख सकते हैं।

(xiii) इंटरनेट सेवा के माध्यम से अब ई-कॉमर्स और ई-बाजार कर बढ़ते चलन ने सेवा प्रदाताओं और उपभोक्ताओं के बीच की दूरी को मिटा दिया है।

(xiv) इंटरनेट एक-दूसरे से जोड़ने में मदद करता है। आज के समय में इंटरनेट पर ऐसे बहुत से माध्यम मौजूद हैं जिनकी सहायता से हम एक-दूसरे से जुड़े रह सकते हैं। इससे हमें किसी के दूर होने का अहसास नहीं होता है।

(xv) इंटरनेट हमारी पढाई में भी बहुत मदद करता है। आज के समय में बाजार में किताबें बहुत ही महंगी आती हैं और प्रत्येक व्यक्ति उन्हें खरीद नहीं सकता है। आप उन्हें इंटरनेट की सहायता से पढ़ सकते हैं और डाउनलोड भी कर सकते हैं।

हानियाँ

इंटरनेट का उपयोग लेना लाभप्रद है लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग करना नुकसानदायक भी हो सकता है। क्योंकि जहाँ लाभ होता है वहाँ हानि भी छुपी होती है। लाभ और हानि एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

(i) इंटरनेट पर सुविधा की वजह से व्यक्तिगत जानकारी की चोरी बढ़ गई है, जैसे- क्रेडिट कार्ड नंबर, डेबिट कार्ड नंबर आदि।

(ii) आज के समय में इंटरनेट का प्रयोग जासूसों/हैकरों द्वारा देश की सुरक्षा व्यवस्था को भेदने के लिए किया जाने लगा है जो कि सुरक्षा दृष्टि से खतरनाक है। आज के समय में गोपनीय दस्तावेजों की चोरी भी होने लगी है।

(iii) गोपनीय दस्तावेजों की चोरी के लिए स्पैमिंग का इस्तेमाल किया जाता है। यह एक अवांछनीय ई-मेल होती है जिसके माध्यम से गोपनीय दस्तावेजों की चोरी की जाती है।

(iv) इंटरनेट से रेलवे टिकट बुकिंग, होटल रिजर्वेशन, ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन बैंकिंग, नौकरी की खोज आदि सुविधाएँ घर बैठे ही मिल जाती हैं लेकिन इससे पर्सनल जानकारी जैसे आपका नाम, पता और फोन नंबर का गलत उपयोग होने का खतरा भी बना रहता है।

(v) इंटरनेट के बढ़ते उपयोग की वजह से कैंसर की बीमारी होने लगी है। इंटरनेट के चलन की वजह से कुछ असामाजिक तत्व दूसरों के कंप्यूटर की कार्य प्रणाली को नुकसान पहुँचाने के लिए वायरस भी भेजते हैं।

(vi) जो व्यक्ति एक बार इंटरनेट का प्रयोग कर लेता है, उसे इसकी आदत हो जाती है और फिर उसका एक दिन भी इंटरनेट के बिना गुजारना मुश्किल हो जाता है।

(vii) इंटरनेट पर पोर्नोग्राफिक साइट पर अत्यधिक मात्रा में अश्लील सामग्री उपलब्ध है। जिसका बुरा प्रभाव सबसे अधिक बच्चों पर और युवा पीढ़ी पर पड़ रहा है।

(viii) पोर्नोग्राफिक साइट्स को देखकर लोग गलत रास्ते की ओर बढ़ रहे हैं और अपराध की तरफ अग्रसर हो रहे हैं। इस प्रकार की अश्लील सामग्री इंटरनेट पर डालने वाले लोग बहुत अच्छी आमदनी कमा रहे हैं। यह हमारे समाज के लिए जहर की तरह है जिसके खतरनाक परिणामों को हम हर रोज़ देखते हैं। इसलिए इस प्रकार की सामग्री इंटरनेट पर डालने से रोकने के लिए सख्त नियम बनाने चाहिए।

(ix) इंटरनेट की वजह से सोशल साइट्स का चलन बढ़ गया है। अब लोग परिवार में बैठकर बातें करने की जगह पर अकेले रहना पसंद करते हैं। क्योंकि सोशल

साइट्स पर ही उनकी एक अलग दुनिया बन गई है जिससे परिवार बिखरने लगे हैं।

(x) इंटरनेट पर तरह-तरह की जानकारियां उपलब्ध रहती हैं जो कि अगर बच्चे देख, सुन और पढ़ ले तो उनके लिए हानिकारक हो सकती हैं।

(xi) आजकल प्रत्येक व्यक्ति के पर्सनल और प्रोफेशनल दस्तावेज़ इंटरनेट पर सेव रहते हैं, इसलिए इनके चोरी होने का खतरा भी बना रहता है क्योंकि इंटरनेट पर कई प्रकार की गलतियाँ होती रहती हैं जिससे या तो पासवर्ड लीक हो जाता है या फिर कंप्यूटर विशेषज्ञ द्वारा आपका कम्प्यूटर हैक करके जानकारी दे दी जाती है, जिससे आपका भविष्य खराब हो सकता है।

(xii) इंटरनेट के अत्यधिक इस्तेमाल के कारण शारीरिक और मानसिक दुष्प्रभाव भी होने लगते हैं इसलिए हमेशा इंटरनेट को जरूरत के समय ही इस्तेमाल करना चाहिए।

(xiii) वर्तमान में ज्यादातर बच्चे और युवा लोग इंटरनेट पर ही समय व्यतीत करते हैं। आप अपने आसपास नजर घुमा कर देखिए बस स्टैंड पर दुकान पर घर पर खेल के मैदान में सभी जगह लोग मोबाइलों में इंटरनेट चलाते दिख जाएँगे। इससे उनका जरूरी कार्य रुक जाता है और समय का दुरुपयोग होता है।

(xiv) इंटरनेट का अत्यधिक इस्तेमाल करने से बच्चों में चिड़चिड़ापन होने लग जाता है क्योंकि इंटरनेट पर कई हिंसक गेम, वीडियो इत्यादि सामग्री उपलब्ध है जोकि चिड़चिड़ेपन को बढ़ावा देती है।

(xv) इंटरनेट के माध्यम से कई गैर-कानूनी विधियां की जाती हैं जैसे गैर कानूनी माल की सप्लाई के लिए जानकारी देना, आतंकवादी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए आतंकवादी इंटरनेट का इस्तेमाल ही करते हैं और भी अनेक कार्य हैं जो कि गैर-कानूनी हैं और इंटरनेट पर छुपा कर किए जाते हैं।

सारांश

इंटरनेट आज की दुनिया में हर किसी के जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इंटरनेट जानकारी का समूह है जो दुनिया के सभी कंप्यूटरों से जानकारी प्राप्त करके हमें सर्च इंजन और अन्य वेबसाइटों की सहायता से सूचनाएँ प्रदान करता है। आजकल सरकारी, गैर-सरकारी कार्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों, हॉस्पिटलों, बैंक, छोटे से लेकर बड़े व्यापार में इंटरनेट का प्रयोग किया जाता है। इंटरनेट के कारण दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति को इससे लाभ पहुंचा है, लेकिन आज भी हमारे देश के कई ऐसे स्थान हैं जहाँ पर इंटरनेट पहुँच नहीं पाया है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति तक इंटरनेट पहुँचना चाहिए। इंटरनेट का उपयोग मात्र मनोरंजन के लिए करना सही नहीं है क्योंकि इंटरनेट से हम कई प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं और विश्व को एक नए स्तर पर ले जा सकते हैं। इंटरनेट का उपयोग राष्ट्र के विकास के लिए करना चाहिए ना कि इसे बेकार की चीजों में उपयोग करके अपने समय को बर्बाद करना चाहिए। इंटरनेट विज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण आविष्कार है। इस के आविष्कार के बाद विज्ञान को जैसे पंख ही लग गए हैं। इससे दुनिया के हर क्षेत्र में विस्तार हुआ है इंटरनेट का उपयोग अगर सही काम के लिए किया जाए तो यह बहुत ही अच्छा है। लेकिन इसका दुरुपयोग किया जाए तो इसके बहुत गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसलिए इंटरनेट को हमेशा सावधानीपूर्वक इस्तेमाल करना चाहिए। इंटरनेट की सहायता से हम लोग विश्व की किसी भी प्रकार की जानकारी मात्र चंद्र सेकेंडों में प्राप्त कर सकते हैं। वास्तव में इंटरनेट ने मानव इतिहास में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया है।



पुलवामा



श्री अमित कुमार प्रसाद

पूरे शहर में बस एक ही समाचार चल रहा था। देश शोक ग्रस्त हो चुका था। इतनी भयावह खबर कि लोगों का दिल फटे जा रहा था। हर तरफ बारिश आँधी और तूफान। आसमान में बिजली ऐसे चमक रही जैसे मानों कितना गुस्सा भरा हुआ है यह न जाने आज क्या हुआ है। इसी बीच दूर दराज एक गाँव में रात करीब 03 बजे अचानक दरवाजे पर ज़ोर-ज़ोर से खट-खट की आवाज़ आती है मानों जैसे कोई दरवाजा तोड़ ही डालेगा। इसी बीच एक विधवा औरत अपने सर से चादर उठाकर दरवाजे पे टकटकी लगाए देखती है लेकिन कोई अभी भी दरवाजा पीटे जा रहा था। उसकी नज़र पहले अपने स्वर्गवासी पति की फोटो पर जाती है और फिर दूसरे कमरे में सोये हुए अपने बहू और उसके 3 महीने के बच्चे पर। इसी बीच वह साहस जुटाती है और दरवाजा खोलती है। हे मेरे भगवान, हे मेरे मालिक तेरा लाख-लाख शुक्रिया कहते हुए सामने अपने लड़के को खड़ा पाती है और झट से गले लगा लेती है। प्यार इतना उमड़ रहा था मानों रेगिस्तान में पानी की बूंदें मिल गईं। राजेश भी अपनी माँ के प्यार को देखकर खुद को न रोक सका और अपनी माँ के चरणों में गिर पड़ा दोनों की आंखों से अश्रुओं की धारा बह निकली, प्यार देखते ही बनता था। अरी ओ जानकी उठ देख कौन आया है। यह कहते हुए वह दूसरे कमरे में भागी परन्तु राजेश ने रोक लिया....”नहीं माँ सोने दो न बेकार ही परेशान होगी” कहते हुए अपनी बेटी और पत्नी को निहारने लगा और उसकी आँखें डबडबा गईं।

”आखिर इतने महीने बाद ये अवसर मिला था अपने परिवार से मिलने का..... चल बैठ मैं तेरे लिए कुछ खाने को लाऊं” यह कहते हुए वो पास रखे डब्बे से बेसन के लड्डू निकालती है और कहती है ”तू बहुत चाव से खाता था बचपन में” यह सुनते ही मानों राजेश का सारा बचपन उनकी आंखों के सामने आ गया हो।

माँ:- ” न जाने कैसे इतने साल बीत गए और तू बड़ा हो गया। तुझे हमारी याद तो आती थी न”

राजेश:- ” हां माँ बहुत ज्यादा पिताजी के न रहने के बाद से, तूने मुझे पढ़ाने-लिखाने में कोई कसर नहीं छोड़ी मेहनत मजदूरी करके और न जाने क्या-क्या तकलीफें सही। मैं तुझे कभी अपना प्यार नहीं जता पाया कि कहीं तू दूर न हो जाए बस यही सोच के कि जब अच्छा अवसर आएगा तो जरूर बताऊंगा। यह कहते हुए राजेश अपनी माँ से लिपट-लिपट के रोने लगा।

माँ:- अरे पगले बस कर, मुझे तो इसी बात की खुशी है जिस देश के लिए तेरे पिताजी ने युद्ध में अपने प्राणों की आहुति दी, तू आज उसी देश की रक्षा कर रहा है यह कहते हुए उसकी आंखों में चमक आ गई पर राजेश जैसे अपनी माँ में सिमटते ही जा रहा था।

राजेश:- माँ मेरा आज पूरा शरीर बहुत दर्द हो रहा है, ऐसा दर्द जो सहा नहीं जा रहा बस तेरे पास आते ही दूर हो गया।

माँ:- बेटा शायद सफर की थकान होगी अब तू आ गया है तो तेरे लिए खूब अच्छा-अच्छा परोस के खिलाऊँगी यह कहते हुए वो राजेश का सर दबाने लगी।

राजेश:- माँ मैं तुझे कभी सुख नहीं दे पाया हमेशा मेरे मन में यह रहा है कि मैं संसार का हर सुख तुझे दूँगा।

माँ:- अरे देश सेवा भी तो सुख है जो तू उन सभी देश की माताओं को दे रहा है जो तेरे जैसे जवानों के सहारे चैन से सोती हैं अब तू भी सो जा थक गया होगा कहते हुए न जाने कब बातों-बातों में आँख लग जाती है।

इसी बीच तूफान और उग्र हो जाता है सुबह की लालिमा नज़र ही नहीं आ रही मानों सुबह आना भूल गई हो। जगह-जगह सायरन की आवाज़ गूँज रही थी चार पाँच गाड़ियां घर के बाहर आ खड़ी हुईं और कुछ लोग बारिश में भीगे हुए घर के बाहर खड़े थे। दरवाजे में फिर से खट-खट की आवाज़ हुई।

अचानक हुई हलचल से राजेश की मां की आँख खुलती है और वो गोद में रखे हुए अपने पुत्र के सर को हटाती है और दरवाजा खोलती है। चार बड़े-बड़े अफसर सर झुकाये उसके पाँव निहार रहे हैं। वो कहती है कि अब की बार अपने बच्चे को नहीं जाने दूँगी कितने दिन बाद ही तो आया है। नहीं, माता जी हम उसे लेने नहीं आए। ये बात सुनते ही वो खुशी से झूम उठती है और कहती है " क्या अब वो लंबी छुट्टी पे आया है मैं आपकी बहुत आभारी हूँ" कहते हुए आंखें डबडबा जाती हैं।

माताजी हम तो बस यह कहने आए हैं कि राजेश अब कभी नहीं आएगा। देश के लिए उसने अपने प्राण न्यौछावर कर दिये इसका हमें बहुत दुःख है। वो अवाक खड़ी उनकी बातें सुन रही थी "नहीं-नहीं ये नहीं हो सकता" वह राजेश-राजेश कहते हुए कमरे में भागी जैसे वो राजेश को छूने की कोशिश कर रही थी पर शरीर छुआ नहीं जा रहा था।

माँ मुझे माफ कर दे मैं देश के काम नहीं आ पाया। उन कायरों ने धोखे से हमें मार दिया कहते हुए शरीर विलुप्त हो गया।

माँ अपनी अधूरी ख्वाहिशों के साथ राजेश के हो रहे विलुप्त शरीर को निहार रही थी। वज्रपात पड़ गया हो जैसे।



कोविड- आशा की ओर



श्री अमित कुमार प्रसाद

उठने दो मन की अग्नि, प्रज्वलित होने दो प्रकाश को,
जला डालो लाखों दिये, इस अंधकार का नाश हो।
फिर आज घड़ी परीक्षा की है, दुश्मन कई अनेक हैं,
दिखा दो इस संकट में, हम भारतवासी एक हैं।

लड़ना है यह युद्ध हमें अपने आप से,
निकल न जाए फिर ये मौका हाथ से।
रखना ख्याल उनका भी, जो गरीब लाचार हैं,
दुनिया को दिखा दो, यह हमारा व्यवहार है।

किंचित भी घबराना नहीं, न दुश्मन से डरना है,
लक्ष्मण रेखा जो खींची है, पार न उसको करना है।
जीत जाएंगे ये युद्ध भी, हम सब ने यह ठानना है,
हम सब हिंदुस्तानियों को यह फर्ज निभाना है।



अक्षय ऊर्जा : सम्भावनाएँ और नीतियाँ



श्री रविशंकर प्रभाकर

मानव एक विकासशील प्राणी है। उसने ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों की खोज की, जो आधुनिक जीवन शैली का अभिन्न अंग बन गए हैं। सबसे पहले मानव ने ऊर्जा के परम्परागत साधनों-कोयला, गैस, पेट्रोलियम आदि का उपयोग किया, जो सीमित मात्रा में होने के साथ-साथ पर्यावरण के लिए हानिकारक भी हैं। देखा जाए तो यह बहुत ही गंभीर विषय है क्योंकि जिस तेजी से हमारी पारंपरिक ऊर्जा स्रोतों का हर तरफ से दोहन हो रहा है उससे आने वाले समय में हमारे परंपरागत ऊर्जा स्रोत खत्म हो जाएंगे और तब हम क्या करेंगे। अतः हमें अपनी कल की ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए ऐसे संसाधनों को ढूँढना होगा, जो कभी समाप्त न हों और हमारा जीवन सुचारू रूप से बिना किसी ऊर्जा संकट के चलता रहे। ऊर्जा के कभी न समाप्त होने वाले संसाधनों को ही हम अक्षय ऊर्जा के स्रोत के रूप में जानते हैं। सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत ऊर्जा, ज्वार-भाटा, बायोमास एवं जैव ईंधन आदि से प्राप्त ऊर्जा इस तरह की ऊर्जा के मुख्य उदाहरण हैं जिनका विकास व उपयोग में लाना आवश्यक है। इनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

(क) सौर ऊर्जा- सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊष्मा और प्रकाश सौर ऊर्जा का निर्माण करते हैं। धरती पर सभी प्रकार से उपयोग के लिए सौर ऊर्जा ही एक सहारा है। सौर ऊर्जा का उपयोग कई प्रकार से किया जाता है, लेकिन सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में बदलने को ही मुख्य रूप से सौर ऊर्जा के रूप में जाना जाता है। हम सूर्य की किरणों की गर्मी को सोलर पैनल के माध्यम से एकत्रित करके बिजली पैदा कर सकते हैं जिससे हम सभी बिजली से चलने वाले उपकरण चला सकते हैं। सूर्य ऊर्जा का ऐसा साधन है जो की कभी भी खत्म नहीं हो सकता है। इसका सबसे

बड़ा फायदा यह है कि यह विस्तारित है और इससे प्रदूषण भी नहीं होता है। लोग इसे अपने व्यक्तिगत स्तर पर भी लगवा सकते हैं और प्रयोग में ला सकते हैं। इसे एकत्रित भी किया जा सकता है और आवश्यकता अनुसार प्रयोग में लाया जा सकता है। सौर ऊर्जा से सोलर कुकर बनाकर सूर्य की गर्मी से खाना भी बनाया जा सकता है जिससे कि ईंधन की खपत कम होगी और प्रदूषण से भी राहत मिलेगी। सौर ऊर्जा अभी महँगी है, इसलिए इसकी उपयोगिता का ज्ञान होते हुए भी लोग इसका प्रयोग करने से बचते हैं। अब सोलर कुकर, सोलर बैटरी चालित वाहन और मोबाइल फोन भी प्रयोग में लाए जा रहे हैं। लोग धीरे-धीरे इसकी महत्ता समझ रहे हैं। कर्नाटक के गाँवों में सौर ऊर्जा के उपयोग का अभियान चल रहा है। आनेवाले समय में सौर ऊर्जा निश्चित ही भारत को प्रगति के मार्ग पर ले जाने में सहायक होगी।

(ख) पवन ऊर्जा - पवन या वायु ऊर्जा अक्षय ऊर्जा का दूसरा महत्वपूर्ण स्रोत है। प्राचीन काल में पवन ऊर्जा का प्रयोग नाव चलाने में किया जाता था। लगभग 2 हजार वर्ष पूर्व सिंचाई और अनाज कूटने आदि में पवन ऊर्जा के प्रयोग का प्रमाण मिलता है। चीन, अफगानिस्तान, पर्शिया, डेनमार्क, कैलिफोर्निया में पवन ऊर्जा का उपयोग बिजली बनाने में किया जा रहा है।

भारत में तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान आदि प्रदेशों में पवन ऊर्जा से विद्युत् उत्पादन का कार्य चल रहा है। भारत में पवन ऊर्जा की काफी सम्भावनाएँ हैं। इस समय भारत में पवन ऊर्जा का नवीन और ऊर्जा मन्त्रालय के अनुसार भारत में वायु द्वारा विद्युत् उत्पादन काफी मात्रा में प्राप्त की जा रही है। पिछले दो दशकों में विद्युत् उत्पादक पवनचक्कियों (टरबाइनों) की रूपरेखा, स्थल का चयन, स्थापना, कार्यकलाप और रख-रखाव में तकनीकी रूप से भारी प्रगति हुई है और विद्युत् उत्पादन की लागत कम हुई है। पवन ऊर्जा द्वारा पर्यावरण पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता; क्योंकि इसमें अपशिष्ट का उत्पादन नहीं

के बराबर होता है विकिरण की समस्या भी नहीं होती है। आने वाले समय में पवन ऊर्जा के सशक्त माध्यम बनने की पूरी सम्भावनाएँ हैं।

(ग) जल ऊर्जा - जल अक्षय ऊर्जा के प्रमुख स्रोतों में से एक है। इसमें नदियों पर बाँध बनाकर, उनके जल से टरबाइनों द्वारा विद्युत उत्पादन किया जाता है। भारत में बाँध बनाकर जल विद्युत् का उत्पादन दीर्घकाल से हो रहा है। इसके अलावा समुद्र में उत्पन्न होने वाले ज्वार-भाटा की लहरों से भी विद्युत उत्पादन किया जा सकता है। भारत की सीमाएँ तीन-तीन ओर से समुद्रों से घिरी हैं; अतः अक्षय ऊर्जा स्रोत का उपयोग बड़े पैमाने पर किया जा सकता है।

(घ) भू-तापीय ऊर्जा - यह पृथ्वी से प्राप्त होने वाली ऊर्जा है। भू-तापीय ऊर्जा का जन्म पृथ्वी की गहराई में गर्म, पिघली चट्टानों से होता है। इस स्रोत से ऐसे स्थानों पर ऊर्जा प्राप्त करने के लिए पृथ्वी के गर्म क्षेत्र तक एक सुरंग खोदी जाती है, जिनके द्वारा पानी को वहाँ पहुँचाकर उसकी भाप बनाकर टरबाइन चलाकर बिजली बनाई जाती है।

भू-तापीय ऊर्जा से विद्युत उत्पादन लागत जल ऊर्जा से उत्पन्न विद्युत जितनी ही है। भारत को भू-तापीय ऊर्जा को उपयोग में लाने के लिए बड़ी मात्रा में आवश्यक संसाधन जुटाने पड़ेंगे, तभी इस ऊर्जा का लाभ उठाया जा सकेगा।

(ङ) बायोमास एवं जैव ईंधन- कृषि एवं वानिकी अवशेषों (बायोमास / जैव पदार्थों) का उपयोग भी ऊर्जा प्राप्त करने के लिए किया जा रहा है। भारत की एक बड़ी जनसंख्या जैव पदार्थों का प्रयोग खाना बनाने के लिए ईंधन के रूप में करती है। लकड़ी, गोबर और खरपतवार प्रमुख जैव-पदार्थ हैं, जिनसे बायोगैस उत्पन्न की जाती है। गन्ने, महुए, आलू, चावल, जौ, मकई और चुकन्दर जैसे शर्करायुक्त पदार्थों से एथेनॉल बनाया जाता है। इसे पेट्रोल में मिलाकर ईंधन के रूप में उपयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त कृषि से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थों, जैसे खाली भुट्टे, फसलों के डंठल, भूसी आदि और शहरों एवं उद्योगों के ठोस कचरे से भी बिजली बनाई जा सकती है।

सोन् की व्यथा



श्री लोकेश कुमार

नाम- सोन्

समय- अनलॉक -1

जगह- ओखला, दिल्ली

काम- एक बड़ी अंतराष्ट्रीय मोटर साइकिल कंपनी के सर्विस सेंटर में मैकेनिक.

काफी दिनों के लॉकडाउन के बाद अनलॉक-1 में जब बाहर निकलने का मौका मिला तो वह मौका था मित्र की मोटरसाइकिल की मरम्मत करवाने के दौरान। मरम्मत ओखला में होनी थी और वहीं मेरा मिलना हुआ सोन् से। पहली नजर में सोन् मुझे नाबलिग लगा। कारण था उसका दुबला-पतला शरीर एवं साधारण कद-काठी।

सोन् ने हमें देखते ही मुद्दे पर आते हुए पूछा, क्या-क्या करवाना है इसमें? “सर्विसिंग और चैन टाइट” मित्र ने जवाब दिया। सोन् ने उसी पेशेवर अंदाज में पूछा।

जवाब मिलते ही सोन् ने निर्धारित जगह पर मोटरसाइकिल खड़ी की और ग्रीस से काले पड़े अपने सधे हुए हाथों से काम पर लग गया।

“क्या उम्र है तुम्हारी” मैंने सोन् के पास जाकर पूछा।

“बीस साल” बिना मेरी तरफ देखे उसने जवाब दिया।

“और, लॉकडाउन में काम कैसा रहा” मैंने बातचीत बढ़ाने की अर्ज से पूछा।

“कौनसा काम?” काम तो बंद ही था 2-3 महीने।

“तो तनखाह वगैरह?”

“कौनसी तनखाह भइया जब 2-3 महीने काम ही बंद था, यहाँ तो 1 छुट्टी लेने पर भी पैसे कट जाते हैं” उसने शिकायती लहजे में कहा।

“इतनी बड़ी कंपनी में 1 छुट्टी के भी पैसे कटते हैं?”

“1 छुट्टी, अरे कुछ महीने पहले मेरी उंगली कट गई थी 2 दिन घर पर रहना पड़ा, उसी के पैसे काट लिए थे” सोनू को शायद गुस्सा आने लगा था।

“उंगली कट गई थी। कैसे?”

“अरे, एक बंदे की मोटरसाइकिल रिपेयर की थी, उसको चेक करने के लिए ले गया था, उसके दौरान बाहर मेरा ऐक्सीडेंट हो गया, उंगली कट गई”

“फिर, क्या हुआ?” मैंने उत्सुकतावश पूछा।

“होना क्या था, अपनी उंगली जेब में रख कर ऐम्स ट्रामा सेंटर गया वहाँ डॉक्टर ने उंगली वापस जोड़ी,

डॉक्टर साहब ने बोला था 15 दिन आराम करो पर मैं 2 दिन बाद ही काम पर आ गया। फिर भी इन्होंने 2 दिन के पैसे काट ही लिए।

खैर काम तो मैं दायें हाथ से करता हूँ, उंगली तो बाएं हाथ की कटी थी। सोनू अपनी दास्तां सुना तो रहा था लेकिन उसकी बातों ने मुझे सोच में डुबो दिया।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि कड़े अंतर्राष्ट्रीय मापदण्डों का पालन करने वाली अंतर्राष्ट्रीय कंपनी भारत में पेड लीव तो दूर, काम के दौरान लगी चोट पर भी जवाबदेह नहीं होती।

और कभी-कभी कुछ छोटे-मोटे काम के लिए हम लोग भी वर्क प्रेशर का हवाला देने लगते हैं अगर कभी हमें काम का दबाव ज्यादा लगने लगे तो हमें सोनू जैसे लोगों को याद कर लेना चाहिए जो असल में काम के दबाव में हैं।

लेखक परिचय

क्रम सं.	रचनाकार	
1	श्री अतुल प्रकाश	निदेशक
2	मा. हिमेश यादव	पुत्र श्री मुकेश कुमार यादव, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
3	श्री गुरप्रीत सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
4	सुश्री कामिनी सिंह	आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक
5	सुश्री सरिता	पत्नी श्री नितिन कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
6	श्री रामब्रेश यादव	पिता सुश्री पूनम यादव, लेखापरीक्षक
7	श्री नितिन कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
8	सुश्री पूनम यादव	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
9	श्री अंकित कुमार	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
10	मा. नमन अरोरा	पुत्र श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
11	मा. प्रथम अरोरा	पुत्र श्री संजीव कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
12	सुश्री संजना सोनी	पत्नी श्री संतोष कुमार साह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
13	श्री संतोष कुमार साह	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
14	श्री नरेन्द्र सिंह चौहान	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
15	श्री एन.के. शर्मा	सेवानिवृत्त, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
16	सुश्री ज्योती माथुर	पत्नी श्री घनेन्द्र माथुर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
17	सुश्री कृष्णा सोनी	सेवानिवृत्त, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
18	सुश्री किरन माँगा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
19	श्री कुमार दत्त शर्मा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
20	श्री हरेन्द्र कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक

21	सुश्री सुमन शर्मा	पत्नी श्री कुमार दत्त शर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
22	सुश्री रश्मि गुप्ता	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
23	श्री राहुल	बहु कार्य कर्मचारी
24	मा. रोहित	भाई श्री राहुल, बहु कार्य कर्मचारी
25	सुश्री अनमोल मिश्रा	बहन श्री हेमंत मिश्रा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
26	श्री रोहित कुमार	पुत्र श्री हरिबंश लाल, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
27	श्री अमित कुमार प्रसाद	कल्याण सहायक
28	श्री रविशंकर प्रभाकर	सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
29	श्री लोकेश कुमार	बहु कार्य कर्मचारी



हिन्दी पखवाड़ा-2020 में श्री अतुल प्रकाश, निदेशक प्रशासन/राजभाषा द्वारा गृहमंत्री का संदेश प्रस्तुत करते हुए।



हिन्दी पखवाड़ा-2020 में सुश्री पद्मा सुरेश, हिन्दी अधिकारी द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के कार्यक्रम का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए।



महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास) नई दिल्ली -110002.

निर्झर/सितम्बर 2020/120